2015-16

संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार

आई.सी.एच.शोधकार्य फाइनल रिपोर्ट

डी.वाय. 28- 6/579

विषय – चंदैनी गाथा गायन परम्परा

शोधकर्ता

रोशनी प्रसाद मिश्र

पता - गोपालदास रोड साउथ करौंदिया वार्ड. क्र.9, जिला-सीधी, म.प्र. 486661

मो.न. 9755756370

ई-मेल – eaaessidhi@gmail.com

प्रति,

उपसचिव,

DRAMA/ICH

संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली - 01

विषय :- ICH अंतर्गत चंदैनी गाथा गायन के द्वितीय चरण का शोध कार्य सलग्न करने बावत ।

महोदय ,

ज्ञात हो कि आपके द्वारा ICH अंतर्गत मुझे बघेलखंड की गाथा गायकी पर आधारित कलाकारों एवं कलाओ को चिन्हित कर उनकी सूची तैयार करने व शोध कार्य करने का अवसर दिया गया जिसका द्वितीय चरण का शोध कार्य चंदैनी गाथा आपको प्रस्तुत कर रहे है, जिसे सहर्ष स्वीकार करने की कृपा करें ।

आपके सहयोग के लिए हम सदा आभारी रहेंगे ।

" सादर "

भवदीय

रोशनी प्रसाद मिश्र

सीधी (म.प्र.)

ईमेल :- eaaessidhi@gmail.com मो. :- 9755756370, 6264544564

पता:- गोपाल दास रोड (नियर गोपाल दास बांध) दक्षिण करौंदिया सीधी (म.प्र.)

पिन कोड :- 486661.

चंदैनी गाथा का द्वितीय खण्ड का शोधकार्य

प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य -: **मध्य प्रदेश**
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/ परंपरा का नाम -: **चंदैनी**
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से संबंधित समुदाय की बोली -: **बघेली**

"यादव और उनकी गाथा गायन परम्परा चंदैनी"

चदैनी गाथा गायन का हम परिचय दें इससे पूर्व हम जातीय गाथा गायन के समुदाय अहीर का परिचय दे तो ज्यादा बेहतर होगा | **यादव** (अहीर) अभीर शब्द से बना है अभीर का मतलब होता है निडर और बघेलखंड में अभिरने को लड़ना कहते हैं | अपनी निडरता और क्षत्रिय वंश के कारण ही इन्हें अभीर कहा जाने लगा बाद में अभीरो ने अपने साम्राज्य भी स्थापित किये जिसका उल्लेख आपको भिन्न-भिन्न पुराणों में मिलता है | अंग्रेजो ने जब अपने शासन काल में जातिगत अधार पर जनगणना कराई थी तो अहीरों को martial cast में रखा | और उन दिनों अहीरों के नाम पर सेना की चार कंपनिया भी बनायी थी | यादव यदि यदु वंशी हैं ऐसा माने तो यह वैदिक जाति भी ठहरती है | क्योंकि चंद्रवंशी राजा यदु ने यादववंश की स्थापना की थी और यदु का उल्लेख ऋगवेद में मिलता है अतः इस आधार यादव को वैदिक क्षत्रिय कहना उचित ही होगा | महाभारत युद्ध में यादव वीरो और उनकी आजेय नारायणी सेना ने अपना बेजोड़ शौर्य प्रदर्शित किया था | प्राचीन काल में तो कई राज्यों में सेनापति का पद सिर्फ अहीरों के लिए अरक्षित था | नर्मदा के तट पर सर्वप्रथम समुद्रगुप्त की विजय वाहिनी को रोकने वाले अहीर योद्धा ही थे | इतिहास में तुर्कों, मुसलमानों, और अंग्रेजों से वीर अहीरों के युद्ध के सैकड़ो उदाहरण हैं, साथ ही उनकी राजवंशीय परम्परा को परिलक्षित करने वाले बीजागढ़ दुर्ग, गवली गढ़ दुर्ग, असीर गढ़ किला, खरगांव का किला, देवगिरी का किला आज भी विद्यमान हैं | जम्मू व काश्मीर के अबिसार, रेवाड़ी राज्य हरियाणा, जूनागढ़ का चूड़ासम साम्राज्य,पावागढ़गुजरात, खानदेश, नाशिक (महाराष्ट्र)शिलालेखो में वर्णित अहीर शासक,नई गाँव रीवाई बुन्देलखण्ड उत्तर मध्य भारत, उत्तर भारत (उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड), नेपाली शासक, मालवा तथा मध्य भारत के अन्य क्षेत्र, बिहार के आहीर राजा, दक्षिण भारत में अहीरों की विशाल राजवंशीय परम्पराएँ, सेउना यादव शासक, त्रिकुटा अभीर, कलचुरी राजवंश, आदि अहीरों के क्षत्रिय वंश परम्परा के उदाहरण हैं |

" यादोव नशं नरः श्रुत्वा सर्वपापैः परमुच्यते |
यात्राव्तीर्ण कृष्णाख्यं परंब्रम्हा निराकृति ||

श्री विष्णु पुराण के अनुसार यदु वंश परम पवित्र वंश है, यह मनुष्य के समस्त पापों को नष्ट करने वाला है, इस वंश में स्वयं भगवान परब्रम्हा ने मनुष्य के रूप में अवतार लिया था जिन्हें श्रीकृष्ण कहते हैं | जो मनुष्य यदु वंश इक श्रवण करेगा वो समस्त पापों से मुक्त हो जाएगा | यादव भारत एवं नेपाल में निवास करने वाली एक प्रमुख जाति हैं जो चन्द्रवंशी राजा यदु के वंशज हैं | इस वंश में अनेक शूरवीर और चक्रवर्ती राजाओं ने जन्म

लिया है, जिन्होंने अपने बुद्धि बल और कौशल से कालजयी साम्राज्य की स्थापना की है | अहीर पुराण काल से ही पशुपालक जाति रही है तब भी इनका प्रमुख व्यवसाय पशुपालन और कृषि ही था | यादव जाति की जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या के लगभग १६ प्रतिशत है व नेपाल में २० प्रतिशत है | यादव समुदाय को भारत की वर्तमान सामाजिक एवं जातिगत संरचना के आधार पर मुख्य रूप से तीन जाति वर्ग में विभक्त किया जा सकता है जैसे कि-

१.यदुवंशी राजपूत- भारत में छठी सदी या उसके बाद राज करने वाले यादव राजाओं के वंशज यदुवंशी राजपूत के नाम से जाने जाते हैं | दरअसल राजा होने के कारण इनका वैवाहिक सम्बन्ध राजपूत जातियों (अग्निवंश, सूर्यवंश, चन्द्रवंश) से ही होता रहा इसलिए सामाजिक तौर पर यदुवंशियों ने अहीरों से दूरी बना ली है | यदुवंशियों के प्रमुख कूरे जडेजा, चुडासमा , गायकवाड़, जाधव, वाडियार, सैनी, सोलासकर, कलचुरी व जैसलमेर के भाटी आदि हैं |

२. अहीर, ग्वाला, अभीर – वर्तमान में अपने को यादव कहने वाले ज़्यादातर लोग इसी जाति वर्ग से आते हैं | यह पूर्व में योद्धा जाति हुआ करती थी लेकिन कालांतर में राज्यों के पतन हो जाने के कारण जीविकोपार्जन के लिए कृषि व पशुपालन का कार्य करने लगी जो की उसका परम्परागत व्यवसाय रहा है | मनुस्मृति में पशुपालन के कारण ही अहीरों को म्लेक्ष सूद्र भी कहा गया है | महाभारत व टोलेमी काल में अभीरों के संघर्ष पूर्ण जीवन का उल्लेख मिलता है | अहीरों के भिन्न-भिन्न उपजातियां या कूरे पाए जाते हैं -

गुजरात - अहीर, नंदवंशी, परथारिया, सोराथिया, पंचोली, मस्चोइय
पंजाब हरियाणा व दिल्ली - अहीर, सैनी, राव, यादव, हरल
राजस्थान - अहीर, यादव
उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार झारखंड और छत्तीसगढ़ में- अहीर, यादव, बरेदी, गहिरा, ग्वाला, गोप, किसनौत, मंझारौठ, गोरिया, गौर, भुर्तिया, राउत, थेटवार, घोसी
पश्चिम बंगाल - घोष, ग्वाला, सदगोप, यादव, प्रधान
हिमांचल प्रदेश एवं उत्तराखंड मे – यादव, रावत
महाराष्ट्र - यादव, गवली, गोल्ला, अहीर, खेदकर
कर्नाटक- गोल्ला, ग्वाला , यादव
तमिलनाडु - कोनार, आयर, मनार, मायर, ईडैयर, नायर, इरुमान, यादव, वदुगा, आयर्स
केरल में- मनियानी, कोलायण, उरली नायर, एरुवान , नायर आदि |

३. गड़ेरिया, कुर्बा, धनगर- कुरबा का अर्थ होता है योद्धा एवं विश्वसनीय व्यक्ति | आईने-ए-अकबरी में धनगर को एक साहसी एवं शक्तिशाली जाति बताया गया है जो किला बनाने में निपुण होते हैं व अपने क्षेत्र एवं राज्य पर शासन करते हैं | भेड़ पालन से जुड़े यादवों को गड़रिया,धनगर व कुरबा कहा जाता है वंही ऊँन व कम्बल का काम करने वाली जाति को खेतकर एवं भैंस पालने वालो को महिषकर के नाम से जाना जाता है |

पौराणिक ग्रंथो पाश्चात्य साहित्य प्राचीन एवं आधुनिक भारतीय साहित्य उत्खनन से प्राप्त सामग्री तथा विभिन्न शिला लेखो एवं अभिलेखों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कियादव जाति की उत्पति के

संबंध में दो मत प्रचलित हैं धार्मिक मान्यताओं एवं हिन्दू ग्रंथो के अनुसार यादव जाति का उद्भव पौराणिक राजा यदु से हुआ है जब की भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य एवं पुरातात्विक सबूतों के अनुसार प्राचीन आभीर वंश (यादव) से अहीर जाति की उत्पत्ति हुई है | इतिहास विदों के अनुसार अहीर का ही अप्रभ्रंश अहीर है | हिन्दू महाकाव्य महाभारत में यादव एवं आभीर (गोप) शब्द का समान्तर उल्लेख हुआ है | जंहा यादव को चन्द्रवंशीय क्षत्रिय बताया गयाहै वंही अभीरो का उल्लेख शूद्रो के साथ किया गया है | पौराणिक ग्रन्थ विष्णु पुराण, पदम् पुराण एव हरिवंश पुराण में यदुवंश का विस्तार से वर्णन किया गया है | यादव वंश प्रमुख रूप से आभीर अन्धक, वृस्नि तथा सात्वक नामक समुदायों से मिलकर बना था,जो की भगवान् कृष्ण के उपासक थे | ये लोग प्राचीन भारतीय साहित्य में यदु वंश के एक प्रमुख अंग के रूप में वर्णित हैं | प्राचीन मध्यकालीन व आधुनिक भारत की कई जातिया व राजवंश स्वयं को यदु का वंशज बताते हैं और यादव नाम से जाने जाते हैं | तथ्यात्मक दृष्टि से देखे तो भारत की मौजूदा आर्य क्षत्रिय जातियों में अहीर सबसे पुराने हैं क्षत्रिय हैं | क्षत्रियो का प्रधान वंश यादव वंश है | यादव कुल की एक अति –पवित्र शाखा ग्वालवंश है जिसका प्रतिनिधित्व् नन्द बाबा करते थे | बहुत से अज्ञानी दोनों को अलग–अलग वंश का बताते है | नन्द बाबा और कृष्ण के पिता भाई थे जिसे हरिवंश पुराण में पूरी तरह स्पष्ट कीया गया है भागवत पुराण में भी इस बात का जिक्र है, ग्वालवंश में ही समस्त यादवों की कुल देवी माँ विन्ध्यवासिनी देवी ने जन्म लिया था | भागवत पुराण के अनुसार तो भगवान श्री कृष्ण के गोकुल प्रवाश के दौरान सभी देवी –देवताओ ने ग्वालो के रूप में अंशावतार लिया था | चदैनी इसी कुल की तमाम गाथा गायन परम्पराओं में से एक है जिसमे अहीर जाति के प्रत्निधित्व करने वाले लोरिक की प्रेम कथा का वर्णन मिलता है | चदैनी के अलावा अहीर जाति द्वारा निम्न लिखित कला रूप भी प्रस्तुत किये जाते हैं -

मोरध्वज गाथा

1- ललना
2- छाहुर
3- कृष्ण लीला
4- चंदनुआ
5- गढ़-केउटी
6- पदुम-कंधइया
7- बिरहा
8- सजनई
9- लहलेंदबा
10- लाहकौर
11- अहिराई नृत्य
12- अहिराई-लाठी नृत्य
13- सैरा यात्रा गीत
14- झोलइयां
15- बनजोरबा

16- संस्कार गीत

17- ऋतू गीत

18- अन्य गीत

19- चदैनी

20- हरिश्चंद्र गाथा

योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी निम्नवत हैं | जो लागातार अपनी पारम्परिक कला विधाओं को संरक्षित और सुरक्षित किये हुए है -

१.रामप्रसाद यादव

२.मोतीलाल यादव

३.रामगिरि

४.संतोष यादव

५.गैबी प्रसाद यादव

६.विवेक यादव

७.लल्लू यादव

८.जीतेंद्र बसदेवा

९.सोभई यादव

१०.सुखलाल यादव

११. नंदलाल यादव

१२.भैया लाल यादव

१३. राजकुमार यादव

१४. तुलबुल यादव

१५. रघुपति यादव

१६. बृहस्पति यादव

१७.कल्लू यादव

१८. गोपला यादव

यदि हम चयनित कलारूप चदैनी गाथा गायन परम्परा की ज्ञान परिपाटी का आज के परिवेश से अंतर सम्बन्ध को देखते हैं तो सर्वप्रथम हम अहीर की जातीय सांस्कृतिक विविधताओं और मौखिक परम्परा में बह रहे उस ज्ञान का हर कलारूप के जाति विशेष के आधार पर बात करते हैं | अहीर जाति अपने जातिगत शैली गायकी में तमाम लोक नायको, पौराणिक नायको ,एतिहासिक नायको की कथा का गायन करती है | जिसमें छुपी ज्ञान और हुनर /कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्वों के साथ अंतर सम्बन्ध को समझते हैं –

चदैनी – देश की तमाम गाथा गायन परम्पराओं में से चदैनी गाथा गायन परम्परा की अपनी विशेषता है क्योंकि चदैनी किसी एक राज्य में नहीं बल्कि उत्तर भारत के तमाम क्षेत्र विशेषों में गाई

जाता है | यह मौखिक परम्परा का लोक महाकाव्य है इस कारण इसमें समाज और जातीय ज्ञान और हुनर कुशलता का वर्तमान में बड़ा सटीक और सुन्दर सामंजस्य है | तो आइये बघेलखंड में प्रख्यात चदैनी गायकी की कुछ पंक्तियाँ हम उदाहरण रूप में देखते हैं –

"राम- राम-राम भैया रामय राम
राम पर धरी आबा आजु हो धियान
राम कय रटनिया बिसरत नहीं आय
दिन बिसरय रे नहीं रतिया हो आजु
राम के रटनिया ता परन हो आधार
हो भइया जब तक इया चोलबा मा प्रान
सरबा का सुमिरी सरसतिया का आजु
खेलबा का सुमिरी ददा आजजु घमसान
सुमिरी रे भुइयां रे भावानी का आजु
अउ मरजादा हय तोरेन हाथ
सुमिरी सरद मइहर का हो आजु
सूढ़े का सुमिरी अउ कठिगर नाथ
देउ रे तलाये कासी बाबा हमार
अउ महामाई रतन पुर केर
सुमिरी अउ देवी गोरइया का आजु
हो भइया जे हां पुरिखन के पुजमान
सातउ रे बहिनि देवी दुरगा हो आजु
मनमा रे देवी आजु करयं हो विचार
चला-चली बहिनी आजु गंगा हो नहाय
गंगा मा नहाए तन पबरित होइ जाय
चलि दिहिन देंवी दुरगा हो आजु
आगे- आगे चलयं सरसतिया हो आजु
पाछेन चलय देवी दुरगा हो आजु
पहुंचे हो जांय भइया गंगा कय किनार
बगरी हो गाय अहिरबा कय आजु
गोहराय पूँछय देवी दुरगा हो आजु
सुनु-सुनु अहिरा तहू रे बलिमान
हो भइया गहिरा घाट रे बताउ
एतने मा बोलय अहिर बलिमान
सुनु-सुनु माता अरजिया हमार
गंगा कय किनरबा कदम एक पेड़

अरे माता उंही तरी गहिल हो घाट
हिलि परी हां देवी दुरगा हो आजु
टोरयं लंउची कदम कय डारि
हो भइया करय हो दतीमन लागि
करय रे दतीमन देवी दुरगा हो आजु
पहिल बुडिकी मारय देवी दुरगा हो आजु
मनबा रे देवी करयं रे विचार
चला-चली बहिनी घर सोनरा कय जाब
अउ सोनरा दुकनिया मा बइठब जाय
हो भइया लेबय सोनेन कय हार
दूसर बुडिकी मारय देवी दुरगा हो आजु
मनबा रे देवी करयं रे विचार
चला-चली बहिनी घर लोहरा कय जाब
अउ लोहरा मड़इया मा बइठब जाय
हो भइया लेबय नसेन गढ़बाय
तीसर बुडिकी मारय देवी दुरगा हो आजु
मनबा रे देवी करयं रे विचार
चला-चली बहिनी घर कोंहरा कय जाब
अउ कोंहरा के चकबा मा बइठब जाब
हो भइया लेबय नस-नस गढ़बाय
चउथि बुडिकी मारय देवी दुरगा हो आजु
मनबा रे देवी करयं रे विचार
चला-चली बहिनी घर पंडित कय जाब
अउ पंडित के पोथिया मा बइठब जाय
हो भइया जंहा बोलय घंट चहुँ ओर
पांचउ बुडिकी मारय देवी दुरगा हो आजु
मनबा रे देवी करयं रे विचार
चला-चली बहिनी गढ़ महोबा अडार
महोबा के ठाकुर हय बामन बीर
अउ सोनरा दुकनिया मा बइठब जाय
पहिल सोत मारी भइया बामन बीर
हो भइया लेबय दुधेन कय धार
चल दिहिन भइया देवी दुरगा हो आजु
पहुंची जाय भइया गढ़ महोबा अडार

इन पंक्तियों में छुपे ज्ञान को वर्तमान परिवेश से सामंजस्य तो है ही क्यों की यह कथाएं काल्पनिक नहीं वास्तविक हैं रही बात इनके दार्शनिक पक्ष की जिसे हमे देखना है की यह पक्ष वर्तमान सामाजिक और सांस्कृतिक ढाँचे के निर्माण में अपनी क्या भूमिका अदा करता होगा | चदैनी में वैश्विक सत्यता की भरमार है, उपरोक्त पंक्तियों के बारे में कहें तो लोक ने दैविक शक्तियों का मानवीकरण किया है और देव लोको को धरती पर स्थापित किया है | प्रकृति की सुन्दरतम रचना में मानव मात्र की भूमिका और कर्तव्य निश्चित किये हैं ऐसा अर्थ मिलता है | यंहा यह बात भी उल्लेखनीय है कि इस गाथा की मुख्य कथा मानवीय प्रेम से कंही ऊपर है जो सच्चे अर्थों में प्रेम की परिभाषा गढ़ती है |

२.हरिश्चंद्र गाथा - राजा हरिश्चन्द्र की कथा पर आधारित यह गाथा गायन समाज के बदलते स्वरूप पर खेद प्रकट करती है, यही अंतर्संबंध ही लोक समाज के तटस्था का परिचायक है | निम्न पंक्तियों में हरिश्चन्द्र की वचन बद्धता को देखिये - "तीनउ परानी गएँ बेंचाय,तीनउ का काम दे बताय |
राजि पाठि सब गय हय सिराय जय गंगा |
राजा हरिश्चन्द्र महाराज ओनखे हाथे मा झाडू दिहिन |
पूरा काशी डारा बटोर जय गंगा ||"

3.मोरध्वज गाथा - "मोरध्वज एक राजा रहे ,बड़ा दानिया राजा रहे |
दानी-दानी दुनिया कहय ,ओनखे बराबर नहीं आय दानी जय गंगे ||
तब बोलयं विष्णु भगवान ,सुनीला अर्जुन हमार बाति |
मोरध्वज एक राजा हमा ,चला परीक्षा लेई ओनखार जय गंगे ||
विष्णु भगवान साधू बनि जाय ,अर्जुन वीर शेर बनि जांय |
साधू, शेर दूनउ पहुंचे जांय मोरध्वज के द्वारे मा जय गंगे||
जय रघुनन्दन बोलय अधीर जय हो जय हो मोरध्वज |
तोरे दुआरे एक साधू आयें सिंह शेर द्वारे मा लेहे जय गंगा ||
पडी अनग राजा के कान सोने के गडुआ मा जल भरि लाउ |
साधू जी के चरण पखार जय गंगा ||
चरण धोय चरना मृत लेय गोड धोय राजा पी लेयं |
जनम - जनम के कटिगा पाप जय गंगा ||"

इस गायकी की ख़ास बात यह है की कथाये जो भी रहीं हो यह समुदाय समयानुसार कथाओं में निहित नैतिक तत्वों को बदलता रहा है | उपरोक्त कथा की पंक्तियां इसका उदाहरण रही है |

४. छाहुर- छाहुर गाथा गायकी सामाज के दो वर्गों के बीच संघर्ष की कथा है परन्तु विशुद्ध संघर्षकी भावना है इसके कथ्य में | मै निम्न लिखित पंक्तियों के अर्थ की बात करूं तो इनमे सारे स्थानीय देवता की प्रकृति देवताओं के प्रति आभार व्यक्त किया गया है | इस गायकी की विशेषता यह है की यह प्रकृति के कण-कण के प्रति हमे आभारी होने का सबक देता है यह कहती है की हमे प्रति दिन इनके बीच जीवन गुजारने के

एवज में इनका धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिए | पर आज यह परम्परा यह भाव समाज से नष्ट हो चुका है | मुझे ठीक तरह याद है की रात को सोते वक़्त रात और बिस्तर का आभार तो सुबह ज़मीन पर पांव रखने के लिए धरती माँ का पैर छूकर आज्ञा मागी जाती थी | सुबह लाने के लिए सूर्य की बंदना और आभार फिर जल देवता और न जाने किनको-किनको हम अपने जीवन के अंश बनने के लिए धन्यवाद किया करते थे | धन्यवाद ज्ञापित करने का मतलब कोई कुरीति या अंधविश्वास नहीं था बल्कि वो हमे मज़बूत बनाता था हमे विश्वास दिलाता था की पूरा ब्रह्माण्ड उसके पग-पग का साथी है | और जबसे यह परम्परा खत्म हुई भाव न रहा तो प्रकृति का यह रूप हमारे सामने है जिसमे हम हर पल डर के साए में जीवन को गुज़ार रहे हैं न की जी रहे हैं |

सदा भवानी दाहिनी सन्मुख रहय गणेश
तीन देव मिलि रक्षा करयं एजी ब्रम्हा विष्णु महेश
जिभिया मा बइठी आबा जीभी शारद
ओंठवन गौरी गणेश हो
पहिली मा सुमिरी धरती रे माई
एजी दूजे उपर आकाश
तीजे मा सुमिरी गाय रे माता
एजी बांधे प्रेम के पाश रे
राम-राम -राम भइया रामय राम
राम पर धरी आबा आजू हो परान
राम के रटनिया बिसरत नहीं आय
दिन बिसरे रे नहीं रतिया हो आजु
राम के रटनिया ता परन हो अधार
हो भइया जब तक इया चोलबा मा बसय हो परान
सर्बा का सुमिरी सरसतिया का आजु
घेरबा का सुमिरी दादा आजु घमसान
सुमिरी रे भुइया भवानी का आजु
मरजादा हैं तोरे रे हाथ
सुमिरी शरद मइहर का रे आजु
बूढ़ी दाई सुमिरी अउ कठिगर नाथ
देव हो तलाये काशी बाबा हमार
अउ माँ माई हो रतनपुर के
सुमिरी रे देव गोरइया का आजु
हो भइया जे हाँ पुरखन के पुजमान
घूरे के घोरइया देउता मेढे के मेढान
चित्ता के चिताबर माई बाबा हो दलान

चउरा के सन्यासी हो अघोरी समसान
कुआं रे तलाये मेढ़ूली के देउथान
हो भइया सुरुज सुमिरी जे करयं बिहान
सातय रे बहिन देवी दुरगा हमार
मनमा रे देवी करय विचार
चला-चली बहिनी गंगा हो नहाय
अउ गंगा नहाय काया पवित्र होय जाय
तिन मिन धिन ना धिन धि ना
धिन धिना धिन ना धिन धी ना
तिन मिन धिन ना धिन धि ना
धिन धा धिन धा धिन धा

अहीरों की गीत एवं कथा गायकी परम्परा -:

लोक गीतों का प्रधान तत्व गेयता है, यह मूलतः और सिध्यान्तः जातीय और सामुदायिक रचनाये हैं | इनका सर्जक कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा लोक समाज होता है | जन्म से लेकर मृत्यु तक गाये जाने वाले ये गीत कथानक की दृष्टि से भी बड़े समृद्ध हैं | महाउर भाग-१ में जन्म संस्कार के भिन्न-भिन्न कथानक वाले गीतों का संकलन है | बघेलखण्डी लोक गीतों में कथानक की बड़ी समृद्ध परम्परा है | बघेलखण्ड की मौखिक परम्परा से संग्रहित गीतों की यह महाउर भाग-१ पुस्तक आप तक पहुंचाते हुए अत्यंत हर्षित हूं | महाउर भाग-१ पुस्तक सोहर गीतों की गायकी और कथा कहने की भिन्न-भिन्न शैलियों पर आधारित है | संस्कार गीतों में सोहर गीत की अपनी विशिष्ट पहचान और महत्ता है | इन लोक गीतों के संबंध में बघेलखण्ड में एक कहावत प्रचलित है - 'छरहा लगाबा गीत बढ़ाबा' | लोक का मानना है कि यह गितनार की सूझ-बूझ, कल्पना और अभिव्यक्ति की क्षमता पर निर्भर करता है कि वो गीत को कितना बढ़ा सकती है | जन्म और विवाह संस्कार गीतों में सम्बंधित रिश्तेदारों के नाम जोड़-जोड़कर गीत बढ़ाये जाते हैं | सोहर ग्राम्य गीतों में बड़ा प्रचलित है | गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी इस गीत की लय को अपनाया है | सोहिल शब्द से सोहर बना है | सोहिल का अर्थ शुभ से है | यहाँ शुभ से तात्पर्य अनुष्ठान और नये जीव के धरती पर जन्मोत्सव के मृदु गीत से है | बघेली में सोहर का अर्थ सोहइ से है सोहइ यानि कि जिससे मन जुड़ाये, हृदय को ठंडक पहुंचे, प्रिय लगे | सोहर गीत प्रसव पीड़ा से कराहती प्रसूता के चेहरे की मुस्कान है | सोहर गीत का गायन लोक में संगीत चिकित्सा के रूप में हज़ारों-हज़ार वर्षों से होता रहा है | लोक में पुत्र जन्म के अवसर व उसके पहले से भी गाये जाने वाले गीतों को सोहर या छोहर कहा जाता है |

होत भोर भिनसार
ता पहुआ के फाटत हो
अब बहुआ के जनमें ललनबा
गाबइं सखि सोहर हो

सुबह होते ही जैसे नये दिन के लिए नये सूर्य का नया जन्म होता है, उसी तरह माँ की कोख से नये जीव ने जन्म लिया, सखियाँ सोहर मंगल गीत गाने लगीं | सूर्य की तरह ही पूरी प्रकृति ने उस नये जीवन का

धरती पर स्वागत किया | पहु फटना अर्थात अंधकार का छटना माँ की कोख से जन्म लेता बालक और रात की कोख से जन्म लेता सूर्य दोनों ही जीवजगत के लिए उम्मीद की रोशनी और जीवन उत्सव साथ लेकर आते हैं |

पिय संग सोइन अटरिया
ता गरभ जनानी हो
पांच महिनबा के लागत
आई सधौरी हो
अब निरखइं गोतिनी गरभ
होरिल का होइहीं हो

गर्भावस्था के दौरान भी लोक में सोहर गाने की परम्परा है | गर्भ धारण के पांचवे महीने में लड़की के मायके से सधउरी आ जाती है, सधउरी में गर्भावस्था के समय खाये जाने वाले पौष्टिक भोज्य पदार्थ, फल-फूल और मेवे होते हैं | गर्भ जब पांच महीने का हो जाता है तो गाँव की सयानी औरतें गर्भ को जांचने परखने आने लगतीं हैं और उपयोगी सुझाव देती हैं | एक तरह से यह अनुभव संपन्न चिकित्सकीय परामर्श हुआ करता था, जिसका परिवार के लोग पालन करते थे |

ऊंची रे रंगमहलिया
अउ ऊँची अटरिया हो
अब पान अइसन पातर धनिया
गावइं मृदु सोहर हो

सोहर किस अवसर पर किन महिलाओं द्वारा गाया जाता है, इसका सुन्दर चित्रण सोहर की उपरोक्त पंक्तियों में वर्णित है | ऊंचे रंगमहल की ऊँची अटारियों पर सुघड़ बदना महिलायें मृदु सोहर का गायन करने लगीं हैं | सोहर गीत महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गीतों में प्रमुख गीत है | महिला लोक संगीत का स्वरुप अत्यंत सरल व सहज होता है जिसमे सभी महिलायें शामिल हो सकती हैं | बोलचाल के शब्दों से बुने इन गीतों को आम महिलायें भी गितनारों के साथ दूसरे पक्ष में गा सकती हैं, लेकिन उसकी भावभूमि और सांगीतिक विशिष्टता और सामाजिक चेतना की थाह पाना सहज नहीं |

खुलि गयें बजुर किबरबा
खुलीं हथकड़ियाँ हो
अब देबकी के जनमें ललनबा
गावइं सखि मंगल हो

सोहर को मंगल गीत भी कहा जाता है, सोहर की उपरोक्त पंक्तियों में देवकी के कारावास में कृष्ण जन्म की कथा का वर्णन है | गीत की पंक्तियों में देवकी के बंधन खुलने का ज़िक्र और सखियों के सोहर रूपी मंगल गीत गाने का उल्लेख है | सोहर गीतों के संकेतार्थ/निहितार्थ और उनमे छुपा दर्शन अद्भुत है | इन पंक्तियों में देवकी के मात्र बाह्य बंधनों के खुलने की बात ही नहीं है, माँ बनने से औरत जीवन बंधन से भी मुक्त हो जाती है, उसका स्त्रीजन्म सार्थक हो जाता है |

रामा उठीं जब महलिया मा सोहर

अउ कनबा सबद पड़ें हो
अब अनलेखी बंधन छुटि गयें
सफल भयें तिरिया जनम
ललना के मृदु मृदु किलकि
अउ सखिया के सोहर हो
अब सकल बिथा गई नदाइ
मनबा धीरज लागइ हो

१. **सबद - शब्द**
२. **बिथा - व्यथा**
३. **नदाइ - शांत होना**

जब औरत पुत्र जन्म की पीड़ा से कराह रही होती है, उस वक़्त महिलाओं के सम्यक स्वर की जो गूँज उसके कानो में पड़ती है वह मंगल कामना की होती है | दर्द से चीखती जच्चा के चेहरे पर मुस्कान की लहर दौड़ जाती है और वह अपने जीवन को सफल समझती है | सोहर क्या है और उसकी गायकी का रहस्य क्या है उसे उपरोक्त पंक्तियों से बेहतर भला कौन कह सकता है |

सोहर गीतों में कथानको की उत्कृष्टता, प्रधानता और भिन्नता के आधार पर हम इसके वर्ण्य विषय को समझ सकते हैं | सोहर गीतों में मूलतः सम्भोग श्रृंगार का वर्णन ही मिलता है | इनमे स्त्री पुरुष की रति क्रीड़ा, गर्भाधान, गर्भिणी के शरीर यष्टि, प्रसव पीड़ा, साध, दाई का बुलाया जाना, पति पत्नी की नोक-झोंक, सास बहू व ननद भौजाई की तकरार, बाँझ स्त्री की व्यथा, परपुरुष व परस्त्री प्रेम, उछाह उत्सव, मंगल कामना, छल/कपट, मर्यादा, स्वाभिमान और निष्ठा की भावना को व्यक्त करता स्त्री जीवन की व्यथा का जैसा मार्मिक चित्रण इन गीतों में मिलता है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं | इन्ही वर्ण्य विषयों के अंतर्गत सोहर गीतों के प्रभावी कथानक महिलाओं के कंठ से युगों-युगों से फूटते रहे हैं | ज़्यादातर सोहर गीतों में तटस्थ दर्शक भाव एवं स्वयं से जुडी घटनाओं का ही जिक्र हुआ है | इससे यह स्पष्ट होता है की लोक गीतों के जन्म लेने के संबंध में जो समूह की भूमिका बतायी जाती है, दरअसल वो प्रथम उदगार के बाद की है | जिसमें गीतों की अन्य कड़ियां व मिलते-जुलते अन्य कथानक शामिल किये जा सकते हैं | बघेली सोहर गीतों के पारम्परिक गायन के समय उपयोग आने वाले वाद्य यंत्रों की बात करे तो फूल के लोटे, थाली के अलावा अन्य वाद्य यंत्रों का जिक्र किसी भी सोहर गीत में नहीं है और न ही परम्परा संवाहकों से ऐसी कोई जानकारी मिली | यहाँ पुत्र जन्म के पहले या उसके बाद के विभिन्न व्यापारों तथा क्रिया कलापों के अवसर पर गीत गाये जाते हैं, जिनके कथानक सोहर राग परम्परा में ही समाहित हैं जिसे हम जन्म संस्कार के अवसर पर पूर्ण की जाने वाली रश्मों और रीतियों से समझ सकते हैं -

सधौरी - सधौरी का संबंध साध से है, जब स्त्री का गरभ ५ महीने का हो जाता है तब उसके मन में खाने-पीने और पहनने-ओढ़ने को लेकर तरह-तरह की इच्छाएं पैदा होती हैं | जिनकी पूर्ति करना पति या परिवार

के लोगों की ज़िम्मेदारी होती है | इसी इच्छा को बघेली में साध कहते हैं | सोहर गीतों में इसका बखूबी चित्रण मिलता है-

सेजिया मा सोबइ पियरबा
ता बहुआ जगामइ हो
अब लागि अमिलिया के साधि
अमिलिया तुहू लउतेऽ हो

इसी तरह कपड़ों और बच्चे के खिलौने की मांग को लेकर दर्जनों सोहर गीत हैं | स्त्रियाँ जब गर्भ धारण करती हैं तो उनके मायके से सिधौरी आती है जिसमें तरह-तरह के पकवान, मिष्ठान तथा वस्त्र आभूषण रहते हैं | कुछ सोहर गीतों और उनके गितनारों से पांचवे महीने में पचमासा और सातवें महीने में सतमासा उत्सव मनाने की का भी उल्लेख मिलता है | अभी भी कुछ घरों में लड़की के मायके से पांचवे और सातवें महीने में वस्त्र आभूषण और पकवान आते हैं | सधौरी से सम्बंधित गीतों में पति-पत्नी का हास परिहास, इच्छापूर्ति का वर्णन, गर्भधारण पश्चात स्त्री की सुंदरता का वर्णन, उसके मन में उठने वाले तरह-तरह के विचारों की भूमिका बांधते कथानक कभी-कभी बेहद करुण और मार्मिक रूप भी ले लेते हैं |

माया हमरे अमिलिया के साधि
अमिलिया हमू खाबइ हो
कउन छयल चित घाले
अमिलिया तुहू खाबेऽ हो
अब मोर पूत बसइं खरिकबा
चराबइ गइयां हो
एतना जो सुनिन बहुरानी
सोनर घर गई हां हो
सोनरा सोने सांकर गढ़ि देतेऽ
चोरबा फंसउबइ हो

1. **अमिलिया - इमिली**
2. **घाले - बिगाड़ना**
3. **खरिकबा - पाही, यानी की पशुओं को बाँधने या एकत्र करने की विशेष जगह**
4. **सांकर - सांकल, जंजीर**

गीत में गर्भिणी स्त्री अपने सास से कहती है कि मां मेरा मन खटाई खाने का कर रहा है पर आपके पुत्र परदेश में हैं, तो देवर जी से कहकर बगीचे से दो आम तुड़वा दीजिये | यह सुनते ही सास बहू से कहती है कि मेरा बेटा तो परदेश रहता है, तू किसके साथ हमबिस्तर हुई और तेरा गरभ ठहरा, तू किसका पाप मेरे बेटे के सर मढ़ना चाहती है ?

देउतही सोहर - पुत्र जन्म के तुरंत बाद जो प्रथम सोहर गीत गाया जाता है उनमे देवताओं का या उनके जीवन का वर्णन होता है | इसलिए उन्हें देउतही सोहर कहा जाता है | प्रायः देउतही सोहर गीत घर की बड़ी-बूढ़ी महिलाओं द्वारा उठाये जाने की परम्परा है |

कउने घरी भये सिरी राम
कउन घरी लछिमन हो
अब कउने घरी भरत भुआल
महल मोरे जगमग हो

00

कहमा से आई महरानी
कहमा सिउसंकर हो
अब कहमा से आयें भगबान
महल मोरे जगमग हो
पुरबइ से आई महरानी
पच्छिम सिउसंकर हो

इन पंक्तियों में राम जन्म की कथा है | एक सखी दूसरी सखी से दशरथ के चारों पुत्रों के जन्म की घड़ी, नक्षत्र, उनकी मांओं और उनके जन्म का उद्देश्य पूछती है | कुछ इसी तरह दूसरा सोहर गीत भी है जिसमें शिव और देवी दुर्गा के आगमन की कथा का उल्लेख है |

बधावा या रोचन-

रोचन का अर्थ बघेली में कहने, बांटने या बोलने से है | इससे सम्बंधित बघेली में एक कहावत भी है कि "काम नारद के ओतइ घर-घर बानी रोच्चइ" | यानी नारद का घर-घर संदेशा पहुचाना, बात को कहना ही एकमात्र कार्य है | प्राचीन काल में जब यातायात की सुविधाओं का नितांत अभाव था तब पुत्र जन्म की सूचना संबंधित रिश्तेदारों, खासकर बहू के मायके व नवजात शिशु की बुआ के घर पहुचाना आवश्यक माना जाता था | रोचन के रूप में नाई हल्दी और चावल ले जाता है जिसे अक्षत कहते हैं | वो लड़की के मायके जाकर लड़की के पिता और भाई व ननद के घर ननद और ननदोई का अक्षत लगाकर टीका करता है | रोचन के साथ ही संबंधित रिश्तेदारों में बधाव भिजवाने की परम्परा है | बधाव का अर्थ बधाई से है | बधाव चमार जाति के कालाकारों द्वारा नगड़िया पर बधाव ताल के वादन को कहा जाता है | यह ताल विशेष रूप से पुत्र जन्म के अवसर पर ही बजाया जाता है | इस ताल में महिलायें नृत्य भी करती हैं | बधाव ताल के बजते ही लोग समझ जाते हैं कि फलां व्यक्ति के लड़की या भाई के यहाँ बालक का जन्म हुआ है | जिसके यहाँ बधाव जाता था वो नाई (रोचन ले जाने वाले को) चमार (बधाव बजाने वाले को) यथाशक्ति रूप नेंग (उपहार) देकर विदा करते थे | इस रिवाज़ का उल्लेख करने वाले दर्जनों सोहर गीत हैं | लोक आज भी इस परम्परा का निर्वहन उत्सव रूप में कर रहा है | देखिये एक सम्बंधित गीत -

हक्क नगर केर नउआ
हकरि बेगि आबा हो
नउआ बहुआ के भये हां ललनबा
रोचन पहुंचाबा हो

00

दुअरे मा बाजइ हो बधाउ
तबइ नीक लागइ हो
अब मृदु-मृदु उठइ सोहरिया
गावइं सखि मंगल हो

नाड़ा छिदाई- पुत्र जन्म के तुरंत बाद धाय (दाई) को बुलाया जाता है | दाई बच्चे के प्लेशेंटा नाड़े को मां के गर्भ से अलग करती है, इसे लोक में नाड़ा छिदाई कहा जाता है | बच्चे का पिता धाय को बुलाने के लिए चलनी में अनाज लेकर जाता है | धाय से कहता है कि- धाय, फलां को संतान की प्राप्ति हुई है, मैं तुम्हे नाड़ा छिदाई के लिए आमंत्रित करने आया हूं | चलनी में अनाज लेकर जाने का लोक दर्शन बहुत ही उच्च कोटि का है | लोक कहता है कि चलनी में हज़ारो छिद्र होते हैं, उन्ही हज़ारो छिद्रों की तरह ही जन्म लेने वाला बालक हज़ारो वर्ष बिना किसी व्याधि के जीता रहे | नाड़ा छिदाई के बाद से आगे के छः दिनों यानि छठ संस्कार होने तक बघेलखंड में धाय माँ के रूप में चमारिन जच्चा और बच्चा की देखरेख करती है | छठ के दिन सोबर माई (छठ माई) के पूजा अनुष्ठान का कार्य नाउन देखती है | छठी के दिन से बरहौं संस्कार तक के सभी पारम्परिक कार्यों में उसकी सहभागिता होती है | नाड़ा छिदाई के सम्बंध में बघेलखंड में एक कहावत प्रचलित है | बड़ी बूढ़ी महिलायें जब किसी के एक ही स्थान पर बार-बार जाने या एक ही काम बार-बार करने से क्रुद्ध होती हैं तो कहती हैं कि – "का तोरे पुरिखन के उहाँ नाड़ा खेड़ी गाड़ा हैं" ? यानी क्या तुम्हारे बाप दादा का वहां नाड़ा (प्लेशेंटा) गाड़ा हुआ है कि बार-बार वहां जाते हो | दरअसल धाय द्वारा जो नाड़ा काटा जाता है उसे यत्र-तत्र नहीं फेंका जाता बल्कि सोबरी वाले कमरे में ही किसी नियत जगह पर गाड़ दिया जाता है | ग्राम्य संस्कृति में सोबरी के लिए घर में निश्चित कमरा हुआ करता है | जहां सब का नाड़ा गाड़ा जाता है | वह घर का कोना या कमरा बाकी के दिनों में सार्वजनिक प्रयोग में नहीं लाया जाता | उस स्थान के सम्बंध महिलायें सचेत भी करती रहती हैं कि - लाला उहन तोंहरे बापउ, बाबा के नाड़ा खेड़ी गाड़ा है |

पानी बइठाई और बिलुई भात- पुत्र जन्म के दूसरे दिन प्रसूता लकड़ी यानि विशेष तरह की जड़ी बूटी मिट्टी के बर्तन में पानी के साथ पकायी जाती है और फिर कपड़े से छानकर वह पानी को प्रसूता को पिलाया जाता है जिसे **'परसुतिहा'** कहा जाता है, यानि की प्रसूता के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया पानी | परसुतिहा जन्म के दूसरे दिन जच्चे को देना अनिवार्य होता है, इसे लोक में पानी बैठाना कहा जाता है | बघेली बोली में बैठाने का तात्पर्य गोबर के कंडे की आग पर गर्म करने से है जैसे कि दूध बैठाना | दूध जब गोरसी (मिटटी का बर्तन जिसमें कंडे की आग रखी जाती है) पर दोहनी (गाय दुहने का मिट्टी का बर्तन) में रखा जाता है तब उसे बैठाना कहा जाता है | इसी तरह प्रसूता को गोरसी में बिठाया पानी पीने को दिया जाता है | पुत्र जन्म के तीसरे दिन प्रसूता को काला नमक, जीरा और हल्दी मिलाकर जो चावल खिलाया जाता है उसे बघेली में बिलुई भात कहते हैं | परसुतिहा और हल्दी पीसने का काम सास या जेठानी द्वारा किया जाता है |

सोबरी - सोबरी का अर्थ मंगल ओबरी से है | घर के अंधियारे कमरे को बघेली में ओबरी कहा जाता है | एक पूर्ण सुआपंखी घर में ओसरिया (पुरुषों के उठने बैठने की जगह), कोठरिया (ओसरिया के दोनों तरफ के कमरे), दरवाज़ा (ओसरिया से घर के अंदर वाले कमरों व ओसार की ओर जाने का रास्ता, इस पर एक बड़ा, मज़बूत और सुंदर दरवाज़ा लगा होता है), ओसार (ओसरिया की तरह ही एक दूसरी जगह जहां महिलाओं का उठना बैठना रहता है), पटहुन (ओसार की तरफ दरवाज़े वाले मध्य की दो दीवारों के बीच बने कमरे, इनमे प्रायः अटारी बनी होती है |), दुगही (आँगन को दो तरफ से बंधेज के लिए दुगही का निर्माण किया जाता है), दलान (मुड़हर का ओसार), ओबरी (मुड़हर में ओसार की तरफ खुलने वाले दरवाजे के कमरों को ओबरी कहा जाता है |) होते हैं | ओबरी में ही प्रायः सोबर दी जाती है जहां जच्चा बच्चे को जन्म देने के बाद बास करती है | इस मंगल ओबरी में सास, ननद और जेठानी के आलावा किसी अन्य महिला पुरुष यहाँ तक कि बच्चे के पिता का प्रवेश भी पूर्णतः वर्जित होता है ताकि प्रसव संक्रमण घर के अन्य सदस्यों तक और बाहर का संक्रमण जच्चे-बच्चे तक न पहुंचे | सोबरी में जाने वाली महिलायें साफ़-सफाई का विशेष ध्यान रखती हैं |

सोबर पोताई- बघेलखण्ड में सोबर को माँ की संज्ञा दी गई है | महिलाओं का मानना है की सोबर माई ही बच्चे को पूरे छः दिन तक अपनी कोख में रखती हैं | वह बहुत ही कुरूप, खून के थक्के और मांस के लोथड़े से सनी होती हैं | उन्हें अंधेरा प्रिय है, उनका छः दिन तक सोबरी में वास होता है | पुत्र जन्म के छठवें दिन ननद अपने हाथों से सोबर को पोतती है | भावज द्वारा ननद की पोंतहड़ी (पोतने का बर्तन) में नेग स्वरूप कंगन या अंगूठी डाल दी जाती है | इसे ही सोबर पोताई नेंग कहा जाता है | इस नेंग के बारे में पहले से नहीं बताया जाता | जब ननद सोबर पोत कर बाहर निकलती है तो उसकी सखियाँ और गाँव की अन्य महिलायें पूंछती हैं कि उसे क्या मिला सोबर पोताई में ? तब ननद द्वारा वह नेग सार्वजनिक किया जाता है | छठी के दिन सोबरी के कपड़े सहित घर के सभी कपड़ों को गर्म पानी में धोया जाता है ताकि प्रसूति वाला घर कीटाणु मुक्त हो सके | साफ़-सफाई के बाद इसी दिन सोबर माई का अनुष्ठान रखा जाता है और उन्हें विदा किया जाता है | छठी के दिन महिलायें महाउर से दिवार पर सोबर माई सहित सुरुज भगवान का चित्र बनाती हैं और उनकी पूजा करती हैं | छठवें दिन तक बच्चे का नाजुक शरीर कुछ मज़बूत होता दिखता है, तो छठी का उत्सव का मनाया जाता है | इस उत्सव में जच्चा को गर्म पानी से नहलाया जाता है | नाउन द्वारा उसके नाखून काटे जाते हैं | पैरों में महाउर लागाया जाता है और फिर मायके से भाई द्वारा लाई गई चूनर पहन कर जच्चा छठी माता की पूजा करती है | बघेलखण्ड में सोबर और सूदक (मृत्यु के दिन से दशगात्र तक का समय) को एक जैसा ही माना जाता है | सूदक में शुद्ध होने में १० दिन लागतें हैं तो सोबर में ६ दिन | सूदक में दसवें दिन परिवार को कच्चा भोजन दाल, भात खिलाया जाता है तो सोबर में भी छठी के दिन कच्चा भोजन दाल, भात और कढ़ी खिलाई जाती है | वैसे सूदक में दसवें दिन और जन्म में छठी के दिन से ही घर को शुद्ध माना जाता है लेकिन पूर्ण शुद्धि दोनों में क्रमशः १३ वें और १२ वें दिन ही होती है | छठी के दिन ही बच्चे को पहली बार उसकी बुआ द्वारा काजल लगाया जाता है | यह काजल गाय के घी से तैयार किया जाता है | गाय के घी का दिया जलाकर उसके धुएं को हंसिये की धार वाले भाग में इक्कठा किया जाता है | फिर उसे गाय के घी में ही मथकर आँख में आंजा जाता है | इस तरह से बना काजल लगाने

से बच्चे की आँख से बहने वाला पानी धीरे-धीरे बंद होने लगता है | काजर अंजाई और उसके नेंग के सम्बंध में यह गीत देखिये –

मांगयि ननद रानी कंगना काजर के अंजाई
इया कगना मोर माई बाप रे
न देबइ काजर अंजाई हो कगना ननदोई
इया कंगना मोर मयिके के बिढ़बा
न देबयि काजर अंजाई हो कगना ननदोई

पिपर पिसाई - प्रसूता को पुत्र जन्म के दूसरे दिन परसुतिहा पानी दिया जाता है, उसी दिन पीपर भी बाँट कर दिये जाने की परम्परा है | सोहर पर के दर्जनों दादरा गीतों में पीपर पीसने का उल्लेख मिलता है | जिनमे सास,ननद, जेठानी और देउरानी के पीपर पीसने का ज़िक्र हुआ है | सास पीपर पीसती है और बहू को देती है तब उसका नेग बनता है इस संबंध में गीत भी है जिसे पीपर पिसाई नेग-चार गीत या बधाई गीत कहा जाता है |

सासु जो आबइं पिपरी पिसन का
मागइ आपन नेंग
नेंग के बदले ठेंग देखउबइ
पिया गयें परदेस

उक्त गीत में सास को बहू द्वारा पीपर पिसाई के बदले नेंग न देने की बात परिहास में की गई है | ऐसा नहीं है कि हर जगह सिर्फ बहू (प्रसूता) को ही नेंग देना पड़ता है, पुत्र की मुंह देखाई के रूप में घर के सभी बड़े लोगों और रिश्तेदारों के द्वारा निछावर देने की परंपरा है | देखिये यह गीत -

मोरे ललना के माथे घुंघुर काले बाल
आजा जो अइहइं नेउछाबर करिहंय
मोरे ललना के आजी चूमइं दूनउ गाल
बाबू जो अइहइं नेउछाबर करिहंय
मोरे ललना के माया चूमइं दूनउ गाल

सोंठउरा- सोंठउरा यानी पौष्टिक आहार | वैसे बच्चे के जन्म पर हल्दी, कसायल, चंसूर, अलसी, मेथी, सोंठ आदि के लड्डू देशी घी में बाँधने की परम्परा है किन्तु लोक में सबको सम्यक रूप से सोंठउरा ही कहा जाता है ऐसा क्यों ? परम्परा संवाहको से पूछने पर पता चला की लड्डू किसी का भी बने सभी में सोंठ की एक नियत मात्रा होती ही है | इसीकारण सभी प्रकार के लड्डू सोंठउरा कहलाते हैं | कुछ महिलाओं ने यह भी बताया की सही मायने में सोंठ का लड्डू ही सोंठउरा है जो जच्चा का शरीर पुनः पहले की तरह हिष्ट-पुष्ट हो जाय इसलिए बनाया जाता है | हर तरह के सोंठउरे की अपनी-अपनी विशेषतायें और फायदे हैं | जैसे हल्दी का सोंठउरा कमर को मजबूती देता है तो अलसी का सोंठउरा दर्द को दूर करता है |

सतइसा – बालक का जन्म होते ही घड़ी और नक्षत्र देखा जाता है | भारतीय परंपरा में 6 ऐसे नक्षत्र हैं जिनमे जन्म लेने पर सत्तइसा लगता है | उन नक्षत्रों के नाम हैं रेवती, अश्वनी, ज्येष्ठा, मूल अश्लेषा और मघा | इनमे प्रत्येक का काल 24 घंटे का माना जाता है | २४ घंटे में चार चरण होते हैं | बालक का जन्म किस चरण में हुआ है, इसके माध्यम से यह देखा जाता है कि उसका प्रभाव कितना है | इन नक्षत्रों के दौरान किसी बालक का जन्म होता है तो जन्म के दिन से सत्ताइसवें दिन शुद्धि क्रिया पूर्ण होती है | समान्य दिनों के जन्म में बारवें दिन बरहौं संस्कार कर शुद्धि हो जाती है | लेकिन मूल नक्षत्र के कारण यह शुद्धि सत्तइसा पूजने के उपरान्त होती है | लोक में सत्तइसा पुजाई २७ वें दिन २७ तरह के दाने और २७ तरह की लकड़ियों को मिट्टी के एक बर्तन में रखा जाता है | नाई इस बर्तन को यजमान के निर्देशानुसार ज़मीन में गाड़ देता है | बच्चे का पिता अपना बाल बनवाता है | जच्चा और उसके पति जुएँ (खेती के समय दो बैलों को जोड़ने का यंत्र) पर बैठ कर घड़े से गिरते बूँद-बूँद पानी से नहाते हैं | फिर दोनों विधि अनुसार अनुष्ठान में बैठते हैं तब कहीं जाकर २७ दिन बाद बच्चे का पिता पहली बार अपनी संतान की परछाई कटोरी में रखे तेल में देखता है |

आखत डलाई - छठी के दिन जच्चा अनुष्ठान उपरांत अपने बच्चे को गोद में लेकर आँगन में बैठती है और गाँव की महिलायें बारी-बारी से आखत (अनाज) जच्चा की गोदी में डालती हैं और बच्चे को आशीर्वाद प्रदान करती हैं | आखत डालने की रश्म के लिए गाँव में बुलावा दिया जाता है | आखत डालना लोक के अनुसार धरती पर अये नये जीव का समग्र रूप से स्वागत है | उसके भावी जीवन की मंगल कामना का उत्सव है | बच्चे की मां गाँव की प्रत्येक महिला से अपने पुत्र के लिये आशीर्वाद मांगती है ताकि उसका जीवन मंगलमय हो | इस परंपरा का महत्त्व इस कहावत में प्रतिबिंबित है "का तू फलाने के छठी माँ आखत डालेऽ रहेऽ"? यह उक्खान तब ढीला जाता है जब कोई अपने से बड़े का नाम सम्मान व संबोधन के साथ नहीं लेता |

बरहौं संस्कार - संतान प्राप्ति के बारहवें दिन जो संस्कार अनुष्ठान किया जाता है उसे बरहौं संस्कार कहते हैं | इस दिन स्त्रियाँ सूर्य की पूजा करती हैं | नवजात शिशु की दीर्घ आयु, तेज, बल और विद्या की कामना करती हैं | इस दिन समस्त परिवार सगे-संबंधियों को भोज दिया जाता है | इसी दिन बालक का नामकरण भी किया जाता है | इस प्रकार पुत्र जन्म से शुरू होकर जन्म संस्कार बारहवें दिन पर आकर समाप्त होता है |

घाट पुजाई/कुआं पुजाई- घाट पुजाई में जल देवता की पूजा की जाती है और प्रसूता अपने स्तन से दो बूंद दूध जल देवता को अर्पित करती है और मन ही मन प्रार्थना करती है कि जिस तरह आप के पास अथाह मृदु जल है उसी प्रकार मेरे स्तन में भी दूध भरा रहे ताकि मै संतान को पाल सकूं | जीवन चक्र को सफल बनाने में मै भी भागीदार होऊं | लोक में प्रकृति द्वारा प्राप्त संसाधन का उपभोग करने के बदले कृतज्ञता ज्ञापित करने की नेक परम्परा रही है | लोक हर उस कण को अपना देवता मानता है, उसके प्रति कृतज्ञ है, सहृदय है, जो उसके जीवन यापन में सहयोगी है | ग्राम्य संस्कृति में सूर्योदय के साथ बिस्तर से उठते ही भू वंदना,

जल वंदना, सूर्य को अर्घ्य दान सहित उपयोग में आने वाली सभी वस्तुओं और वनस्पतियों से पूछकर, निवेदन कर उनका उपयोग करना फिर आभार सहित उन्हें यथास्थान रखना नेक संस्कार माना गया है | यह दीक्षा हमें बचपन से ही दी जाती है | ग्राम्य संस्कृति में आज भी वनस्पतियों के यथाउचित उपयोग करने पर जोर दिया जाता है, न की दोहन पर | यहाँ तक कि रोज़ मर्रा के जीवन में उपयोग आने वाले औज़ार कुदाली, फावड़ा, हंसिया, खुरपी आदि के लिए एक निश्चित स्थान तय होता है, उन्हें प्रणाम कर उपयोग में लाया जाता है और आभार सहित वापस वहीं रखा जाता है | जड़ी बूटियों के संबंध में लोक मान्यता है कि उनसे पूछकर, उनकी प्रार्थाना किये बिना यदि उनका उपयोग किया गया तो वह दवा रूप में असरकारी नहीं होती | यह अंधविश्वास नहीं बल्कि लोक के सहज, सरल, भावपूर्ण और कृतज्ञ होने की नेक परिपाटी का परिचायक है | एक सोहर गीत के अनुसार कुआँ पुजाई संस्कार नवबधू और नवजात शिशु का जल स्थल से परिचय कराना है | उसके कोरे में आये नन्हे जीव का, परिवार द्वारा उपयोग में लाये जा रहे जल स्थल से परिचय कराना है, भेंट कराना है ताकि दोनों एक दूसरे को जान सकें | कुआं पूजने से पूर्व तक नवबधू कुएं पर पानी के लिए नहीं जाया करती, यह उसका प्रथम परिचय होता है | एक तरह से परिवार की मालकिन उसे यह कार्यभार सौंपती है | संतान प्राप्ति के बाद से बहुएं स्थानीय देवताओं और ग्राम्य देवताओं की अर्चना, सेवा की ज़िम्मेदारी ग्रहण करती हैं | उसके पहले तक उसकी सास की पूर्ण ज़िम्मेदारी होती है | इसी तरह पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह अनुष्ठान आभार सहित हस्तांतरित होता रहता है |

जनकसुता होरिल लइ कोरबा
हथबा कुसुम आखत हो
अब घाट पूजन का जाइं
मनहि मन सुमिरइं हो
जल सामी ओगरेऽ जइसइ जलबा
राखेऽ पति हमरिउ हो
अब ओईसइ ओगरइ दुधबा
ललन मोर बाढ़इं हो

ओगरना - प्राप्त होना , जिस प्रकार कुएं में जल का रिसकर इकट्ठा होना ओगरना है, उसी प्राकार मां के स्तन में दूध आना जिससे माँ बच्चे को स्तनपान कराती है उसे दूध ओगरना कहते हैं |

पछीत बोलनी- प्रसूता का देवर लड़के को लेकर घर के पिछवाड़े चला जाता है और वहां से बोलता है कि – "भइया लड़िका बच्चा हमार, गुड़ु गंतरा तोंहार |" यह सुनकर बड़ा भाई छोटे भाई को यथाशक्ति नेग देता है | यह दो भाइयों के मध्य सामंजस्य और प्रेम को बनाये रखने, एक दूसरे का परस्पर सम्मान करने की परम्परा का परिचायक है | ऐसे उत्सव जीवन में कुछ विशेष क्षणों को, अपने अंदर समेटे रहते हैं जो उम्र भर कभी नहीं भूलते | ऐसी ही भावपूर्ण यादें भाइयों को एक दूसरे के प्रति ताउम्र प्रेम गाँठ में बांधे रखती हैं |

काजल पारना- आँखे सुंदर, बड़ी और स्वस्थ्य रहें इसके लिए काजल लगाया जाता है | इसे जिस विधि द्वारा बनाया जाता है उसे लोक में 'काजल पारना' कहते है | इस विधि से बना काजल आखों के लिए बहुत फायदेमंद होता है | पहले मिट्टी के दिए में गाय के घी का दिया जलाया जाता है | जलते दिए के ऊपर मिट्टी या स्टील का कोई कटोरा रख दिया जाता है | घी खत्म होने तक यह दिया जलता रहता है और दिए से निकलने वाला धुआं ऊपर वाले बर्तन में जमता रहता है | सुबह इस जमे धुएं को निकालकर सरसों के तेल में अच्छी तरह फेंट कर कजरौटी (काजल रखने का लोहे का पात्र) में रख लिया जाता है | काजल बनाने के इसी विधि को काजल पारना कहते हैं |

लोकगीतों की व्याख्या का क्रम अंतहीन होता है, लोकगीतों में वर्णित विषयों की महत्ता, कल्पनाओं के आकाश से यथार्थ के धरातल पर बनते बिम्ब, अलंकारों का सहज ताना-बाना, अभिव्यक्तियों में छुपी सामाजिक मर्यादा का दायित्व बोध और देशकाल की सजगता को देखते हुए हम इनके सर्जना भाव और सर्जक मन को सहज ही समझ सकते हैं, टटोल सकते हैं | कलाकार खुद को छुपा सकता है लेकिन उसकी कला, उसकी सर्जना उसके आस्तित्व की तटस्थ गवाह होती है | लोक गीतों की सर्जना तो भावों में है, जितनी बार और जब-जब इन गीतों को महिलायें गा रही होती हैं, तब-तब इनकी रचना हो रही होती है | हर पात्र अपने अनुरूप इन्हें रचता जाता है अपने भावानुरूप और इनके मार्फ़त अपनी भावाभियक्ति करता है | बघेली सोहर गीतो में प्रेम, नारी सौन्दर्य, पुत्र लालसा, बाँझपन और पति वियोग की मार्मिकता और कारुणिक अभिव्यक्ति दूसरे अन्य गीतों में नहीं मिलती | सोहर गीतों में कहीं-कहीं नारी अत्यंत निराश एवं व्यथित रूप में अवतरित होती है, लेकिन समाज और जीवन के प्रति उसका एक पल के लिए भी मोह भंग नहीं होता | महिला गीतों में सोहर को नारी मनोभावों का स्पष्ट दर्पण कहा जा सकता है, जहां नारी के हृदयस्थ भावों के प्रतिबिम्ब देखे जा सकते हैं | इन गीतों में साहित्यिक रसमयता, विचारत्मकता और मार्मिकता तो है ही साथ ही यह गीत संस्कृति एवं समाज की दृष्टि से ये अपनी स्थानीय संस्कृति, सामाज और संस्कारों को परिलक्षित करते हैं | जितना ही हम इनकी तह में जाते हैं उतना ही इनका मूल्य स्पष्ट होता जाता है |

अधिरतिया के लागत
कोइली कुहूकइ हो
अब छतिया रेतइ ओखर बोली
ता भल कइली कुहूकिउ हो
हमका निबल का तू सताएऽ
जगायेऽ अधिरतिया हो
अब साइत कुसाइत न चलाबा
दुइधारी तलबरिया हो

विरह की विभिन्न मार्मिक व्याथाओं से ओत-प्रोत इन सोहर गीतों में समूचे समाज की व्यथा के दर्शन होते हैं | विरह वियोग की स्थिति में नारी मन में किस-किस तरह के उद्वेग उत्पन्न होते हैं सोहर की यह पंक्तियाँ उसे परत दर परत खोलती हैं | विरहाग्नि में वर्षों से जलती नायिका तन-मन से इतनी दुर्बल हो चुकी है कि कोयल की मीठी आवाज़ उसकी विरहाग्नि को और प्रदीप्त कर रही है | वह कोयल से कहती है कि – हे

कोयल आधीरात को तुम बोल कर मेरा हृदय न जलाओ, तुम्हारी यह कूक मेरा हृदय रेत रही है | मैं कामाग्नि में पहले से ही जल रही हूं और ऐसे में तुम भी मेरा साथ देने की बजाय असमय कूक रूपी दोधारी तलबार चला रही हो | मैं समझ गयी कोयल कि निबल (कमज़ोर) को सभी सताते हैं |

मुरगा तोखा ख़रीदेऽन अकाले
सेयेऽन दुकाले हो
अब तू ता भयेऽ हा जबान
चुगा न मोर मोतिया हो

पति बारह वर्षों से घर नहीं आया, कामाग्नि में तप रही नायिका मुर्गे से कहती है कि - मुर्गा मैंने तुम्हे अकाल दिनों में पाला और दुकाल के दिनों में तुम्हारी सेवा की है , अब तुम पूरे जवान हो गए हो | अब तुम मेरी सेज पर आओ और यौवन रूपी मोती को चुगकर मुझे तृप्त करो | नैसर्गिकता का इतना अच्छा उदाहरण और कहां मिल सकता है | सोहर गीतों में ऐसे कथानको की भरमार है जो, नारी मन की पीड़ा को प्रकट करते हैं |

उज्जर बतीसी केर धनिया
तोंहर रहिया ताकइ हो
अब आइ जातेऽ मोर अटरिया
सेजरिया ता सूनि हइ हो
राजन अब भयेऽन पूर जवान
देहिया तपइ लाग हो
अब अंगिया मा अंग न समाइ
सेजरिया मा देहियां हो
होइ कुआं पिया नाकी
सागर नहीं नाका जाइ हो
अब रहि-रहि छलकइ रामा
जोबन केर गगरी हो
अब कउन-कउन भमर लोभाइ
कुसुम रस लेइहीं हो

१. उज्जर- सफेद

२. नाकि - लांघना

हास-परिहास की बातें ख़त में लिखती नायिका परदेशी पति से कहती है कि- तुम मुझे बारह वर्ष की उम्र में व्याह कर लाये, फिर अकेला छोड़ परदेश चले गए | तुमने बारह वर्ष से मेरी सुध न ली, देखो अब मैं पूरी जवान हो गयी हूं, मेरी चोली में मेरा स्तन नहीं समाता और न ही बिस्तर पर यह देह | प्रिय ! कुआं होता तो लांघ जाती पर जवानी रूपी इस समुद्र को लांघना मेरे वश में नहीं | यौवन की गागर रह-रह कर छलक रही है, जाने किस दिन मेरा शील छूट जाय | तुम जल्दी आ जाओ नहीं तो जाने कितने ही भ्रमर इस कुसुम का रस लेने को लालाइत हैं | हास-परिहास में नायिका इतनी गंभीर बात कह जाती है, आज भी परस्त्री पर जाने कितने भ्रमरों की नज़र होती है |

अगने मा राखिउ माया बेला
दुआरे चमेलिया हो

अब धेरिया बिआहेऽ सउ कोस
जनम बइरिनिया हो
चला उड़ि चली सखिया सलेहर
चला न केदली बन हो
अब हमका बिआहन आयें राम
पइ हम नहीं जाबइ हो

१. **धेरिया - पुत्री**

माँ तुमने बेला के पौधे को आँगन में अपनी देख-रेख में आँखों के सामने लगा रखा है | चमेली के पौधे को द्वार पर बाबू की देख-रेख में लगा रखा है फिर अपनी प्राण प्यारी बेटी को घर से कोसों दूर क्यों व्याह रही हो | माँ, क्या मैं तुम्हारे पूर्व के जन्मो की दुश्मन हूँ ? क्या तुम मुझसे इस तरह बैर निभाओगी ? सखी चलो केदली वन की ओर उड़ चलें | राम मुझे व्याहने आ रहे हैं पर मैं उनके साथ नहीं जाउंगी | बेटी माँ-बाप को छोड़ना नहीं चाहती और सामाजिक मर्यादाएं उसे पीहर में रहने की अनुमति नहीं देतीं | अंततः लडकी माँ-बाप को छोड़कर कहीं दूर चली जाती है | जहां से वो लौटकर कभी नहीं आती | वैसे भी माँ बाप बेटी को ससुराल बेटी रूप में ही भेजते हैं मगर उसके बाद से वह कभी उनकी वही पुत्री नहीं रह जाती | एक सोहर गीत में भाई अपनी मां से पूछता है कि माँ, दीदी को क्या हुआ ? अब वो पहले की तरह जिद नहीं करती, मुझसे लड़ती नहीं | क्या आपने उन्हें कुछ कहा है ? ऐसा ही एक और सोहर गीत जिसमें बेटी अपने पिता को ख़त लिखकर कहती है कि - बाबू जी मैं तो घर में खेलने-कूदने और फुदकने वाली गौरैय्या की तरह थी फिर आपने इतनी दूर अनजाने देश में अनजाने व्यक्ति के हवाले क्यों कर दिया | वह कन्यादान के समय का ज़िक्र करती हुई कहती हैं कि कोई बाप इतना कठोर कैसे हो सकता है कि अपने ही अंश बेटी को किसी अनजान के हाथों स्वाभिमान रक्षा के लिए बेंच दे | बाबू जी आप में और उस बहेलिये में कोई अंतर नहीं जो आज़ाद पंछियों को कैद कर व्यापार करता है | उन्हें अनजान देश में अनजान लोगों के हाथ चंद पैसों के लिए बेंच आता है | इतना ही नहीं बाबू जी आपने घर में मेरे हिसाब से रखी सारी चीज़ों को भाई के हिसाब से क्यों कर दिया है ? ऐसा कर के क्या आप एक ही जीव को दो अलग-अलग देह में नहीं बांट रहे ? भाई और मां के साथ पीहर में बिताये उन तमाम दिनों की याद को एक-एक कर कुरेदती बेटी की नज़र चंदन के पेड़ पर जाती है | उसे देख वह रोने लगती है और कहती है कि – बाबू जी आपने इस पर डला झूला क्यों निकलबा दिया ? आप जानते हैं कि मैं इस पर बैठ कर सपने देखती थी | आपने मेरे सपने की आख़िरी उम्मीद भी नही छोड़ी ? खैर कोई बात नहीं बाबू जी अब मै गर्भ से हूँ और मेरे पेट में भी मेरी ही तरह एक बच्ची पल रही है | मैं नहीं जानती कि मै इसका क्या करूंगी, लेकिन भाई से कहना कि मेरे लिए वह चूनर लेकर आये |

एक अभागिन गइया
खूंटा काहे आबइ हो
अब बछड़ा के परा रे अकाल
कहइं सब ठठिया हो
एक अभागिन चिरई
खोथउना काहे आबइ हो
अब चुनगुन के परा हो अकाल
कहइं सब बिरइया हो
एक अभागिन तिरिया
ससुररिया काहे आबइ हो

अब होरिल का गई तरसाइ
कहइं सब बझिनिया हो

१. **ठठिया, ठाठ - बाँझ, वंध्या**
२. **खोथउना, खोथा - घोसला**
३. **चुनुगुन - चूजे**
४. **बिरइया - चिड़िया बाँझ हो तो उसे बिरइया कहा जाता है |**

कोई गाय खूंटे से क्यों बंधी है ? इसमें उसका क्या स्वार्थ है ? उसके पास तो शब्द भी नहीं कि वो अपने भावो को अभिव्यक्त कर सके | मानव अपने स्वार्थ के लिए उसे खूंटे से बांधता है फिर उसे बहिला, ठाठ कहकर संबोधित करता है | कोई चिड़िया अपने खोंथे में क्यों आती है अपने निहित स्वार्थ के लिए ? नही, प्रकृति का संतुलन बना रहे, इसलिए वो सम्भोग करती है, मानव की तरह शारीरिक सुख के लिए मानवेतर में सम्भोग नहीं होता | यदि चिड़िया को चुनगुन न हुआ तो उसे लोग बिरइया कहते हैं | कोई लड़की ससुराल क्यों आती है ? क्या उसका कोई निजी स्वार्थ होता है ? नहीं वह अपने माँ-बाप का आँगन छोड़कर पिय के देश इसीलिए आती है कि प्रकृति के संतुलन में भागीदार होगी, लेकिन यह निर्दयी समाज उसे बाँझ कह ताने मारता है |

चिरई कस बाबू घर खेलेऽन
चुनूगुन कस फुदकेऽन हो
अब खेल-कूदि आयेऽन ससुरारि
पय उआ दिन नहीं बहुरे हो
बइरि तरी ससुरे के हिंडोलना
ता नीम तरी नइहरे के हो
अब बइरि छेरिया चरि जाइ
लहरइ नीम डरिया हो

हे सखी ! मैं अपने बाबुल के घर पर चिड़िया की तरह आँगन में खेलती थी, फुदकती थी | लेकिन ससुराल आकर वह सब जाने कितना पीछे छूट गया है | उम्र ढलने चली पर वे दिन वापस नहीं आये | ससुराल के सुख-समृद्धि का झूला बेर की डाल पर पड़ा है और नइहर का नीम की डाल पर | बेर के पत्ते बकरी खा गई, लेकिन नीम पर पड़ा नइहर का झूला आज भी हिलोरे ले रहा है, और नीम की सीतलता मेरे लिए इस ढलती उम्र के लिए भी बरकरार है | नइहर और ससुराल के अंतर को स्पष्ट करने के लिए इतनी सहज, सरल और मार्मिक उपमा लोक ही दे सकता है | ससुराल का सुख नव बधू के लिए थोड़े दिन के लिए ही होता है, नइहर का मान, सम्मान, प्रेम नीम के पेड़ की तरह है जो बारहों महीने शीतल बयार देता रहता है | बेर के पत्ते को बकरी खा गयी यानी समय के साथ सुख के मायने बदल जाते हैं पर नीम का पेड़ बारहों महीने, अपने दुःख के समय (पतझड़) में भी नीचे बैठे व्यक्ति को शीतलता प्रदान करता रहता है |

छापक पेड़ छिउलिया
ता पतबन गहबर हो
अब उहीं तरी ठाड़ि हरिनिया
मनइ अति अनमन हो
चरतइ चरत हरिनबा
हरिनी से पूछइ हो
हरिनी का तोर चरबा झुरान

धउं पानी बिन मुरझेऽ हो
राजा नहीं मोर चरबा झुरान
न पानी बिन मुरझेऽन हो
हरिना आजु रमइया जी के छठिया
तोंहका मारि डरिहीं हो
छोड़ा अजोध्या के राजि
नंदन बन चलि चला हो
भल बउरानी हरिनिया
तोंहका के बउराइस हो
मासु केर रचिहीं जेउनार
ता खाल साधु पइहीं हो
मचिअइ बइठी कोसल रानी
हरिनी अरझ करइ हो
रानिया मसुआ ता सिझइ रसोंइया
खलरिया दइ देतेऽ हो
पेंड़बा मा टांगब खलरिया
अउ मन समझउबइ हो
रनिया खलरिन आपन पिया मनबइ
अउ हिय से लगउबइ हो
जाहु हरिन घर अपने
खलरिया नहीं देबइ हो
हरिनी खलरी के डफुली मढ़उबइ
रमइया मोर खेलिहीं हो
रामा जब-जब बाजइ डफुलिया
हरिनिया ता अनकइ हो
अब महल पछितिया हरिनिया
बाउर भई बागइ हो
हरिनी ठाड़ि ढकुलिया के खाले
ता हरिना बिसूरइ हो |

यह बघेली लोकगीत सामंती क्रूर व्यवस्था का मुकम्मल इस्तिहार है | लोक पर इंद्र सत्ता का दबंग दबाव था कि सबके मुह बंद थे | किसी में इतना साहस और सामर्थ नहीं था कि अपने प्रति हो रहे घोर अन्याय के विरोध में सत्ता से फ़रियाद कर सके | हिरना और हिरनी के कथानक के माध्यम से तत्कालीन सामंती आचरण की झांकी प्रस्तुत की गई है | राजा के लाड़ले का अन्न प्रासन (पसनी) संस्कार होना है | निर्दोष हिरना मारा जाएगा | प्रिया हिरनी चिंतित है | राज सत्ता का इतना आतंक है कि वह बोल नहीं सकती | प्राण भिक्षा का भी उसे अधिकार नहीं मिला है | वह देश त्याग करना चाहती है | हिरना जानता है कि उसे देश त्याग करने का भी अधिकार नहीं है, इसलिए हिरनी की पलायन योजना से सहमत नहीं होता | लचार हिरनी अपने प्रिय के लिए रानी से विनती करती है रानी !हिरना की मांस तो रसोई में पाक जायेगी, खाने के काम आ जायेगी किन्तु हिरना की खाल हमें दे दीजिये, मैं उस खाल को पेड़ पर लटकाकर नित्य देखूंगी, मन को समझाउंगी की हिरना जीवित है किन्तु हाय रे सत्ता का मद, हिरनी की आर्त पुकार

अभिमानी रानी ने कहाँ सुना | रानी उत्तर देती है –हिरना की खाल मृदंग पर चढ़ेगी जिसे मेरा लाड़ला राम बजायेगा | यह शोषण और अनीति की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है ? निरीह हिरनी कर ही क्या सकती है ? हिरना की खाल से बनी खंजरी जब-जब बजती है हिरनी किसी वृक्ष के नीचे खड़ी होकर उसकी आवाज़ सुनती है, महल की ऊंची-ऊंची दीवारों को वह कहां लांघ पाती, पागलों की तरह खंजरी की आवाज़ के पीछे भागती वह एक दिन जान दे देती है | यहाँ हिरनी नारों और नगाड़ों के बीच खड़ी मूक जनता है जिसे राजसत्ता उसके कर्तव्य का बोध कराती है लेकिन उसके अधिकारों से वंचित रखती है | हम अमानवीय भयंकरता के युग में जी रहे हैं | आज हमारा जी आहत हम कुछ बोल नहीं पाते

झुरान - सूखना
सिझइ - पकना
अनकइ - सुनना
बागइ - घूमना

जब वीरन आयें ओबरिया
ता होरिल उठावहिं हो
ललना मनइ-मन अदिति मनाबइं
हमार पत राखेऽ हो
पुरुबइ का उअत अलरबा
ता जलबा चढ़ाइन हो
अब अंचरा से करन दुलरबा
भर मुख वर मागन हो
हथबा बीरन लिहे ललना
जू मुहबा उघारइं हो
अब ठुनुक–ठुनुक ललना रोमइं
सुरुज मोर पत राखिन हो
बहि चलें नैनन नीर
निकरि नीक लागइं हो
आजु भर मन रोयन ललनबा
ललन सुख पायन हो
ललना होइ गएँ जियरा कठोर
सब सुख तजबइ हो

ओबरिया, ओबरी - कमरा
अलरबा - कोमल
उघारइं - खोलना
नीक - अच्छा

व्याख्या - बाँझ की दशा समाज में क्या रही है और आज भी क्या है, उसके मर्म को इस सोहर गीत से बेहतर और कोई नहीं कह सकता | लम्बे-लम्बे केशों वाली बधू बाँझ है, वो घर आयी दासी की गोद में बालक देखकर दासी से उसे अपने कोरे में उठाने का निवेदन करती है | लेकिन दासी साफ़ मना कर देती है और कहती है कि- रानी, चाहे तुम मुझे अपने घर की नौकरी से निकाल दो या राज्य से,

लेकिन मैं तुम बाँझ की गोद में अपना बालक नहीं दूंगी | ठीक है दासी, यदि तुम्हारे नन्हे बालक का मुझ बाँझ के छूने से कोई बुरा होता हो तो मैं उसे नहीं छूऊंगी | पर हे दासी, मेरा स्त्री मन नहीं मानता, मुझे भी तो ममत्व का हक़ है | क्या मैं ताउम्र किसी बालक को गोद नही ले सकती ? दासी, मेरे घर के पिछवाड़े मेरे भाई जैसा मेरा ख्याल रखने वाला बढ़ई है, तुम जाकर उनसे कह दो की उसकी रानी बहन ने कहा है कि उसके लिए एक काठ का बालक बना दें | बढ़ई अपनी रानी बहन के कहने पर काठ का बालक बनाने लगता है | वह उसका हाथ-पैर बनाता है, पेट बनाता है और जब वो बच्चे का मुह बनाता है तो उसकी आँखों से आसूं छलक पड़ते हैं | वो पास ही बैठी अपनी पत्नी से कहता है कि मैं इस काठ के बालक में प्राण कैसे डालूँगा ? न चाहते हुए भी बढ़ई अपनी रानी बहन की गोद में काठ का बालक छोड़ आता है | बहू काठ के बालक को अपनी कोख से जना बालक मानकर खुशी से झूम उठती है | वर्षों से निसंतान होने और समाज के ताने से घायल वो और क्या करती, दौड़कर सास से जा कहती है कि- सासू माँ, मुझे बालक हुआ है जल्दी से मेरे मायके संदेशा भिजवा दीजिये | मेरे भाई को रोचना भिजवा दीजिये | ननद और सास को बहू की मायके वालों से बदला लेने का यह अच्छा मौक़ा जान पड़ता है और वो तुरंत नाई को रोचना और चामार को बधाव लेकर बहू के मायके भेज देतीं हैं | नई बहू के मायके पहुचता है, नाई के हाथ में रोचना देखकर लड़की की मां को भरोसा नहीं होता की अचानक कैसे बेटी को सन्तान की प्राप्ति हुई | कल तक ससुराल वाले उसे बाँझ कहकर ताना मारते रहे हैं और आज रोचना और बधाव भेज दिया | पर कोई माँ अपनी बेटी अपनी संतान को निःसंतान कैसे देख सकती है ? बेटी के पुत्र प्राप्ति के सुख के आगे एक माँ को और सब बातों की सुध कहां, उसे समाज के कुचालों का ध्यान कहां, उसे उचित अनुचित भान कहां ? वह जाकर चौसर खेल रहे अपने पुत्र से कहती कि बेटा, इस खेल के आगे तुम अपनी दुलारी बहन को भूल गए ? तुम्हारी बहन को बालक हुआ है, जाओ बहन के लिए छठी पुजाई का समान और चूनर ले जाओ | इधर जब बहन को पता चलता है कि उसका भाई छठी पुजाई का सामान लेकर आ रहा है तो अचानक उसका स्वप्न टूटता है, वो बुराई से इधर-उधर ताकने लगती है, और उसके हाथ से काठ का बालक गिर जाता है | वह रोने लगती है और सोचती है कि- हे ईश्वर मैंने यह क्या किया आज भरे समाज में मेरे प्यारे भाई और माँ-बाबू का सब उपहास करेंगे | इस स्थिति में उसे कुछ समझ नहीं आता आखिर वो अपना दर्द किससे कहे यहाँ तो अपने ही उसे प्रताड़ित करने वाले हैं | वो मन ही मन सूर्य भगवान की प्रार्थना करने लगती है | हे आदिति- मैंने आपको नित्य अर्घ्य दान किया है | आप सीतलता ओढ़ कर पूर्व से पश्चिम की यात्रा कर ले इसलिए जल चढ़ाया है | मैंने आप से आज तक कुछ नहीं माँगा आज मेरी पत रखो आदिति आज मेरी पत रखो | आदिति मैं तुम्हारे माँ की तरह ही तुम्हे अर्घ्य चढ़ा कर तुम्हे सीतलता प्रदान की है आज इस संकट की घड़ी में अपने माँ की लाज रखो | बस एक बार आदिति बस एक बार यह काठ का बालक रो दे | इसके आलावा इस जीवन में मैं तुमसे कभी कुछ नहीं मांगूगी | अपने मन से सदा-सदा के लिए पुत्र प्राप्ति की लालसा निकाल दूंगी | हे आदिति , बस एक बार वह काठ का बालक रो पड़े | और इधर भाई ने दालान में कदम रखा, उसे गोंद में लिया और जैसे ही उसने बालक के मुख से चादर हटाई काठ का बालक रो पड़ा | बहन आदिति का ध्यान करती रही और बालक रोता रहा | भाई उसे चुप कराने के उपक्रम करता रहा लेकिन बालक चुप होने का नाम ही न ले | पूरा गाँव यह दृश्य देख भौचक था, आज सब काठ हो गए | बस तीन जीवों में ही संवेदना बची थी | भाई, बहन और काठ का बालक | बहू रोती रही और कहती रही हे आदिति, आज मैं भी जी भर के रोई अब मुझे जीवन का कोई और कष्ट नहीं रुला सकता | मैं सदा-सदा के लिए काठ हो जाती हूं | न कोई लालसा न कोई उम्मीद | आत्मा को झिंझोड़ देने वाला, व्यथित कर देने वाला यह सोहर गीत लाखों लाख ज़बानों से होकर हम तक

पहुचा है | जाने कितने भाव, कितने अर्थ हैं और कितनी ललनाओं अनकही अंतर कहानिया इसमे छुपी होंगी |

कुछ जन्म संस्कार गीत -:

ननदी पोथिया मोर बाँचे अउ कंस का बतामइ हो
राजा देबकी के भये हाँ गरभबा देबकी पूत मारेऽ हो
नउ मन लोहा चुनउबइ चकरी बनउबइ हो
अब देबकी से कोदउ दरउबइ गरभ गिरबउबइ हो
नउ मन लोहबा गलउबइ गगरी बनबउबइ हो
अब देबकी से पनिया भरउबइ गरभ गिरबउबइ हो
पनिया भरन गई देबकी ता बइठीं करारे चढ़ि हो
अब देबकी के रोये ता ललनबा जमुना बढ़ी आमा हो
बनबा से निकली जसोदा देबकी समुझाबाँ हो
बहिनी कउन दुःख राम तोंहका डारे कारन कइ रोइउ हो
बहिनी सासु-ससुर दुःख तौरे कि नइहरे बसइ दूर हो
बहिनी की तोर कंत बिदेस कउन दुःख रोइउ हो
बहिनी सासु-ससुर दुःख नाही न नइहरबा दूर बसइ हो
अब न मोर कंत बिदेस कोखिया दुःख रोयेऽन हो
सात होरिल राम दिहिन ता सातउ कंस मारिस हो
बहिनी अठमे गरभ अउतार इहउ कंस मरिहीं हो
सनका न रोबा मोर बहिनी न रोइ-रोइ मन मारा हो
देबकी अपन ललन हम देब तोंहर लइ अउबइ हो
नोनबा ता मिलइ उधार अउ तेलबा उधार मिलइ हो
बहिनी कोखिया के कउन उधार रमइया हमसे रूठे करम मोर रूठि गयें हो
बहिनी तोर कोखि मोर कोखि होइहीं जतन कउन करबू हो
बहिनी कंस जो मारी ललनबा पाप कहाँ धरबइ हो

राजा दुआरे ठाड़ि रनिया ता रनिया रुदन करइ हो
राजा मय ता जोगिन होइ जइहउं ता एक ललन बिनु हो
रनिया जो तू जोगिन होइ जाबेऽ जोगिया मय होबइ हो
रनिया दुनउ जने धुनिया रमउबइ ता तीरथ नहाबइ हो
गया जी नहाइन गजाधर अस्नानिन बेनीमाधव हो
राजा एतना तीरथ कइ डारेऽन ललन नहीं पायेऽन हो
चारि चउखण्ड तलरिया तलरिया बीच चंदन बिरिछ हो
अब ओहीं तरी राम जी के आसन ललनबा उरेहइं हो
बोलिया ता बोली भगबान बोलत मा सरम लागइ हो
राम सगले नगरिया पइरी छुनकइ मोर घर सून परा हो
सगले नगर किलकरिया तोहर कउन गति रानी हो

रानी जउन लिखा हइ लिलरबा उहइ गति होइहीं हो

उठतइ रेख मस भीनत रमइया मोर बन चलें हो
मोर बारा बरिसि के उमिरिया कइसे पार लगिहीं हो
का राम तोंहरे महल गये अउ का बिदेस गये हो
कबहूँ हंसि के न पकड़ेऽ अंचरबा न कबहूँ रिसानेऽ हो
लालि चुनरि नहीं पहिरन पियर नहीं छोरेऽन हो
रामा कोखिया न लिहेऽन होरिलबा छठिया नहीं पूजेऽन हो
सोनबा महल भर छोड़ेऽअउ रूपबा अटारी भर हो
अब छोड़ेऽ तू लहरू देबरबा केखर संग बिंहसबेऽ हो
आगी लागइ सोनबा महल भर रूपबा महल भर हो
रामा तोरे बिना सकल धुधुरिया पिया के संग बिंहसब हो

करिया पियरिया बदरिया झिमिक-झिम झिरखइ हो
बदरी जाइके झिरिखा ओहीं देस पिया जी जहाँ बसिगीं हंइ हो
पियबा के आखर-बाखर भींजइ भींजइ तमुआ कनात सब हो
अब भितरे से हुलसइ करेजबा समुझि घर आबइं हो
बरहइ बरिस राम लउटें ता बर तरी उतरें हो
ओनखर माया उठी लइ पिढ़बा बहिन गडुआ पनिया हो
मोर पिया पनिया ता पिअइं हाथ-गोड़ धोबइं हो
माया देखेऽन मय कुल परिवार धनिया नहीं देखेऽन हो
लाला तोंहर धनि अंगबा के पातरि मुखबा के सूनरि हो
बहुआ गोड़े-मूड़े ताने पिछउरी अटरिया मा सोबइं हो
खोला न बहुआ कैबरिया सुरुज तपइ लागें हो
बहुआ देखा न तोंहर परदेसिया लउटि घर आयें हो
जवकि किबाड़ धनि खोलइं रमइया दुअरा ठाड़े हंइ हो
रमऊ जनतिउं जो तोंहर अबइया मोरिन बनि नचतिउं हो
रमऊ जब से तू गयेऽ बिदेसबा सेजरिया नहीं दासेऽन हो
अब ससुरू के तपेऽन रसोंइया भुइयां पर सोयेऽन हो
जब से बिदेस गयेऽन धनिया पान नहीं खायेऽन हो
धनिया तोहरइं दरद लइ सोयेऽन तोंहारइ लइ जागेऽन हो
सावन बदरिया चिठिया बांचइ भादउं मन हुलसइ हो
धनिया रतिया नेहिया उमड़ि आबइ जियरा पीऊ-पीऊ बोलइ हो

सुखिया-दुखिया दूनउ बहिनी बधइया लइके आई हो
बीरन तोंहरे भये नंदलालता मन मोर हरसइ हो
सुखिया ता लाई गोड़हरा अउ दुखिया दूबि करधन हो
अब बीरन से पूछइं सुखिया हमहि बिदा भेजतेऽ हो
लइलेऽ बहिनी आँचर भर मोतिया अंजुरी भर सोनमा हो

बहिनी पिया चढ़इ का घोड़बा भयन का मिठइया हो
दुखिया बहिन कहइ बीरन बिदा हमहू भेजतेऽ हो
बिरना रोबत होइहइं तोहर भयनबा अकेल कुंदिरबा हो
लइलेऽ बहिनी आँचर भर कोदउ अंजुरी भर सामा हो
बहिनी लइलेऽ उहइ दूबि करधनिया भयन पहिरायेऽ हो
गाउं दुखिया डांकि नहीं पाइन अँचर मोती झरइ लागें हो
अब दूबि करधनिया भइ सोनमा दुखिया भाग फिरिगीं हो
ऊंचे अटरि चढ़ि भउजी बलम गोहरामइं हो
बलमू ननदी रिसाइ चली जात ओन्हइ आनि लाबा हो

बाबा मोर बिअहे राजा घर कि अनधन महल भरा हो
मोर माया न लिहिन खबरिया बीरन नहीं पठइन हो
सासू कहइ तोर माई नहीं ससुर जी कहइं तोर बाबू नहीं हो
अब पिय जी कहइं तोरे बिरना नहीं जउन तोखा आनइ हो
बड़ी गरबीली सुना बहुआ गरब लइके ओढ़ा हो
तोंहरे बिरना जू होतीं माया ता आनय तोखा अउतें हो
एतना बचन सुनि बहुआ सुरुज का मनाबइं हो
सुरुज भइया के होतें नंदलाल ता मोरे घर अउतें हो
होत बिहान भिनसारे होरिलबा जनम लिहिन हो
अब बाजइ लागीं अनद बधइया गाबइं सखि सोहर हो
बाबू मोर गये हाँ बेढ़इत घरे बेसहइ ओन्हा हो
अब माई मोरि पियरी रगामा बीरन लइ के आमा हो
भउजी मोर चाउर पिसामइं ढूढ़ी बधबामइं हो
अब भउजी मोर पुतरी उरेहइं बीरन लइ के आबइं हो
आगे-आगे आबइ कंहरबा ता पीछे घिउ गागर हो
अब ओहीं पाछे भइया असबार बहिन देस आमइ हो
जइसइ दउड़इ गइया बछेरबा का देखि के हो
अब ओइसइ दउड़इ बहिनिया बिरनबा का देखि के हो
का लइ के आयें बीरन सासु का ता का गोतिनी का हो
अब का लइ के आयें भयन का ता का लायें हमका हो
पियरी लइ आयेऽन सासु जी धोतिया गोतिन का हो
अब कड़बा गोड़हरा भयन का बहिनी कुछु नही लायें हो

सोने के खड़उंआ पहिरे राजा दसरथ खुटुर-खुटुर रेंगइं हो
अब गयें रामा बनमा केदलिया कंटबा गोड़े गड़ि गये हो
अरे जी मोर कंटबा निकारी पीरा हरि लेई हो
अब उआ जउन मागी मगनबाउहइ दइ देबइ हो
घरबा से निकली कैकई रानी सोरहउ सिंगार करे हो
राजा हमहिन कंटबा निकलबइ बेदना हरि लेबइ हो

पिया जउन मागन हम मागब उआ मागन दिहे परी हो
अब गोड़बा के कंटबा निकालब पीरा हरि लेबइ हो
रानी जउन मगन तू मगबू उआ हम देबइ हो
अब गोड़बा के कंटबा निकाला पीरा हरि लेतेऽ हो
जउन मगन हम मागब उहइ देहे परी हो
राजा राम–लखन बन जाइं भरत पूत राज करइं हो
मागेऽ ता केकई रानी मागइ नहीं जानिउ हो
केकए मागि लिहिउ मोर परानमागन के आड़े हो
जउन राम चित नही उतरइं पलक नही बिसरइं हो
अब उहइ राम बन चले जइहीं जियब कइसे रनिया हो

ऋतु गीतों में नाटकीय तत्व –:

सावन का मनभावन महीना और कजरी (कजली)एक दूसरे के पूरक हैं , सावन लके गीत वर्ष भर याद नहीं आते लेकिन जैसे ही काले-काले बादल घिर आते हैं सारे विस्मृत गीत और गायकी याद आ जाती है | कितना अनोखा मनोविज्ञान है यह ? इन तीन सालों में मैंने लगभग 530 ऋतू गीतों का संग्रह किया जिसमे से 150 के आस-पास वर्षा ऋतू गीत कजली, हिंदुली, बारहमासा और बाकी के कार्तिक स्नान, फाग और चैता के संग्रह हैं |सावन, झूला और कजरी को समवेत रूप में समझना है, पावस के साथ इनके अंतस्संबंधो को अनुभूत करना है तो वानांचल की ओर चले आइये | दादुर , मोर, पपीहा और इस मास का ग्राम्य जनजीवन खेतों में निरवाही करते कजली, हिंदुली का श्रम में लीन माधुर्य, तरुनिओं के झूले, हिंडोले गीत, नाव खेते नाविकों की ऊँची और लम्बी तान जो नदी के दोनों पाटो को अनंत में कंही समेत रही है | रिमझिम बारिश में आँगन से लेकर ऊंचे पर्वतों तक पसरी एकचक हरियाली में डूबा यह संसार कोई और ही लोक है |

मानव जीवन एवं उसके क्रिया कलाप के अंतर्गत ऋतुओं का विशेष महत्त्व है | भारत एक ऐसा देश है जंहा ऋतुएं भी सामान काल से होती हैं | यद्यपि परम्परा में छः ऋतुएं मानी जाती हैं , पर उत्तरी भारत में चार ऋतुएं प्रधान है–वर्षा, शरद, बसंत और ग्रीष्म | प्रकृति, मानव जीवन के दैनिक क्रियाकलाप, रीति-रिवाज, परम्पराएँ, यंहा तक सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति ऋतुओं के अनुसार और आधार पर विभाजित है, प्रवाहमान है |लोक साहित्य में ऋतुओं और ऋतू गीतों की सुन्दर रचनाये हैं जो अपने उर में अनगिनत कालों का बोध समेटे हमारे जीवन का अभिन्न अंग बनी हुई हैं | ग्राम्य संस्कृति तो इनके बिना मृत प्रायः है | लोक साहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है। लोक-साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव, इसलिए उसमें जन-जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति का एक-एक अंश समाहित रहता है | लोक अहंकार से शून्य है और एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है और यही कारण है कि लोक हर काल में सजग और परिवर्तन शील है | लोक ऐसी परम्परा का निर्वहन करता है जो खुद पर भी सवाल खड़े करने से तनिक नहीं हिचकिचाती | साधारण जनता से संबंधित साहित्य को लोकसाहित्य कहना चाहिए । साधारण जनजीवन विशिष्ट जीवन से भिन्न होता है अत: जनसाहित्य

(लोकसाहित्य) का आदर्श विशिष्ट साहित्य से पृथक् होता है। किसी देश अथवा क्षेत्र का लोकसाहित्य वहाँ की आदिकाल से लेकर वर्तमान तक की उन सभी प्रवृत्तियों का प्रतीक होता है जो साधारण जनस्वभाव के अंतर्गत आती हैं। इस साहित्य में जनजीवन की सभी प्रकार की भावनाएँ बिना किसी कृत्रिमता के समाई रहती हैं। अत: यदि कहीं की समूची संस्कृति का अध्ययन करना हो तो वहाँ के लोकसाहित्य का विशेष अवलोकन करना पड़ेगा। लोक जीवन की जैसी सरलतम, नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोकगीतों व लोक-कथाओं में मिलता है, वैसा अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है। लोक-साहित्य में लोक-मानव का हृदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती-गुनगुनाती है। लोक-साहित्य में निहित सौंदर्य का मूल्यांकन सर्वथा अनुभूतिजन्य है। लोकगीतों कि रचना के सम्बन्ध में लोगों का मत है कि इसकी रचना जनसमुदाय करता है लेकिन ऐसा तो हो ही नहीं सकता की गीतों की रचना के लिए जन समुदाय इकट्ठा हो और रचना करे | अनुभव की बात करे, मानव मन की बात करे तो सहज मानव प्रविति है कि अत्यंत दुःख हो या सुख मानव मन की मनः स्थिती शब्दों में बयां हो जाती है | लोक गीत तो बाद में बने पहले तो वो मानव मन की सहज भावना रहीं होंगी और एक गीत का कोई एक ही रचनाकार हुआ होगा | कालांतर में इन्हें गाने वाले ज़रूर जन समुदाय के हुए | समुदाय रचना के सम्बन्ध में नृत्य गीत माने जा सकते हैं | आइये ऐसे ही अहंकार शून्य, सहज, सरल और दुनिया के उत्कृष्ट विज्ञान की एक झलक हम भारतीय मूल की संस्कृति के ऋतू गीतों कजरी और हिंदुली में जांचते हैं | वर्ष में आने वाले विभिन्न ऋतुओं में जो गीत गाये जाते हैं उन्हें ऋतू गीत कहा जाता है | बघेलखंड में चार ऋतुओं के आधार पर कजरी, हिंदुली (निरवाही गीत), सुआ-रीना, चैता, होली गीत (फाग, कबीर), बारहमासा आदि गीत गाने की परम्परा है | **वर्षा ऋतू प्रेम, उल्लास, उछाह साथ ही करुणा की अभिव्यक्ति की ऋतू है** | बारिश की पहली बूँद प्यासी धरती के हिय में सुप्त अवस्था में पड़े प्रेम को और बढ़ा देती है, मिटटी की सोंधी महक मानो अपने प्रियतमा बादलो से बारिश रूपी प्रेम को सम्पूर्णता से उड़ेल देने की गुहार लगा रही हों कुछ इसी तरह की भावना बघेली कजरी गीतों में पायी जाती है | ये गीत संयोग श्रृंगार से लबालब भरे होते हैं ,इसमें डूब भी जाए तब भी प्यास नहीं बुझती | सावन के मनमोहक महीने में जो गीत गाये जाते हैं उन्हें कजरी कहते हैं | कजरी शब्द काजर से बना है | बघेली में काजल को काजर कहते हैं | कजरी का अभिप्राय यंहा काजल की तरह घिरे काले-काले बदलो से हैं | कजली का तात्पर्य कजली वन (केदली वन) से भी हो सकता है क्यों की बघेलखंड के सैकड़ो लोक गीतों में केदली वन शब्द सुनने को मिलता है | केदली वन का उल्लेख महाभारत में भी है | दरअसल बघेलखंड में कजरी गीत गायकी के साथ कजली उत्सव मनाने की भी समृद्ध परम्परा है जिसे खजुलइयाँ या **कजलियाँ** कहा जाता है | कजलियाँ उत्सव के सात दिन पहले जौ बोया जाता है और उत्सव के दिन इसे प्रवाहित करने पास के तालाब या नदी में ले जाया जाता है | इस उत्सव में नव विवाहिता अपने ससुराल से मायके आती हैं और इस उत्सव में प्रमुखता से भाग लेती हैं | जौ प्रवाहित करने के बाद सब लोग थोड़ा-थोड़ा जौ रख लेते हैं और भी अपने सगी संबंधियों को थोड़ा-थोड़ा देकर यह कर के गले मिलते हैं कि –" ऐसा दोस्त, भाई, पत्नी हर जनम में मिले | कजरी गीतों के विज्ञान की बात करे तो इन गीतों के गाने का तभी मज़ा है जब काली-कली घनघोर घटाएं पहाडो तक उतर आयें और झमझमाती हुई बारिश अपना तानपूरा छेड़ दे तब बारिश की बूंदों और बिजली के कड़क के बीच कजरी की गायकी अपने परवान पर होती है | मुझे याद है की जब मैं गर्मी के दिनों में कजरी सुना देने की बात ग्राम्य कलाकारों से कहता था

तब उन्हें कजरी याद ही नहीं आती थी वो कहती थीं कि " नहीं सुधि आबय लाला बिना समउ के गीत, अषाढ़ मा अया तब बताउब" यानी की बिना मौसम के गीत याद नहीं आते और यह सच है कि जैसे ही जिस गीत का मौसम आता है वो गीत एक-दो नहीं दर्जनों याद आ जाते हैं ऐसा मेरे साथ भी होता है | एक और बात की भादवं मास की काली अंधियारी रात जब अपना हाथ पसारो (फैलाओ) तो अपने को ही नहीं दिखता तो इन दिनों गाँव के लोग सर्प, बिच्छुओं के भय से रात्रि के 7 बजे तक बियारी (रात्रि का भोजन) कर लेते हैं | बियारी करके खाट पर तो बैठ गए पर समय काटे नहीं कटता ऐसे में शुरू होती है कजरी | इस अवस्था में गाई जाने वाली कजरियां बड़े-बड़े कथानको वाली होती हैं | बघेलखंड में ऐसे बड़े और करुण रस प्रधान कथानको वाली कजरियां दर्जनों की संख्या में आज भी मौखिक परम्परा में प्रवाहमान है जिनके श्रवण का हम सहज ही आनद ग्राम्य जीवन में पा सकते हैं | बघेलखंड में बरसात के मौसम में एक और वेदना पूर्ण गीत गाया जाता है जिसे **हिंदुली** कहते हैं | वर्ण विषय की दृष्टि से इन दोनों प्रकार के गीतों में कोई विशेष अंतर नहीं है , क्योंकि दोनों में संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार की प्रधानता पायी जाती है | कजरी संयोग श्रृंगार का उत्कृष्ट उदाहरण है तो हिंदुली वियोग श्रृंगार का | हिंदुली गायकी की परम्परागत विशेषता की बात की जाय तो यह निरवाही गीत की श्रेणी में आती है | यह ज्यादातर रोपनी, निरवाही करते हुए गाई जाती हैं | हिंदुली गायकी का यह समय बड़ा रमणीय होता है | रिमझिम करती बारिश हो और खुले आसमान के नीचे सैकड़ो की संख्या में निरवाह (निगाई करने वाला) निराई करते हुए सवाल-ज़वाब की शैली में हिंदुली गीत गा रहे हों | कभी-कभी तो एक खेत से पुरुष वर्ग गीत का एक पद गा रहा होता है और दूसरे खेत में निरवाही कर रही महिलाए गीत का दूसरा पद गाती हैं | गीत की मधुरता में शरीर कि थकान अपने दम तोड़ देती है और निरवाह की दिनचर्या में अंतर नहीं आने देती, प्रकृति के साथ-साथ चलने वाली उनकी समय सारणी उनके अंतिम सांस तक जाती है | इन गीतों में सरसता, मनोरमता और मधुरता का वो सामंजस्य देखने को मिलता है जो अन्य गीतों में नहीं | सावन के महीने में हरियाली आँगन से लेकर सूदूर ऊंचे-ऊंचे पर्वतो तक छाई है, पर्वत प्रदेश की रमणीयता सहज ही मन को बाँध लेती है | सावन महीना क्या है, अगर ठीक तरह जानना है तो आइये गाँव की ओर चलते हैं जंहा आज भी पीपल, आम, नीम, बरगद, महुये के पेड़ पर हिंडोले मिलेंगे जिन पर तरुणिया कजरी गाती हुई झूल रही हैं | तरुणियो के कोकिल कंठ से जब कजरी के बोल फूटते हैं तो सारा वातावरण कुछ ऐसी माधुर्यता में लीन है कि जिसकी तुलना नहीं, उदाहरण नहीं | कजरी वर्षा गीत का वर्ण विषय संयोग श्रृंगार है | इससे बेहतर प्रेम का उदाहरण अन्यत्र नहीं प्रियतम प्रेम की यह बानगी देखिये..

भइया मोर आये अनबइबा सबनबा मा न जाबय ननदी

सोने के लोटा गंगा जल पानी, चाहे भैया घूंट्य चाहे जांय हो

सबनबा मा न जाबय ननदी...

सोने के थारी मा जेमना परोसेऊ चाहे भैया जेमय चाहे जांय हो

सबनबा मा न जाबय ननदी..

नवविवाहिता नायिका अपने प्रियतम के प्रेम में इस तरह लीन है की मायके से उसका भैया कजली के लिए बुलाने आया है लेकिन वो प्रियतम को छोड़ कर नहीं जाना चाहती और अपनी ननद से कहती है कि- ननद मेरे बीरन मुझे बुलाने आये हैं लेकिन मैं मायके नहीं जाउंगी | सोने के लोटा में में मैंने अपने प्रिय भाई के लिए गंगा का पवित्र जल रखा है , भैया की मर्जी की वो पानी पियें या न पियें लेकिन मैं मायके नहीं जाउंगी | सोने के थाली में मैंने भैया के लिए जेमन परोस कर रखा है, उनकी मर्जी वो खाएं चाहे चले जाएँ लेकिन मैं अपने प्रियतम को छोड़ कर नहीं जाउंगी | यंहा बहन के लिए उसका भाई भी प्रिय है पर सावन के महीने में वो प्रियतम से प्रीति छुडाकर किसी भी कीमत पर जाने को तैयार नहीं है |

ये पंक्तियाँ भी देखें...

हरी रामा बगिया माँ आयें मोरे श्याम देखन

देखन हम जाबय रे हारी

हरी रामा बगिया मा नवरंग झूला पड़े हां

हरी रामा झूलय सखिया सलेहर गामय कजरी रे हारी

नवविवाहिता ससुराल से सावन के महीने में अपने मायके आयी है और मां से कहती है कि मां बाग़ में श्री कृष्ण आये हुए है मै उन्हें देखने के लिए जाउंगी | मां बाग़ में तरह-तरह के झूले पड़े हुए हैं और मेरी सारी संखिया उन पर कजरी गाते हुए झूल रही हैं, मेरा मन नहीं मानता मै भी झूलना चाहती हूँ | इस गीत में तरुणी कि अल्हड़ता और बेबकापन साफ़ नज़र आता है | वो पहले की ही तरह दौड़ते-भागते बाग़ में पहुँच जाना चाहती है लेकिन समाज एक विवाहिता को वही स्वछंदता कंहा देता है |

विरहणी का विरह इस हिंदुली में कैसे प्रकट हुआ है कि-

अइसन माया फंसाया हो कंधइया हिअय से राखा न

मोर दुखी के पिरितिया हिअय से राखा न

जइसय तलाये के पुरइन हलरय ओईसय हलरय न

मोर दुखी के पिरितिया हिअय से राखा न

जइसय करहिया के घिउना बरत हय ओईसय बरय न

मोर दुखी के पिरितिया हिअय से राखा न

विरहणी अपने प्रेमी से निवेदन करती है कि –"प्रिये, मैं तुम्हारे प्रेम में अपना घर-परिवार सब छोड़कर चली आयी थी, तुम्हे मुझको अपने हदय से लगा के रखना चाहिए था क्योंकि आत्मीय जनों को त्यागकर मैं अकेली और बहुत दुखी हो गई हूँ पर तुमने मुझे अकेला छोड़ दिया | प्रिये जिस तरह तालाब में पुरइन

(जलकुम्भ) बिना हवा के भी हिलती रहती है | हर वक़्त उसमे एक कम्पन मौजूद रहता है उसी तरह मेरे हदय में हर क्षण तुम्हारे याद का दर्द कांपता है | प्रिये जिस तरह आग पर रखी हुई कड़ाही का घी जलता है उसी तरह हल पल मेरा हदय भी तुम्हारी याद में जल रहा है |" इस गीत में जिस कोटि की उपमा का प्रयोग किया गया है वो हमे भारतीय लिखित साहित्य में नहीं मिलता | पुरइन के पत्ते की तरह बिना किसी हवा के भी मन के अन्दर बैठा बिरह का पत्ता कांपता रहता है | यह कितनी सहज और अनुभव पूर्ण उपमा है जो लोकगीतों में ही सुनी जा सकती है अन्यत्र नहीं |

सावन आते ही तरुणी को अपने मायके की याद आ रही है और वो अपने सास से कहती है कि-

तिजबा कजरिया के आबा रे महिनबा चले हो जाबय न

सासू अपने नइहरबा चले हो जाबय न

कइसे जाबू बउहर तू अपने नइहरबा नहीं हो आये न

तोंहर बीरन अनबइअबा नहीं हो आये न

आजु एकादसिया काल्हिन दुआदसिया परउ हो अइही न

मोर भइया अनबइअबा परउ हो अइही न

कइसे जाबू बउहर तू अपने नइहरबा बाढ़ी हो आयी न

गंगा जमुना के धरिया लीलि हो लेइही न

नवविवाहिता अपने सास से कहती है कि- सास रानी ! मेरे भाई मुझे लिबाने के लिए आ रहे हैं मैं उनके साथ अपने नइहर को जाउंगी | सास कहती है कि- बहू ! तुम कैसे नइहर जाओगी तुम्हारे बीरन भाई तो तुम्हे बुलाने ही नहीं आये | सास रानी ! आज एकादशी है और कला दुआदशी परशो त्रयोदशी है तो परसों मेरे बीरन मुझे बुलाने आयेंगे | सास चाहती है की बहू मायके न जाए तब वो बहाना बनाती है कि- बहू गंगा और जमुना दोनों में बाढ़ आ गई है तो तुम पार न जा पाओगी | अब बहू को मायके की याद आ रही है माया की यादा रही है उसे नइहर जाना ही है तब वो सास से कहती है कि- सासू ! बांस कटा के नाव बनवा लूंगी और उस नाव पर बैठ कर मैं और मेरे वीरान दोनों पार चले जायेंगे |

कजरी गीत में पति-पत्नी के प्रेम पूर्ण नोक-झोंक का अनोखा उदाहरण भी देखने को मिलता है एक कजरी गीत की कुछ ये पंक्तियाँ...

रनिया खोला न केबडिया हम बिदेसबा जाबन न

जो तू पिया बिदेसबा जाबा हमरे बाबुल का हो बोलाय दिहा

हम नइहरबा जाबय न ..

जो तू रनिया बबुल घर जाबू जेतना लागा हय हो रूपइया

ओतना दइके जइहौ न ....

जो तू पिया रूपइया मंगबा जइसय बाबुल के रहा न्हा

ओईसय हमका पठबा न

सावन का मनभावन महीना आ गया है, काफी रात हो चुकी है, नायिका घर में अकेली नायक के आने का इंतज़ार कर रही है | और फक्कड स्वाभाव का नायक इधर अपने साथियो के साथ गप्पे हांक रहा है | देर रात गए जब वो घर का दरवाजा खटखटाता है तो नायिका दरवाजा खोले से इनकार कर देती है और तब रुष्ट नायक अपनी नायिका से कहता है कि –" हे प्रिये अगर तुम दरवाजा नहीं खोलोगी तो तुम्हारी कसम मैं तुमसे दूर बिदेश चला जाउंगा | नायिका कहती है कि ठीक है आपको बिदेश जाना है तो जाइए पर उससे पहले मेरे पिता जी को बुला दीजियेगा मैं अपने मायके चली जाउंगी | प्रिये ! यदि तुम मायके जाना चाहती हो तो जितना रुपया तुम्हारे विवाह में खर्च हुआ है वो सब वापस कर दो | प्रियतम अगर आप मुझसे रुपया मांग रहे है तो मेरी भी एक बात सुन लीजिये जिस तरह मैं अपने पिता के घर से बारी-कुंआरी आयी थी उसी तरह भेजो | अहा ! कितना कडवा सच है इस पंक्ति में कि एक औरत पुरुष के लिए अपना तन-मन सब कुछ अर्पण कर देती है और पुरुष फिर भी पूछता है कि क्या किया है तुमने मेरे लिए ? इस कजरी गीत में पति-पत्नी के प्रेम पूर्ण हास-परिहास, रूठने-मनाने का सुन्दर चित्रण देखने को मिलता है यह गीत 20 पद का है | गीत के अंत में नायक को नायिका की यह बात मान लेनी होती है की अब मैं तुम्हे घर में अकेला छोड़ कर कंही नहीं जाउंगा |

सइयाँ झुकि आयीं कारी हो बदरिया कइसे नोकरिया जाबा न

धनि ! गोड मा जूता हाथे मा छतबा मुख धय लेब रुमलिया न

धनि ! तरी बहय निरिया ऊपर उडय धुँअना बीचे चलय जहजिया न

राजा निरमोही बने हां बिदेसिया रेन पियासी कइसे कटिही न

सावन का मनभावन महीना आ गया है नायिका अपने पति से कहती है की प्रिय कारे-करे बादलो ने धरती को चारो तरफ से ढँक लिया है जल्दी ही घनघोर बारिश होने वाली है, ऐसे में आप नौकरी के लिए कैसे जायेंगे | तब नायक कहता है कि- पैर में जूता पहन लूंगा , हाथ में बारिश से बचने के लिए छाता ले लूंगा और मुख पर रुमाल रख कर चला जाउंगा | प्रिये ! जंहा मैं जा रहा हूँ वंहा नीचे-नीचे पानी बहता है , ऊपर धुंआ निकलता और बीच में जहाज चलती है उसी पर सवार होकर मैं नौकरी के लिए चला जाउंगा | नायिका तो किसी कारण नायक को सावन के मन भावन महीने में अपने से दूर नहीं करना चाहती इसलिए वो तरह-तरह की समस्याएं सुनाती है | लेकिन गरीब पति पत्नी के विनय को ठुकराकर रोज़गार की तलाश में दूर देश को चला जाता है |

ए बानगी भी देखिये जंहा बेटी अपने पिता से फूल रोपने के बारे में सलाह लेती है- कहमा लागाई बाबू बेला हो चमेलिया पय कहमा लगाई लाल गेंदबउ हो न

दुअरा लगाबा धेरिया बेला हो चमेलिया पय अंगना लगाबा लाल गेंदबउ हो न

काहे से सींची बाबू बेला हो चमेलिया पय पय काहे से सींची लाल गेंदबउ हो न
गंगा जल सींचा बेटी बेला हो चमेलिया पय दुधबा से सींचा लाल गेंदबउ हो न

कजरी, हिंदुली बघेलखंड की उत्तम भावनाओं और सामाजिक चित्रों से युक्त है , नारियों की भावनाए इन गीतों में मुखर हो उठती हैं | कजरी, हिंदुली के कुल 150 संकलन मैंने किये जिसमे संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार के साथ-साथ नव विवाहिता के नइहर जाने की पीड़ा, भाई प्रेम, पावस ऋतू की सुंदरता, इतिहास के उत्थान-पतन एवं घटनाओं के चित्र, अबोध बालाओं के अपहरण की कथाएं, राजा के क्रूरतम अत्याचार आदि के कथानक मिले हैं , और इस तरह इतिहास, दर्शन, भावनाअभिव्यक्ति एवं सामाजिक-सांस्कृतिक स्वारूपो के अध्ययन की दृष्टिकोण से इन गीतों की व्यापक महत्ता है | कजरी, हिंदुली और बारहमासा को मिलाकर अब तक मुझे 7 अलग-अलग धुनें प्राप्त हुई हैं जिनमे सैकड़ो गीतो की रचना की गई है | आज बदलते परिवेश ने इन गीतों को इनकी वास्तविक और वैज्ञानिक आधारशिला से उखाड़ फेंक दिया है | ये गीत जिस माधुर्य की पहचान थे वो जाती रही हैं | जिस ग्राम्य संस्कृति में हमे इन गीतों के सुरक्षित होने का गुमान है, अब वंहा भी दिन बा दिन एक अजीब सी खामोशी पसर रही है |

चंदैनी गाथा गायकों के गाँव -:

ग्राम रामपुर -: चदैनी गाथा गायन के लिए सीधी ,बघेलखंड ही नहीं सम्पूर्ण मध्य प्रदेश में जाना जाने वाला यह ग्राम जिसे कला रूपों से सम्बन्ध रखने वाले तमाम लोग जानते होंगे |यह गाथा गायन परम्परा आज भी मध्य प्रदेश के ग्रामों में बड़ी सक्रिय रूप से प्रचलन में है | सीधी से ६ किलोमीटर की दूरी पर रामपुर सीधी मझौली रोड पर स्थित यह ग्राम करीब २००० की आबादी वाला है | यंहा अहीर जाति के अलावा कोल, चमार,ब्राम्हणआदि जाति निवास करती है जिसमे से अहीर समुदाय की कुल जनसंख्या १४५ है | इस समुदाय की जातिगत कला रूप के २ कलाकारों को छोड़ दे तो पूरे समुदाय से यह गायन परम्परा पूर्ण रूपेण खत्म हो चुकी है | विलुप्तता की कगार पर यह गायन परम्परा आज भी इसी ग्राम के कुछ सयाने कलाकारों के नेतृत्व में पूरे देश में प्रस्तुत हो रही हैं | गाँव की महिलायें इस गाथा गायन परम्परा के लोक प्रसिद्ध और रास्ट्रीय स्तर पर भी प्रस्तुति देने वाले कलाकर हैं | ऊबड़-खाबड़ भूमि पर बसे इस ग्राम की कुल आबादी कृषि से ही अपना जीवन यापन करती है और कोई दूसरा माध्यम नहीं है, साधन नहीं है | अहीर जाति भी अब अपनी पारम्परिक कला रूप को छोड़ मेहनत मजदूरी कर अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं |

ग्राम लकोड़ा-: बघेलखंड में आहीरो के निवास स्थान वाले लगभग २०० ग्राम हैं | अहीर जाति के लोग दूर-दराज के गाँवों व सीमावर्ती राज्यों में चदैनी गाथा गायन के लोग अपनी पारम्परिक प्रस्तुती के लिए जाने जाते हैं | वैसे ये ग्राम लोक में जाने जाते हैं लेकिन मंचीय कार्यक्रम न हो पाने के कारण इनका राज्यीय स्तर पर कोई छवि नहीं बन पायी है | लेकिन इस ग्राम मे आज भी इस कलारूप के अच्छे जानकार व कलाकार निवासरत हैं जो अपनी परम्परा को ओढ़ते-बिछाते हैं | यह ग्राम सीधी से १५ किलोमीटर की दूरी पर सीधी मऊगंज रोड पर बसा है, जिसकी कुल मानक आबादी २३०० है और अहीर जाती समूह के लोग करीब 100 के आस-पास है | जिसमे से कुल २० लोग ही इस गायन परम्परा के संवाहक रूप में कार्य कर रहे हैं | भौगोलिक दृष्टी से यंहा की समतल ज़मीन है साथ ही गाँव का आधा भाग पहाडो पर भी बसा है जो की अच्छी उपज की नहीं है | इस क्षेत्र का प्रमुख व्यवसाय ,जीवन यापन का साधन कृषि कार्य ही है |

ग्राम सिरसी -: यह ग्राम बरमबाबा देवसर रोड पर स्थित है | यह सीधी मुख्यालय से ४५ किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी भूमि पर बसा हुआ है | इस गाँव की कुल अबादी १८०० की है | यंहा अहीर के आलावा गड़रियो ब्राम्हणों की भी बस्तियां हैं | इस गाँव के अहीर जाती के लोगों का मुख्य कार्य कृषि है और उनका जीवन यापन भी कृषि व मजदूरी से चलता है | इस गाँव ने एक ऐसे सख्सियत को जना है जिसे अहीरों की तमाम लगभग ११गाथाएँ व गायन की दर्जनों शैलियाँ मुहजवानी याद हैं जिसकेअंतर्गत हज़ारों गीत गाये जाते हैं | लेकिन दुर्भाग्य का बात है की आज तक किसी ने उनसे बाकायदा इन कलारूपो का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया | ग्राम सिरसी में इन्हें आल्हा बाबा के नाम से लोग जानते हैं | मैं भी इनसे पहली बार ऐसे ही मिला था लेकिन बाद में उनकी याददास्त और लोक ज्ञान ने अचंभित कर दिया | तब से मैं उनके पास हमेशा परम्पराओं के संरक्षण के सम्बन्ध में कार्यक्रमों की बात करने जाता हूँ और वो आते भी हैं | हमने उनकी मौखिक परम्परा के गीतों को बहुत कुछ संकलित भी किया है जो की शीघ्र ही प्रकाशित होंगी |

ग्राम खोखरा-: यह ग्राम सीधी से हिनौता बरचर रोड पर स्थित है, जो सीधी से करीब ७० किलोमीटर कि दूरी पर स्थित है | इस ग्राम की कुल मानक आबादी २३०० है जंहा अहीर के आलावा पिछड़े वर्ग की जातियां व अन्य आदिवासी जातिया जैसे पनिका भी निवास करती है | इस गाँव में अहीर जाति की कुल संख्या ७०० एवं पारम्परिक कला रूप के प्रदर्शन करने वालो की संख्या ५० है | यह गाँव दो भाइयो की चदैनी गाथा गायन परम्परा के लिए जाना जाता है | इन दोनों भाई करीब ७० वर्षो से इस गाथा गायन परम्परा का गायन कर रहे हैं | उनकी उम्र अब इस समय करीब ९९ के आस-पास है | अब उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहती लेकिन अब भी वो अपनी परम्परा का निर्वहन करते हैं और बड़े स्वाभिमान के साथ अपने को प्रस्तुत करते हैं | उन्हें आज के जनजीवन से चिढ होती हैं वो कहते हैं की अब वो समाज न रहा और न ही वो लोग | अपने दिनों की बात करते हुए वो कहते हैं की हमारे ज़माने में जब शादी व्याह होते थे तो हम लहकौर, अहिराई और लहलेंदबा की गायकी करते थे | सामाज के सभी लोगो की चाहे वो नर्तक गायक हो या दर्शक बराबर की भागीदारी हुआ करती थी | लेकिन अब न वो गायकी बची गायक नर्तक न रहे तो उस तरह का समाज कैसे निर्मित हों |

ग्राम कोल्हुआ- इस ग्राम में बिरहा अहीरों की कथा गायकी के गाने वालो की कुल संख्या ११हैं | व अहीरों की कुल आबादी २०० के आस-पास हैं |

ग्राम खिरखोरी -: यह ग्राम सीधी मुख्यालय से २५ किलोमीटर की दूरी पर चौफाल सेमरिया रोड पर स्थित हैं | इस ग्राम में अहीरों के कुल ५० घर के ५०० लोग निवासरत हैं | जिसमे से बिरहा गाने वालों की संख्या १५० के आस-पास व गाथा गायन के 4 कलाकार ही हैं |

ग्राम भेलकी-: इस ग्राम में अहीरो की कुल जनसंख्या ५०० है जिसमे से गाथा गाने वालो की कुल संख्या 3 है जबकि बिरहा गायकों कि संख्या २०० के आस-पास है जिसमे महिला और पुरुष समवेत रूप से शामिल हैं |

ग्राम पटेहरा-: सीधी से १२ किलोमीटर की दूरी पर रामपुर बंजारी रोड पर स्थित इस ग्राम की कुल मानक आबादी २४०० है एवं यंहा निवासरत अहीर जाति की कुल संख्या १५०० है, जिसमे की अहीर गाथा गायन परम्परा को प्रस्तुत करने वालो कलाकारों की कुल संख्या २४ है | यह ग्राम चदैनी गाथा गायन परम्परा के लिए राज्यीय स्तर पर नहीं जाना जाता और न ही यंहा के कलाकारों को अब तक मंच प्रदान हुआ है | भटहा ग्राम में चंदैनी गाथा गायन को प्रस्तुत करने वाले बड़े ही बुजुर्ग कलाकार हैं जो की इसके इतिहास के सम्बन्ध में काफी कुछ जानते हैं जिनके कारण हमें नयी दृष्टी मिल सकी | और हम इस परम्परा के और लोगो को तलाशने में कामयाब रहे | रोजी-रोटी की तलाश में शहरों का रुख कर रही यह जाति त्वरित गति से अपनी सांस्कृतिक परम्परा और सामाजिक ढाँचे को खोता जा रहा है जो की इस परम्परा की देन रही है | अगामी कुछ ही सालो में यह कलारूप विलुप्त हो जाएगा | बघेलखण्ड की गाथा गायन परंपराओ में प्रमुख गाथा परंपरा है चदैनी गायन | यह एक जाति विशेष "यादव द्वारा गायी जाती है जो बघेलखण्ड के लगभग ३०० ग्रामो में निवासरत हैं |

यादवों के अन्य ग्राम -: पनमार, पडखुरी, बोकरो, बेलदह, भोल्गढ़, सुकबारी,पडैनिया, भदौरा, छुही-पोंडी, ताला, खरहटा, पडरी, सतनरा, बहेरा, करहिया, मलिखम, कुचवाही, हत्था-बघवार, बढौरा, हडबड़ो, कोठार, कुडिया पडखुरी, मडवा, करनपुर,कठार, सेमरिया, सेमरिया-पोंडी, धनहा, मधुगांव, सुलवार, सरदा-पटेहरा, सोनतीर-पटेहरा, बघऊं, मवई, छाबारी, चुआही, बंजारी-चुआही, करमाई, सलइंहा, जोबा, बारी, बभनी, छिउलहा, कमचढ़,कोचिटा, भरुही, ढाबा, कोठदर, तरिहा, घोघरा, हटबा, परसवार, डढ़िया, मयापुरा, पतुलखी, रामडीह, बरमबाबा , पोडरिया, करदा, टेट- पथरा, अमल्कपुर, कोचिला, बहेराडाबर, देवादांड,कठौली, बैंरिहा, बंदरिहा, हिनौती, अमिरती, सुपेला, देवगांव, नकझर, अमरहबा, कुरेंडी, बारी-पान, बढ़ौना, तिमसी, परसिदी, चमरौंही, तितली, दुधमनिया, गेरुआ, बहया, चित्बरिया, केशौली, भनमारी, मुरमानी, सिहौलिया, गडबा, चिलमा, जेठुला, बकबा, सिलबार, कोटा, भैंसा डोल, मेढकी, कुदरिया, खमचौरा, डीम आदि |

चंदैनी गाथा के सम्बंधित क्षेत्र का परिचय -:

बघेलखंड अंचल अपनी लोक संस्कृति के लिए प्रदेश में ही नहीं बल्कि देश में अपनी एक विशिष्ट पहचान और प्रतिष्ठा रखता है | विन्ध्य और रेवांचल के नाम से प्रसिद्ध यंहा की धरती की लोक संस्कृति परिवेश के लिए ख्यात है | और अब सीधी रंगमंच परिवार के सहयोग और अथक प्रयासों से बघेलखंड की लोक कलाएं आज पूरे भारत वर्ष के सांस्कृतिक मंचो पर प्रस्तुत हो रही हैं, प्रसारित हो रही है |तेरह हज़ार वर्ग मील में फैले बघेलखंड के भूखंड में यंहा के लोगो की एक विशिष्ट जीवन शैली है | इस क्षेत्र की अपनी बोली है | बघेलखंड के इतिहास का पल्लवन वैदिक सभ्यता और संस्कृति से हुआ है | भृगु पुत्र शुक्र दत्य याजक था | शुक्र की पुत्री देवयानी ययाति को व्याही थीं | देवयानी से यदु और तुर्वशु दो पुत्र पैदा हुए | जीवन के अंतिम पड़ाव में ययाति ने अपना राज्य पुत्रो के बीच बांटकर भृगु श्रिंग पर तपस्या करने चले गए | महाराज ययाति चौदह द्वीपों के स्वामी थे | उन्होंने अपना राज्य इस प्रकार अपने पुत्रो में बाँट दिया दक्षिण पूर्व के राज्य का भाग तुर्वशु को दिया | यंहा आज कल रीवा रियासत है | बघेलखंड और रीवा

रियासत परस्पर पर्यायवाची से हैं |शिव संहिता में इस भूखंड का उल्लेख वरुणाचल नाम से है | इसे शेषावतार लक्ष्मण की राजधानी माना गया है | इस अंचल में लक्ष्मण की उपासना लोकप्रिय है | सीधी-शहडोल के गोंड आदिवासियों में लक्ष्मिन जती का कथानक बहुप्रचलित है | वनवास काल में इस अंचल में राम, लक्ष्मण और सीता को कुछ काल के लिए निवास करना पडा था | इन्द्रकामिनी नमक अप्सरा ने लक्ष्मण का व्रत भंग करने का छल किया | उसने लक्ष्मण के बिस्तर पर अपना कर्णभूषण डाल दिया | फिर शक वश कर्णभूषण की पड़ताल की गयी और वह सीता जैसा निकला तब से राम के हदय में सीता और भाई लक्ष्मण के सम्बन्ध को लेकर संदेह पैदा हो गया | और राम ने गोंडो की सहायता से लक्ष्मण को आग में जला दिया पर लक्ष्मण को आग न जला सकी लेकिन तब से दोनों भाइयो में मनमुटाव बना रहा | बघेलखंड एक स्थान्वाची शब्द है | यंहा बघेलो का निरंतर राज्य बने रहने के कारण इस खंड का नाम बघेलखंड हो गया | बघेलखंड के नामकरण के कारण ही इस खंड की बोली बघेली कहलाई | पुराण युग में इस खंड के दो भाग थे एक मेकल प्रदेश तो दूसरा विराट प्रदेश मेकल का वर्णन श्रीमद भागवत गीता में भी है | इस प्रकार पुराण युग के उत्तर और दक्षिण दो भाग उल्लेखित हैं | बागुड़ा के इतिहास में भी इसका उल्लेख मिलता है | जिसमे बैरगा राजा का अनेक गीतों में उल्लेख है |क्रमशः अनेक राजाओं के उत्थान – पतन के बाद १२३३में यंहा बघेलवंश की सत्ता कायम हुई |इस तरह रामायण ,पुराण और इतिहास कि लम्बी अवधि को पार करती हुई इन समस्त घटनाओं और विचारधाराओं यंहा के साहित्य व संस्कृति से लेकर बघेल राजाओं के जीवन का प्रभाव भी कई रूपों में पडा | बघेल वंशीय राजाओं का धर्म शैव था इनके तमाम राजकीय मंदिरों व सामान्य जनमानस के लिए इनके द्वारा बनवाये गए मंदिरों में शिव की स्थापना ही दिखती है | लेकिन यंहा की आदिवासी संस्कृति व धार्मिक अनुष्ठानिक भिन्नता पूर्व से ही रही हैं और आज भी विद्यमान हैं | बघेलखंड की माटी में लगभग २००००० की संख्या में जैन भी हैं जो आये तो बुन्देलखण्ड से हैं लेकिन वर्तमान में इन पर बघेली संस्कृति का ज़्यादा प्रभाव परिलक्षित होता है | मध्यप्रदेश को सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से चार प्रमुख क्षेत्रों में बांटा गया है – बुंदेलखंड, मालवा, निमाड़ और बघेलखंड। मध्यप्रदेश के उत्तरपूर्वी भाग में बघेलखंड अंचल स्थिति है, इसके अंतर्गत सीधी, रीवा, अनूपपुर, सिंगरौली, शहडोल, सतना, उमरिया, उत्तरप्रदेश का सोनभद्र जिला व साथ ही पूर्वी इलाहबाद का क्षेत्र शामिल है | यंहा जगह–जगह पर धरातल से सहसा उठी हुई विंध्य पर्वतमालाओं का उदर विदीर्ण करतीं नदियां बहती हैं | उत्तर मे तमस और बीहर नदियों के मंथर प्रावाह हैं तो दक्षिण मे नर्मदा और सोनभद्र का उद्गम स्थल | पूर्व भाग पर्वतमालाओं का देश है जंहा घने जंगलों और चट्टानो के बीच "माड़ा" जैसी गुफाएँ हैं | पश्चिम मे सोहागी ,छुहिया ,हरदी ,तथा बहरापानी घाटियों का मनोहर दृश्य है | यंहा कैमोर और मेकल दो पर्वत हैं, कैमोर विंध्याचल पर्वत की एक भुजा है जो बघेलखण्ड को 109 मील से भी ज़्यादा घेरे है | गोविंदगढ़ से आगे यह दो शाखाओं मे विभक्त हो जाता है | कैमोर से अनेक नदियां बहकर गंगा –यमुना की ओर निकलती हैं| मेकल पहाड़ मे प्रसिद्ध अमरकंटक है जिसे कालीदास ने मेघदूत मे "आम्रकूट" कहा है | नर्मदा को रेवा और सोन को पुराणों मे "हिरण्यवाह" कहा गया है | बघेलखण्ड भूभाग 14794 वर्गमील तक फैला है| इसमे 6 जिले एवं 9603 गाँव हैं | मध्यप्रदेश के बघेलखण्ड मे सीधी जिला अपना ऐतिहासिक स्थान रखता है, यह राज्य के उत्तर–पूर्व छोर पर स्थित है | सीधी जिले का प्राकृतिक, सांस्कृतिक, और ऐतिहासिक महत्व है | सोन यहाँ की महत्वपूर्ण नदी है | यह नदी प्राकृतिक संपदा से भरपूर है | सिंगरौली बहुत बड़ा कोल उत्पादक क्षेत्र है | इससे देश के कई बड़े उद्योग क्षेत्रों मे कोयले की आपूर्ति पूरी की जाती है तो दूसरी ओर यहाँ समाज के विशिष्ट संस्कृति से जुड़ा हुआ अनुसूचित जन जातियो का विशाल इतिहास है | जिले में कैमूर, केहेजुआ और रानिमुन्ड घाटी में विशाल दृश्य की ज्वाला और फूलो का खूबसूरत नजारा है | भीष्म पर्व अध्याय चार में पाली गाँव के निकट महाभारत कालीन खंडहरों के अवशेष पाए जाने का उल्लेख है | पाली शहडोल जिला अंतर्गत का एक गाँव है |" बघेलखंड के इतिहास के केंद्र में बांधवगढ़ है |

बांधवगढ़ रीवा राज्य का सुदृढ़ एवं दुर्गम दुर्ग है |यह दुर्ग सागर सतह से २६६४ ऊँचे पर्वत पर स्थित है | पुरातत्व की दृष्टि से भी इसका वैशिष्ट्य उजागर है | बघेल शाशको के पूर्ववर्ती नरेशो के लिए यह महत्वपूर्ण दुर्ग था | तेरहवीं शताब्दी में महाराज कर्ण देव को यह किला कलचुरी नरेश द्वारा दहेज़ में मिला था | बघेलो की समृद्धि के केंद्र बांधवगढ़ ने अनेको युद्धों को देखा था |प्राचीन ग्रंथो बघेलखंड का एक नाम कारुष जनपद भी मिलता है | कारुष का शाब्दिक अर्थ क्षुधा होता है | बघेली लोक जीवन अभावो और संकतो से त्रस्त रहा यह तो नहीं कह सकते लेकिन समृद्ध नहीं रहा यह भी सत्य है | यही कारण रहा होगा की इसका नाम कारुष रखा गया | जनश्रुति है की कारुष नाम इंद्र ने दिया था | यानी बघेलखंड का एक बड़ा क्षेत्र कारुष जनपद था जंहा आज भी जंगली जातियां बसती हैं |प्रागैतिहासिक काल के साहित्यिक और सांस्कृतिक साक्ष्य बघेलखंड की घाटियों में मौजूद हैं |एतिहासिक काल में यह जनपद मगध साम्राज्य के अंतर्गत आ गया | चाणक्य की चर्चित कृति अर्थशाश्त्र में कारुष जनपद के हाथियों का वर्णन मिलता है |मगध साम्राज्य के पतन के बाद गुप्त साम्राज्य का उत्कर्ष हुआ और तब यह राज्य हर्षवर्धन के अधीन हो गया |बघेलखंड के एक छोर पर आम्रकूट (अमरकंटक) तो दुसरे छोर पर चित्रकूट अवस्थित है |

भौगोलिक स्थिति -: बघेलखंड मध्यप्रदेश के उत्तरपूर्वी क्षेत्र में स्थिति है | बघेलखन्ड क्षेत्र के अंतर्गत सीधी, रीवा, अनूपपुर, सिंगरौली,शहडोल, सतना, उमरिया, उत्तरप्रदेश का सोनभद्र जिला व साथ ही पूर्वी इलाहबाद का क्षेत्र शामिल है | बघेलखण्ड प्रकृति के आपूर्व संदर्यों का देश है | यंहा जगह –जगह पर धरातल से सहसा उठी हुई विंध्य पर्वतमालाओं का उदर विदीर्ण करतीं नदियां बहती हैं | भौगोलिक दृष्टी से देखने पर सम्पूर्ण बघेलखंड अनेक पर्वत मालाओं, छोटी-बडी नदियों,ऊंचे,-नीचे भूखंडो तथा सघन वनों का क्षेत्र है |सीधी जिले में माड़ा के पास अनेक गुफाएं हैं जो आज भी दर्शनीय हैं | वहीं पश्चमी खंड में अनेक घाटी- छुहिया घाटी,कैमोर और मेकल पर्वत मालाएं हैं |कैमोर इस खंड का सबसे बड़ा पहाड़ है |इस पर्वत से कई नदिया प्रवाहमान होती हैं |बांणभट्ट की साधना स्थली भवरसेन जंहा सोन, बनास और महान नदियों का संगम है यंहा ये तीनो नदिया एक साथ पहाड़ तोड़कर निकलती हैं यंही बाणभट्ट ने अपनी कुटी बनाकर विश्व के प्रथम उपान्यास **"कादम्बरी** "की रचना की | बगदरा के सघन वनों में यंहा किसी भी कोने खड़े होकर काले हिरन , बाघ ,शेर और नीलगायो का अवलोकन किया जा सकता है | बगदरा के अलावा बांधवगढ़ के जंगलो में भी मनोरम दृश्य एवं जंगली जानवरों का अवलोकन किया जा सकता है | यंहा पर्यटकों के लिए कई ऐसी अद्भुत जगहे हैं और साथ ही राजवंशीय ज़माने के रेस्टहाउस हैं जंहा ठहरा जा सकता है |

ऐतिहासिक परिचय -: एतिहासिक तथ्यों के आधार पर बघेलखंड मात्र ४०० वर्षो का साम्राज्य है |तेरहवी शताव्दी में व्याघ्रदेव ने अपनी राजधानी बांधवगढ़ बनाकर एक वृहद् भूखंड को प्रभुता प्रदान की | क्रमशः राज्य वृद्धि होती गयी और व्याघ्रदेव के पुत्र कर्णदेव ने इस प्रभुता का विस्तार किया और क्रमशः इस वंश के २२वे महाराज विक्रमादित्य ने १५९७ में अपनी राजधानी बांधवगढ़ से बदलकर रीमा या रीवा बनाया यह नाम रेवा यानी नर्मदा से प्रभावित था|बघेलखंड का यह स्वरूप १८६२ इसवी में निश्चित हुआ जिसमे बरौंधा,मैहर,कोठी,सोहावल,नागौद और जसो रियासतों को शामिल किया गया |और पोलोटिकल एजेंट कर्नल एडबर्ड कार्ल्बोर्न ब्रईकोर्ट ने अपने आदेश सन १९७२ में पहली बार बघेलखंड का प्रयोग किया था |१२२० विक्रम में अन्हल्वारा पाटन के सोलंकी आरन्योरान्य के व्याघ्र पल्ली या या बाघेला ग्राम की जागीर मिली तभी से इस ग्राम के सोलंकी बघेल कहलाने लगे |उन्ही के वंशज व्याघ्रदेव बघेल संवत १२३३-३४ इस भूखंड में आये और सबसे पहले मार्फा किला को जीतकर बस्ती बसाई ,जिसे बघेल बाडी कहा गया |अपने कथा सरितसार के अंत में रूपमणि शर्मा ने ने भी कुछ बघेल वंश का वर्णन किया है –

"प्रचंडारि व्युहाटवि मथन भूमि ध्वज समो ,
बघेलाना वंशो जयति विदितो भूमि वलये \"

अकबर नामा में भी यंहा के राजाओं को बाघों का ज़मीदार लिखा गया है |अकबर ने १५६३ में कसौटा के राजा मेदनी सिंह को अलग से सनद दे दी और बघेलखंड की सीमा को कम कर दिया |
सन १६५३ में महाराज विक्रमादित्य ने बाघों अर्थात "बांधवगढ़ "से राजधानी "रीवा"लाकर कर दिया तब से औरंगजेबनामा तथा अन्य मुस्लिम इतिहासों में रीवा के शाशको को रीवा का ज़मीदार कहा गया | एकोमा बांधवगढ़ में भी विक्रमादित्य को जागीरदार कहा गया है |इस प्रकार १८५३ इसवी से यंहा की समस्त परम्पराएं पत्तो तथा संधि पत्र आदि में बघेलखंड शब्द का ही प्रयोग होने लगा |अन्य कई देशी रियासते शामिल हो गयी और इसकी सुनिश्चित सीमा भी निर्धारित हो गयी |डॉ.जार्ज ब्रियर्सन ने बघेली बोलने वालो की संख्या रीवा कोठी और सिहावल बतायी इसे बोलने वालो की संख्या २७०८५२६ लिखी | बघेली बोली का दूसरा नाम रिमाई भी है क्यों की यंहा रीवा रियासत रही है | अवधी के दक्षिण में बघेली का क्षेत्र है जिसका केंद्र रीवा राज्य है किन्तु यह दमोह ,जबलपुर,मंडला,तथा बालाघाट के जिलो तक फ़ैली है और इसे बोलने वालो की लगभग संख्या ५० लाख हो जाती है | इस प्रकार इस बोली का क्षेत्र उत्तर में यमुना नदी के दक्षिण बांदा ,फतेहपुर ,हमीरपुर के परगने से लेकर कसौटाऔर शंकरगढ़ तक,पश्चिम में कोठी और सोहावल से मैहर के आस-पास तक ,दक्षिण पश्चिम में कटनी,जबलपुर,दमोह और बालाघाट के कुछ गाँव तक ,दक्षिण में अमरकंटक और मंडला तथा दक्षिण पूर्व में चांगभखार के गाँव कोटाडोल ,करेंजिया और भगवानपुर तक ,पूर्व में सिंगरौली तथा देवसर तक |

बघेलखंड सृष्टी के विकसित काल से अनुपम, अरन्यभा, लालित्य दृश्य वाणी – मन हृदय वपुष संस्कार समर्थ जल के परिपूर्ण रहने के कारण प्रकाशित आत्माओ के अल्प परमोज्जवल प्रकाश को अपने उर में संजोए हुए है| ऋषि मुनि, संत सिद्ध योगिओ ने इसे सिद्ध पीठ बना दिया| अलौकिक पथिको के ब्रादिस्त्पनी पल्लवों से यह भूमि चिंताकर्षित आखेट को रंजित कराती हुई समय- सौन्दर्य सुसमताम राजकुलो को अपनी ओर आकर्षित कराती रही है | सुविकसित रुचियों-वस्तियो के विस्तार का इन्गन करती हुई यह भूमि मनीष– मुनि, सिद्ध भक्त, कलाकार, नायिक साहित्य मूर्तियों व सर्वक्षेत्रिक जनों को जन्म दे यह भुमि धन्य हो गयी |इस उर्वर भूमि कृष्ण मृग से लेकर सफ़ेद शेर तक पाए जाते रहे हैं |_पुरानो में यह कारू जनपद के नाम से जाना जाता रहा है | जो अन्य जनपदों की अपेक्षा संस्कृति समृद्ध रहा है | आधुनिकता से अछूता आदिवासी प्रधान क्षेत्र केहजुआ, कैमोर के अंतराल मे सोनभद्र के स्नेहिल आंचल में किलकित भूमि अपने अप्रतिम के लिए आज भी उल्लेखनीय है |

यह सिद्ध मुनिओ की तपस्थली व कर्मस्थली के साथ – साथ सफेद शेर की अनुकूलित भूमि भी है | यहाँ के अनगढ़ पत्थरो ने चिंतन के लिए साहित्यकारों को उत्प्रेरित किया और ऊबड – खाबड़ ,पथरीली भूमि ने विषय सामग्री प्रदान की | एतिहासिक दृष्टि से बघेलखण्ड का संबंध भारत के अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली युग से रहा है |रामायण युग मे यह भूभाग कौशल प्रांत के नाम से प्रसिद्ध था | पुराण युग मे इसके दो भाग थे एक मेकल प्रदेश तो दूसरा विराट प्रदेश | मेकल प्रदेश का वर्णन श्रीमदभागवत गीता मे भी आया है | विराट प्रदेश का संघ राज्य सोन के किनारे था जिसकी राजधानी विराट नगरी थी जिसे आजकल सोहागपुर कहते हैं | यंही पर बरपागंगा है जिसका उल्लेख भृगु संहिता मे मिलता है |शहडोल जिले के पाली गाँव मे आज भी महाभारत कालीन खण्डहर के अवशेष प्राप्त हैं |

सामाजिक परिचय- लोक संस्कृति का अर्थ लोक दर्शन या लोक व्यवहार है |कृति,प्रकृति और संस्कृति परस्पर गुंथे हुए हैं| कृति पहले प्रकृति होती है | लोक रूचि और लोक कला के योग से प्रकृति का रुपांतरण कृति हो जाता है | कृति की प्रकृति का कलात्मक अनुरूप कहा जाता है | संस्कारित कृति संस्कृति है | अर्थात कृति ,प्रकृति और संस्कृति का कुल गोत्र एक ही है | संस्कृति की शुरुआत व्यक्ति के बहुत निकट से होती है |और दूर बहुत दूर तक फ़ैल जाती है |यंहा तक की समूचे लोक में फ़ैल जाती है और लोक संस्कृति का रूप ग्रहण कर लेती है |लोक संस्कृति व्यक्ति के उठने–बैठने, चलने-फिरने, चुल्हा-चक्की, खेल-कूद और समाज के साथ निर्वाह किये गए नाना प्रकार के व्यवहारों का एकीकृत रूप है | लोक और संस्कृति एक दुसरे से गहरे स्टार से जुड़े हैं | लोक संस्कृति को आस्तित्व देता है और संस्कृति लोक को व्यक्तित्व देती है | लोक संस्कृति का निर्माण करता है फिर उसी से ढलता है | संस्कृति का निर्माण मानव के लिए स्वाभाविक है | किन्तु संस्कृति स्वयं मानव की कृति है और व्यक्ति संस्कृतिकरण की प्रकिया द्वारा उसे अपनाता है | कुछ इसी तरह मनुष्यों का एक समूह जो अपनी इच्छाओं ,क्रियाकलापों व जीवन के सफल संचालन हेतु संगठित होकर तथा आपसी सहमती से बनाए हुए नियमो में आबद्ध होकर अनुशासित होकर रहने लगता है उसे समाज कहते है |वैसे भी समाजशास्त्रीय परिभाषा के अनुसार "सामाजिक संबंधो के जाल को समाज कहते हैं |"यह जाल बघेलखंड की भूमि पर ही अत्यधिक रूप में फैला हुआ है |जंहा अमीरी-गरीबी लोक परम्पराएं,अंधविश्वास ,टोना टोटके,जातिगत मान्यताये ,बड़े छोटे परिवार,कुल ,जन्म,विवाह,आदि सोलह संस्कारों से भरा पडा है फिर अलग अलग जातियों की भिन्न-भिन्न जातिगत परम्पराएं के साथ जीवन यापन कर रहा है | बघेलखंड में निम्न लिखित जातियां निवास करती हैं –

१.बघेल-ये चालुक्य वंश के क्षत्रिय हैं जो समूचे बघेलखंड पर अपना एक क्षत्र राज्य स्थापित रखे थे|

२.कर्चुली-कर्चुली मूल रूप से तो इस खंड के राजा तो नहीं हैं किन्तु ये वीर क्षत्रिय के रूप में बघेलखंड में जाने जाते हैं |ये रीवा जिले के रायपुर खंड में निवास करते हैं|

३.परिहार-परिहार भी श्रेष्ठ लेकिन सरल एवं बौद्धिक क्षत्रियो में गिने जाते हैं | ये भी बघेलखंड में प्रायः हर जगह निवास करते हैं |

४.चौहान-क्षत्रियो की एक उपजाति तथा पौरुषवान ,जुझारू एवं लड़ाकू जाति के रूप में मानी जाने वाली यह बघेलखंड की प्रमुख जाति है|

५.ब्राम्हण-बघेलखंड में 79 प्रकार के ब्राम्हण पाये जाते हैं इनका भी अपना-अपना क्षेत्र एवं गाँव हैं|

६.बनिया-यह व्यापार करने वाली बघेलखंड की प्रमुख जाति है|

७.तेली-तिल से तेल निकालने वाली यह एक प्रकार की शूद्र जाति है ये भी समूचे बघेलखंड में पायी जाती है|

८.कोरी-बघेलखंड के दक्षिण भाग में अधिकाधिक संख्या में निवास करने वाली यह जाति कपड़ा बुनकरों में आती है|

९.अहीर-वर्ण व्यवस्था के आधार पर अहीर जाति को सम्पूर्ण भारत वर्ष में कृष्ण वंशीय माना जाता है |बघेलखंड में यह जाति गाय चराने उन्हें पालने एवं दुग्ध उपार्जन का ही कार्य करती है|

१०.गड़रिया-एक पिछड़ी जनजाति जो दक्षिण पूर्व भाग में रहती है |छुटपुट रूप से यह समूचे बघेलखंड में पायी जाती है|

११.कुम्हार-यह जाति भी बघेलखंड की पिछड़ी जाति है |इस जाति का काम मिट्टी के बर्तन बनाना है|

१२.डोम(मेहतर)-यह बघेलखंड के सभी नग्र एवं बड़ी बस्ती में पायी जाती है| इनका मूल कार्य मैला उठाना है|

१३.बसुहार-बांस के बर्तन बनाने के कारण इस जाति का नाम बसुहार पडा यह सूद्र वर्ग की जाति है बघेलखंड के मध्य उत्तर में ज़्यादा संख्या में निवास करती है|

१४.चमार-यह चमड़े के जूते चप्पल बनाने वाली एक शूद्र जाति है बघेलखंड में मरे हुए पशुओ को हटाना व उसके चमड़े निकालकर चमड़े का धंधा करना इसका प्रमुख कार्य है।

१५.गोंड-.यह वनांचल की जाति है जो दक्षिण और पूर्व के जंगलो में ज्यादा बसती है।इन्हें आदिवासी माना जाता है बघेलो से पूर्व ये यंहा के राजा हुआ करते थे।

१६.बैगा-बैगा भी आदिवासी जाति है इसका काम खेती करना है यह भी जंगल में निवास करने वाली जाति है।

१७.पनिका-एक पिछड़ी जाति जो वस्त्र बुनने का कम करती है।

१८.कोल-कोल जनजाति पिछड़ी जाति है।बघेलखंड में कोल अपने आप को सबरी की संतति मानते है। ये खेती करने का कार्य करते हैं ज्यादातर कोल बड़ी जातियों के बाशिंदे हैं।

१९.भूमिया-यह आदिवासी कोटि की एक जाति है यह भूत-प्रेत बाधा को झाड़ने फूकने का काम करती है।

२०.खैरवार –आदिवासियो की एक जाति जो खैर से कत्था बनाने का कार्य करती है। इसी कार्य के कारण ये खैरवार कहे जाते हैं। ये सीधी जिले के चितरंगी मे ज्यादा संख्या में निवास करते हैं।

२१.पाव- (पाइक)यह भी जंगल के आस- पास रहने वाली अदिवासियो की एक प्रकार जाति है। इनकी संख्या बघेलखंड में बहुत अधिक नहीं है।

२२.कमर-यह गोंडो की ही एक उपजाति है।

२३.दरजी-शूद्र साम्प्रादाय की एक प्रजाति जो कपड़ा सिलने का कार्य करती है।

२४.काछी-यह पिछड़ी जाति है जो ठाकुरों की ज़मीन में सब्जी भाजी लगाने का कार्य करती है।

२५.खटिक-यह गाँव-गाँव घूम कर व्यापार करने वाली जाति है।

२६.वैसवार-यह परिश्रम करने वाली जाति है यह बघेलखंड के चितरंगी तहसील में अधिकाधिक संख्या में निवास करती है।

२७.कहार-यह जाति प्रत्येक गाँव में रहती है जो सम्पन्न घरो में पानी भरने का कार्य करती है।

२८.बारी-यह पत्तल बनाने का कार्य करती है।

२९.लोहार-.लोहे से औज़ार बनाने वाली यह जाति हर गाँव में अवसयक्तानुसार निवास करती है।

३०.बढ़ई –यह लोहार की ही तरह की जाति है पर यह लकड़ी का कार्य करती है।

३१.कुर्मी-यह बघेलखंड की प्रमुख जाति है इसका मुख्य कार्य खेती करना है।

३२.कोटवार-यह बघेलखंड में काफी कम संख्या में लेकिन हर जगह पायी जाने वाली जाति है।इसका प्रमुख कार्य गाँव में चौकीदारी करना व खेती करना है।

३३.बहेलिया-यह बघेलखंड में पायी जाने वाली शिकारी किस्म की जाति है। यह भी प्रायः हर जगह पायी जाती है।

३४.कंजर-यह बघेलखंड में ही निवास करने वाली जाति है लेकिन इसका निवास अस्थायी है । यह पूरे बघेलखंड में घूम कर शिकार एवं भिच्छाटन का कार्य करती है। यह सीधी जिले के मझौली तहसील में पाए जाते हैं।

३५.बसदेवा-यह भिच्छाटन कर अपना भरण-पोषण करने वाली जाति है।यह बसदेवा गाथा गायन परम्परा के संवाहक के रूप पमें भी जाने जाते हैं।

३६.भरथरी-यह बघेलखंड की घुमंतू जाति है सारंगी बजाकर भिच्छाटन करना इनका प्रमुख कार्य है।

३७.कुंदेर –बघेलखंड में यह पिछड़ा वर्ग में आती है इस जाति का प्रमुख कार्य लकड़ी की कारीगरी करना है।ये लकड़ी के खिलौने कूंद कूंद कर बनाते हैं यही कारण है की इस जाति का नाम कुंदेर पड गया।

३८.कचेर-यह जाति भी पिछड़ा वर्ग में आती है यह मूल रूप से मनिहार का कार्य करती है जो अक्सर जुलाहे किया करते थे।

३९.**कलार**-यह गोंडो की ही उपजाति है जिसका प्रमुख कार्य शराब बनाना है।

४०.**घसिया**-यह भी गोंडो की ही उपजाति मानी जाती है जो विवाह उत्सव में गुदुम बाजा बजाने का कार्य करती है।

४१.**भील**-यह कोल की ही तरह की जाति है जो कृषि कार्य का काम करती है।

इस प्रकार विभिन्न प्रकार की जातियों से बघेलखंड की माटी विकसित है तथा यह भी दिखाई देता है की इन जातियों का कार्य बघेलखंड में वैदिक वर्ण व्यवस्था के अधार पर ही है।जो बोझिल है तथा मानवीय संवंधो की मधुरता में रोक लगाती है।एक–दुसरे के साथ उठने बैठने एवं खाने-पीने तथा आत्मसात करने की प्रविति इसी वर्ण व्यवस्था के कारण नहीं पनप- सकी है।वर्तमान में जाति विहीन समाज का निर्माण जारी है।

बघेलखंड की अपनी रीति-रिवाज़ अपनी-अपनी जातीय परम्पराएं तथा जीवन यापन के अलग-अलग ढंग हैं। जीवन निर्वाह में विभिन्नता के अनेक दर्शन होते हैं फिर भी एकता लगन तथा परिश्रम ही इस खंड की पूंजी है।

बघेलखंड के प्रमुख समाजिक गुण:

(क)यंहा के सामाज मे जाति प्रथा कि कट्टरता अधिक है।

(ख)जातियों मे भेद-प्रभेद का आधिक्य जैसे कि गोण्डों मे 2अलग–अलग अंतरजातियाँ हैं।

(ग) विवाह संस्कार प्रत्येक जाति के लिए आवश्यक है तथा हिन्दवानी और गोंडी दोनों के विवाह संस्कार अलग–अलग हैं।

(घ) आदिवासियो मे बहुपत्नी रखने ,प्रेम विवाह ,एवं कला-कौशल के अधार पर दूसरों कि औरतों को जीतकर अपनी पत्नी बना लेने का भी रिवाज है।

(च) गोंडी संस्कृति कि जातियों मे "गोदना" गोदाने कि विख्यात परंपरा है।

(छ) आदिम सभ्यता का प्राभाव यंहा के जनजीवन मे सहज ही झलकता है।

(ज) सामाजिक रीति – रिवाजों का आज भी कट्टरता से पालन किया जाता है।

(झ) तरह –तरह के आभूषण पहनने एवं उसे सहेज कर रखने कि परंपरा है।

(ट) अनेक जातियों के होते हुए भी जातियों में भेद –प्रभेद हैं इसलिए इनमे श्रेष्ठ और निम्न के दर्शन होते हैं।

(ठ) विवाह संस्कार प्रत्येक जाति का मूल धर्म है। पति-पत्नी के सम्बन्ध बिना वैवाहिक रीति का सम्पादन नहीं हो सकता। किन्तु जातीय आधार पर अपनी-अपनी रीतियाँ हैं और उससे कट्टरता के साथ उच्च कोटि की जातियों में वैदिक रीति से विवाह किया जाता है। निभाने की भी परम्परा है। कंही ऐसी भी जातिया हैं जिनमे दूध सम्बन्ध बचाकर भी विवाह कर दिया जाता है।कंही कंही गोत्र को देखकर विवाह किया जाता है । किन्तु निम्न कोटि की जातियों में कुछ वादिक रीति के अलावा उनकी जतीय परम्परा में जैसे अहीरों में बढनी की पहले शादी करा दी जाती है फिर विवाह की रश्म शुरू होती है। कुछ जातियो में अग्नि का मिलन करवा दिया जाता है। पिछड़ी जनजातियो में कई विवाह कर लेने या बहुपत्नी रखने की परम्परा है। गोंड ,कोल ,चमार ,कोरी,आदि कुछ ऐसी भी जातियां हैं जिनमे चचा-ताऊ के लडकी से भी विवाह हो जाता है।

(ड) बघेलखंड में भी पुरुषो की आपेक्षा नारियो को उतनी स्वतंत्रता, अधिकार व सामाजिक मान्यताएं प्राप्त नहीं हैं जबकी महिलाओं की संख्या पुरुषो की आपेक्षा ज़्यादा है। गृह सीमा में बंधी हुई ये अपना जीवन निर्वाह कर रही हैं। सोने चांदी व लाख के गहने पहनती हैं।यंहा पुत्र उत्पत्ति पर जो सुखानुभूति देखने को मिलती है वह पुत्री के पैदा होने पर नहीं।

(ढ)कुछ वर्षो पहले यंहा मूल उद्योग खेती हुआ करती थी लेकिन अब सिंगरौली जैसी कोल माइंस होने के कारन २५ कोयले एवं बिजली की कंपनिया आ गयी हैं और आर्थिक रूप से यंहा के लोग थोड़ा मज़बूत हुए हैं तो कंही इन्ही के कारण पलायन के शिकार भी हुए हैं|

(ण)यंहा के सामाजिक स्थिति को बिगाड़ने वाले लोगो के प्रति समाज ही फैसला करती है | लेकिन समय के साथ बहुत कुछ बदला है इस सामाजिक ढ़ाचे का भी पतन हुआ है धीरे –धीरे समाज की वह स्थितियां भी बदलती नजर आ रही हैं जो आपसी सुलह और सामाजिक दायरे की थी |कहा जाता है की पहले यह भी एक परम्परा रही है कि अपने गाँव में लोग पुलिष का आना सम्मान के खिलाफ मानते थे बिना गाँव वालो की अनुमति पुलिष गाँव में न तो प्रवेश कर सकती ठी और न ही सम्बंधित व्यक्ति पर मुकदमा कर सकती थी अगर उस व्यक्ति ने गुनाह किया है तो समाज ही उसे सजा देता था परन्तु समय और समाज के तीव्र गति से बदलते रूप ने इसे भी विलुप्तता की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया जो सुव्यवस्थित समाज का अभिन्न अंग थी|

(त) बघेलखंड में त्योहारों को मनाने का भी अपना एक अलग ढंग है कुछ त्यौहार तो विशेष महत्व रखते हैं तो कुछ त्यौहार सामान्य ढंग से मना लिए जाते हैं | प्रमुख त्योहारों में दशहरा, दीपावली ,होली,नागपंचमी,तीजा ,जवारा आदि हैं |सामान्य त्योहारों में खाजुलियाँ ,हरछठ ,शिवरात्री,बहुरा,करवा चौथ, भाई दुइज, खिचडी, बसंत पंचमी, रामनवमी, आदि इनमे से कुछ त्यौहार मेले के रूप में भी मनाये जाते हैं|

(थ) दहेज़ प्रथा बघेलखंड में प्रचलित तो है लेकिन यह ब्राम्हण ,क्षत्रिय ,वैश्य तक ही सीमित है|

(द) बहुपत्नी प्रथा भी बघेलखंड में मानी है अब धीरे-धीर सामाजिक जागरूकता के कारण इसका लोप हो रहा है|

(ध)शूद्र वर्ग के समाज में अनेक देवी- देवताओं की प्रथा है ये इन्हें प्रसन्न करने के लिए बली भी चढाते हैं कहा जाता है इनमे पूर्व में नरबली की परम्परा रही बाद में बघेलखंड के राजा विक्रमादित्य ने इस परम्परा पर अंकुश लगाया और तब से पूर्णरूपेण बंद है |पशु बलि देने की परम्परा को **"जपान"** कहते है |कोल जाति के लोग अपने देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार के नाटकीय करिया –कलाप भी करते हैं जैसे –जीभ में बाना छेदना ,हाथ में छेदना ,गर्म खप्पड़ हाथ में लिए रहना ,दांत से गर्म लोहे कि सांकल उठाना, कील गडी खड़ाऊं पर चलना व् इनके स्थानीय देवी-देवताओं में बघउत, बंदरिया, बाबा, सन्यासी, स्थानीय देवताओं में दानो, बरम, महामाई, बघेसुर, छोटकादेव, बडकादेव, यादोराय, घमसान, पंडा, लक्षिमन ,काली, बदरिया आदि हैं|

(न)आदिवासियों की कुछ अपनी जातीय परम्पराए हैं ये अपने उत्सव को महुए की शराब पीकर मनाते हैं और रात भर अपने जातीय कला रूप करमा ,शैला ,ददरिया ,गीत नृत्य करते हैं जिसमे पुरुष और महिला सम्यक रूप से भाग लेते हैं|

(प) सोलह संस्कारों का पालन यंहा की जातियां श्रद्धा पूर्वक करतीं हैं|

(फ) बघेलखंड में निवासरत जातियां अपने गोत्र में विवाह नहीं करती | यंहा गोत्र का मतलब पौराणिक काल से चले आ रहे गोत्र विभाजन से है | जैसे की गोंड जाति के एक गोत्र में पांच कूरे यानी अलग-अलग तरह के गुणानुसार गोंड होते है वो सब अपने गोत्र में विवाह नहीं करेंगे | ऐसे ही सामान्य जातियों में भी होता है जैसे कोई कश्यप गोत्र का है तो वह एनी कश्यप गोत्र वालो से शादी नहीं करेगा|

(ब) जातीय पंचायतें जातिगत झगड़ो का निर्णय कर लेती हैं|

(भ)यंहा के जनजातीय समूहों में स्त्रियों की जनसंख्या ज्यादा होती है पुरुषो की आपेक्षा|

(म) पिछड़े वर्ग का सामाजिक ढांचा श्रम पर निर्भर होता है|

(य) बघेलखंड में जनजातीय लोक संगीत की छाप देखने को मिलती है | इनका लगभग पूरा लोक साहित्य मौखिक परम्परा में संरक्षित है |
(र) बघेलखंड के स्थानीय देवी देवताओं का उल्लेख संस्कार, गीतों कृषि गीतों, जातीय गीतों, नृत्य गीतों, अनुष्ठानिक गीतों व मन्त्र गीतों में मिलता है |
(ल) बघेलखंडी जनजातियाँ अंधविश्वास में जीती हैं ,इनका विशवास जादू-टोने झाड- फूंक पर होता है या दुसरे शब्दों में यह कहें की इनका प्रकृति और प्रकृति प्रदत्त चीजों पर विष्वास ज्यादा है |
(व)कुछ जातियों में विशेष तरह की विवाह प्रथा- हम आपको बता दे की जिस विशेष तरह की विवाह परम्परा का जिक्र हमने आप से किया दरअसल वो यादव जाति में पारम्परिक रूप से एक वैवाहिक परम्परा का चलन रहा है जो अब धीरे-धीरे नाम मात्र की रह गयी है पहले अहीरों का विवाह अहीर के लड़के- लड़कियों की अपनी मर्जी से हुआ करता था जैसा की आज भी बघेलखंड की कुछ अदिवासी जातियों-जनजातियों में है | साथ ही अहीर जाति के लोग जब बरात आते थे तो रात का खाना खाने के बाद घर पक्ष की महिलायें और वर पक्ष के पुरुषो के बीच नृत्य प्रतिस्पर्धा रूप में हुआ करता थी | जिसकी कुछ शर्तें थी की एक महिला और एक पुरुष आमने-सामने नाचेंगे और वो दोनों एक दूसरे से न हारने की जिद के साथ प्रस्तुत हुआ करते थे | यदि नाचते-नाचते किसी स्त्री का पल्लू पुरुष के शरीर से छू जाए तो उसे पुरुष के साथ जाना पड़ता था और यदि किसी पुरुष का शरीर थकान के कारण महिला से छू गया तो महिला उसे अपने घर पति स्वरूप में स्वीकार कर ले जाती थी | यह नृत्य स्वयंबर था क्यों की नृत्य तब तक होता था जब तक की कोई हार या जीत का परिणाम न आ जाता था | इसमें भी दो तरह के विवाह हुआ करते थे एक तो माँ, बाप इसी नृत्य के दौरान अपनी लडकी के लिए योग्य वर ढूढ़ लिया करते थे और दूसरा लडकियां खुद अपना वर ढूढ़ कर नृत्य दौरान ही पुरुषो के शरीर से अपना पल्लू छुआ दिया करती थीं | विवाह की यह परम्परा कालांतर में बदलते-बदलते आज विलुप्त होने की कगार पर है | नृत्य आज भी होता है लेकिन विवाह की परम्परा कंही गायब है | इस सम्बन्ध में एक बड़ी सुन्दर कथा याद आती है की जाति की पहचान उसके पारम्परिक कार्यो से हुआ करती थी , लडकी के माँ, बाप लड़के में पारम्परिक कार्यों की कार्य कुशलता देखकर अपनी बेटी का व्याह दिया करते थे |

एक बार की बात है की एक लड़का एक लडकी से प्रेम का इज़हार करने के लिए उसके घर पहुच गया और जाकर लडकी के पिता से कहने लगा की मै आपकी बेटी से प्रेम करता हूँ और आपकी लडकी भी मुझसे प्रेम करती है अतः हम दोनों चाहते हैं की आप हमारा विवाह कर दे तब कुम्हार ने कहा की यह मिट्टी रखी है जाओ बर्तन बना डालो यदि तुम बर्तन बना लोगे तो मैं अपनी लडकी का विवाह तुमसे कर दूंगा और बर्तन नहीं बना पाए तो फिर तुम जानो | लड़का कुम्हार का ही था अतः उसने बिना देर किये मिट्टी के बर्तन बनाना शुरू कर दिया और करीब एक घंटे की अवधि में मिट्टी के चार–पांच तरह के बर्तन बना दिए और फिर कुम्हार ने अपनी बेटी का विवाह उस लड़के से कर दिया | यह परम्परा कालांतर में विलुप्त हो गयी लेकिन वो जोड़े आज भी हैं जो इस पारम्परिक विवाह प्रणाली से बने थे | कुम्हारों और यादवो के अलावा भी बघेलखंड की अन्य जातियां हैं जिनकी अपनी अलग तरह की विवाह प्रणालियाँ हैं |

साहित्यिक पड़ाव -: यहाँ के साहित्यिक पड़ाव की बात करे तो 19 वी शदी से ही यहाँ की साहित्यिक साधना प्रगति की आराधना अपनी सुरभि बिखेरने में तत्पर रही है | सोन–रेवा के कगारों की हरीतिमा की ही देन है ,बाणभट्ट की कादंबरी व हर्ष भारत जैसी पूत कृतिओ का प्रादुर्भाव हुआ है | सेनापति एवं पद्माकर की शैली में वृत्तानुपात प्रधान रचनाये लिखने का प्रचलन इस काल में रहा है| बघेली बोली मे लिखित साहित्य का आभाव है जबकि बघेली मे लोकसाहित्य प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध है |लौकिक साहित्य ही लोकसाहित्य है | वैदिक साहित्य से भिन्न समस्त बाते लौकिक कहलाएंगी | यह लोक शब्द से उत्पन्न है

डॉ.सतेन्द्र ने लोक साहित्य की परिभाषा निम्नानुसार दी है - वह समस्त बोली व भाषागत जिसमे निम्न तत्व सम्मिलित हो लोक साहित्य कहलाता है –
अ. आदि मानव में अवशेष उपलब्ध हो |
ब. परम्परागत मौखिक क्रम में उपलब्ध बोली या भाषागत अभिव्यक्ति हो जिसे किसी की कृति न कहा जा सके | जिसे श्रुति ही मन जाता है और जो लोक मानस की प्रवित्ति में समाई हुई हो |
स. कृतित्व हो लेकिन वो लोक मांस के सामान्य तत्वों से युक्त हो की उसके किसी व्यक्तित्व के साथ सम्बन्ध होते हुए भी लोक उसे अपने व्यक्तित्व की कृति स्वीकार करे |"

विश्वास और आचरण
रीति रिवाज़
कहानिया, गीत तथा कहावते
लोक गाथा, नृत्य, चित्र आदि

अब यदि हम बघेली लोकसाहित्य की बात करे तो दीर्घकालीन यानी १०वी शताब्दी के पूर्व से ही चली आती दिखाई पड़ती है |१०वी शतब्दी में कर्णदेव का 'सारावली' ग्रन्थ प्राप्त होता है |उसके बाद क्रमशः धर्मदास ,सोनन नाई ,ब्रिजेश महाराज जय सिंह ,महाराज विश्वनाथ सिंह,महाराज रघुराज सिंह,आदि के अनेक ग्रंथो में लोकजीवन भरा पडा है |भले ही इन सबका साहित्य विशुद्ध बघेली साहित्य न हो परन्तु बघेलखंड के जनजीवन और लोकपरम्परा की छाया उसमे पर्याप्त मिलती है |यही नहीं गोस्वामी तुलसीदास जिनका साहित्य लोकजीवन का महत्वपूर्ण उपादान है बघेलखंड के चित्रकूट में ही रमे जो सतना जिले में आता है | बघेली लोकसाहित्य की परम्परा में विश्वास और मनोभूमि तथा विकास का क्रमिक वातायन प्राप्त होता है | कुछ विद्वानों के अनुसार अलिखित साहित्य ही लोकसाहित्य है | जो अलिखित है क्या उसे ही हम लोकसाहित्य कह पाएंगे और जो लिखित है जैसे आल्हा, ढोला मारू, पंचतंत्र की कहानिया क्या ये सब लोकसाहित्य में नहीं आयेगीं | मेरा तो मानना है की हर वो साहित्य लोकसाहित्य है जो उस जीवन शैली भाषा को छूकर निकल जाए | किसी साहित्य में हमें सिर्फ यह देखना है की उसमे लोकमानस की अभिव्यक्ति हुई है की नहीं क्यों की लोकमानस ही लोकसाहित्य का निर्धारक तत्व है | बघेलखंडी लोकसाहित्य को निम्न भागो में विभक्त कर सकते हैं –

लोकगीत
लोककथा
लोकगाथा
कहावते
लोकनृत्य
पहेलियाँ
मन्त्र
वंही लोक गीतों को हम निम्नप्रकार से विभाजित हुआ पाते हैं -
बघेलखंड लोककलारूपों की वो अथाह जलराशि है, जंहा तरह–तरह की लोककलाए रत्नरूपों में अंतर्निहित है | वही बघेलखंड के मधुर लोकगीत यंहा के लोक जनजीवन की पीड़ा हर लेते हैं |उनकी रग–रग में साँस की तरह रची–बसी है | बघेलखंड सीधी, रीवा, सतना, शहडोल, सिंगरौली का पूरा भूभाग है | यंहा के लोकगीतों में यंहा के ऐतिहासिक, समाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परम्परा के दर्शन होते हैं |

मानव जन्म से मृत्युपर्यन्त तक बघेलखंड में गीत गाने की परंपरा है | जिन्हें कुछ इस प्रकार विभाजित किया गया है -

1.जन्म संस्कार गीत
2. उपनयन संस्कार (बरुआ)गीत
3.विवाह संस्कार गीत
4.मृत्यु संस्कार गीत
5 .ऋतू गीत (कृषि गीत)
6 .पर्व गीत
7 .अनुष्ठानिक गीत /देवी गीत
8 .जाति विशेष गीत
9 .लोक गाथा गायन
10.लोक कथा गायन
11 .लोकनाट्य गीत
12 .श्रम गीत (क्रिया गीत)
13 .नृत्य गीत
14 .मंत्र गीत
15.यात्रा गीत
16.खेल गीत
17.बनजोरबा गीत
१८.पितमा
१९.चिहुरी

लोकगीतों के बाद लोककथा रूपों की हम चर्चा करते हैं जिसमे हमें लोक कथाओं के विभिन्न अलग –अलग विषयगत भिन्नताएं देखने को मिलती हैं -

१.पशु –पक्षी सम्बंधित कथाएं
२.जानवरों सम्बंधित कथाएं
३.नीतिपरक कथाएं
४ धर्म संबंधी कथाएं
५.स्थानीय देवताओं सम्बंधित कथाएं
६.जातिगत कथाएं
७.भूत-प्रेत संबंधी कथाएं
८.जातक कथाएं
९.प्रेम परक कथाएं
१०.युद्ध संबंधी कथाएं
११.खेती किसानी संबंधी कथाएं

लोक गाथा गायन परम्पराओं की बात करे तो बघेलखंड में अलग-अलग जातियों में निम्न प्रकार की गाथा गायन परम्पराए चलन में हैं –

१.चदैनी

२.छाहुर
३.ललना
४.चंदनुआ
५.पदुम कंधइया
६.गढ़ कैउंटी
७.रेवा –परेवा
८.भरथरी
९.नल-दयमन्ती
१०.राजा हरिश्चन्द्र
११.गोंडी
१२.शिव-पार्वती
१३.रानी केतकी
१४.आल्हा
१५.हरदौल
१६.ढोला म्हारू

बघेलखंड में कहावतो का अधिकाधिक्य प्रचलन है कहावतो के निम्नलिखित प्रकार हमें देखने को मिलते हैं –

१.कृषि संबंधी कहावते
२.नीतिपरक कहावते
३.जातिगत कहावते
४.पशु-पक्षी संबंधी कहावते
५.धर्म संबंधी कहावते
६.राजवंश संबंधी कहावते
७.तकनीक संबंधी कहावते

बघेलखंड मध्यप्रदेश के अन्य क्षेत्रो की तरह नृत्य प्रधानता वाला क्षेत्र तो नहीं है लेकिन यंहा जातिगत नृत्यों की बहुलता देखने को मिलती है |जातिगत नृत्यों की हम निम्नवत चर्चा कर रहे हैं –

१.करमा
२.शैला
३.गुदुम
४.अहिराई
५.अहिराई –लाठी
६.केहरा
७.सजनयी
८.दादर

९. कोलदादर
१०. मटकी
११.भगोरिया
१२.भीली
१३.ददरिया
१४.सुआ
१५कोलनहई
१६.चमरौही
१७.धोबिआई
१८.कोंहरौहीं
१९.जवारा
२०.लहलेंदबा
बघेलखंडी लोक कलारूपो में पहेलियो का बहुत महत्व है इन्हें हम निम्न भिन्न रूपों में देख सकते हैं
१.प्रकृति संबंधी पहेलियाँ
२.खेती संबंधी पहेलियाँ
३.नैतिक जीवन शैली सम्बंधित पहेलियाँ
४.संस्कारों संबंधी पहेलियाँ
बघेलखंड में मन्त्र गीतों की परम्परा सामान्य जनजीवन के सहज प्रयोग में तो नहीं हैं परन्तु कुछ ओझाओं से जो हमे मन्त्र सुनने को मिले वो निम्नवत हैं –
१.सांप के मन्त्र
२.बिच्छू के मन्त्र
३.भूत –प्रेतों के मन्त्र
४.ज़िन्द के मन्त्र
५. बलि के मन्त्र
६.विभिन्न रोगों के झाड़ने के मन्त्र
७.पशु रोग मन्त्र
८.स्थानीय देवताओं के सुमिरनी मन्त्र
९.कुल्हाचरन मन्त्र
१०. अन्य विषाक्त जानवरों के झाड़ने के मन्त्र
लिखित लोक साहित्य -: साहित्य की विविधि विधाओं में से कविता में भी लोकसाहित्य का स्वरूप सरलता से देखा जा सकता है |कविता लोकमानस और लोकजीवन में गहरा सम्बन्ध स्थापित किये हुए है | आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में –"साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण भाव लोकसाहित्य पर आधारित है |"बघेलखंड में पूर्व से अब तक लगातार लोकसाहित्य लिखा जा रहा है जिसकी मूल भाषा

बघेली ही है | लिखित साहित्य के तारतम्य में हम कुछ बघेली कवियों एवं पूर्व के बघेली साहित्य की बात रख रहे हैं जो निम्नप्रकार है-

लोक कवि बैजू 'काकू'
मधुर अली
गणेश भट्ट
श्यामसुंदर शुक्ल
हरिदास कवि
श्री शम्भू 'काकू'
नागेन्द्र प्रसाद शर्मा
गुलाम गौश खां
कालिका प्रासाद त्रिपाठी
सुदामा प्रासाद मिश्र
बाबूलाल दहिया
शिवशंकर मिश्र 'सरस'
सनत कुमार सिंह
धरिन्द्र त्रिपाठी
रामलखन शर्मा
शैफूद्दीन सिद्दीकी 'सैफू'
रामदास पयासी
भागवत प्रसाद पाठक
गोमती प्रसाद ' विकल '
राम लखन सिंह बघेल "महगना"

बघेलखंड के सम्पूर्ण क्षेत्र के ये बघेली कवि हैं जिन्होंने सार्थक रचनाये कर बघेलखंड को बघेली भाषा को नए आयाम दिए भाषा को नई दिशा प्रदान की | बघेली भाषा के लिखित साहित्य में १०वी शताब्दी के काल से भी यंहा के राजवंशो से रचनाये होनी शुरू हो गयी थी जिनमे प्रमुख राजाओं के नाम हम लिख रहे है –

महाराजा विक्रमादित्य सिंह
महाराजा रघुराज सिंह
महाराजा विश्वनाथ सिंह
महाराजा मार्तंड सिंह
राजा राव बैरीशाल आदि |

बघेली बोली -: बघेली बोली भी अन्य बोलियों के सामान हिन्दी से ही मिश्रित है | इस अंचल कि हिन्दी को भी पूर्वी हिन्दी कहा जाता है |अतः पूर्वी हिन्दी से एक समान जो बोलिया निकली उनमे प्रथम अवधी फिर बघेली और छत्तीसगढ़ी है | डाक्टर उदय नारायण तिवारी अवधी और बघेली में नाम मात्र का अंतर मानते हैं

–भाषा संबंधी विशेषताओं की दृष्टी से अवधी तथा बघेली में नाम मात्र का अंतर है | अतएव अवधी से अलग बोली के रूप में इसे स्वीकारने की आवश्यकता न थी | डाक्टर ग्रियर्सन का अनुसार –"पूर्वी हिन्दी की अन्य बोलियों की भाँती बघेली की भी उत्पत्ति अर्धमागधी से हुई है | बाबू श्याम सुन्दर दास तथा उदय नारायण तिवारी ने भी ग्रियर्सन की बात का समर्थन किया है | किन्तु बाबूराम सक्सेना ने अपने मत का समर्थन करते हुए लिखा है कि –"पूर्वी हिन्दी जैन अर्धमागधी की आपेक्षा पाली के अधिक निकट है |"डाक्टर सक्सेना के मत का खंडन करते हुए त्रिलोकी नारायण दीक्षित ने कहा है की –"सक्सेना का मत स्पष्ट नहीं है | उनका यह अनुमान है की अवधी जैन मागधी से नही वरन उसके पूर्व किसी अर्धमागधी से उत्पन्न हुई है |"इस प्रकार अवधी और बघेली में नाम मात्र का अंतर है बघेली को अवधी से अलग करने की आवश्यकता नहीं है |अवधी के अंतर्गत तीन प्रमुख बोलियाँ हैं अवधी ,बघेली,और छत्तीसगढ़ी अवधी और बघेली में कोई अंतर नहीं है बघेलखंड में बोले जाने के कारण इसका नाम बघेली पडा | कतिपय विद्वान् लेखको ने अवधी और बघेली में अंतर स्पष्ट करते हुए लिखा है जिसमे ग्रियर्सन का मत दृष्ट्व्य है –

१.बघेली में अतीत काल की 'करिया ते' अथवा तैं प्रयुक्त किया जाता है जबकी अवधी में इसका अभाव है |

२. अवधी में मध्यम पुरुष तथा भविष्यत् काल के रूप 'ब' संयुक्त करके सम्पन्न होते जबकि बघेली में 'ह 'जोड़कर बनाए जाते है | यथा अवधी देखीलों तो बघेली देखिहौं |

३.अवधी 'व' तथा बघेली 'ब' में परिणित हो जाता है |यथा –अवधी आवाज बघेली अबाज अवधी आवा बघेली आबा |

बघेली में और कई एक अंतर अवधी से भिन्न दिखाई देते हैं |सर्वनाम में यह लगभग हिन्दी का अनुसरण तो करती है परन्तु अवधी का नहीं |सर्वनाम आदि की आवश्यकता पर अवधी में एक पूर्ण शब्द तुम ,उन या उनखर से बोध होता है,परन्तु वंही बघेली में प्रायः पांच शब्द का प्रयोग किया जाता है जैसे –तूपांच ,उनपंचे, तथा ओनखर पंचेन के आदि |हिन्दी में भाई लोग शब्द का प्रयोग होता है जैसे –तुमलोग ,उनलोगों का आदि | इसी तरह एकवचन हो दो वचन हो या बहुवचन हो सभी क्रियायो में अंतर दिखाई देता है |अवधी में जंहा अहै – बातैं की टेक लगा के बोलते हैं तो वही बघेली में ऍ और ई लगाकर काम चला लिया जाता है |भूतकाल की क्रिया में भी अवधी में कहे रहों, कहे रहें आदि का प्रयोग होता है जबकी बघेली में एकवचन हेतु कहे रहया तथा कहे रहे का प्रयोग होता है | विशेषण बनाने में भी बघेली में हा का प्रयोग कर विशेषण में बदल दिया जाता है यथा-ससुरहिा,पानी से पनिहा,बेटऊ से बेटउहा, नीक से निकहा, भूक से भूकहा, पियास से पिअसहा आदि |कार्य किन समाप्ति पर बघेली में चुकेन शब्द का प्रयोग होता है जैसे की हिन्दी में लिए शब्द लगता है –कहा लिए ,पहन लिए,उसी प्रकार बघेली में खाय लिहेन ,पहिन लिहेन आदि शब्द हैं | किसी के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए हुकुम या मर्जी बोलकर आज्ञा सूचक जन वाक्य का प्रयोग होता है जैसे-हुकुम होय तो जइ बिलकुल उसी तरह हिन्दी में- हुकुम हो तो जाए उसी प्रकार बघेली का इहां ,उंहा ,जंहा ,तंहा और हिन्दी का यंहा वंहा , जंहा-तंहा आदि | तो इन सब उदाहरणों से यह सिध्ध होता है की अवधी से कंही भिन्न बघेली का अपना आस्तित्व है | गौर करे यदि यह अवधी के इतने नज़दीक होकर उससे भिन्न है तो अन्य बोलियों से भिन्न तो होगी ही | इस प्रकार हम बघेली को एक अलग बोली के रूप में विशलेशण करने पर देखते हैं |

प्रस्तावित योजना वाले क्षेत्र की भाषा 'बघेली' है जो पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोली है | बघेली बोली बोलने वालो का क्षेत्र दो भागो मे बंटा है एक तो विशुद्ध बघेली और दूसरी गोंडी बघेली इसी आधार पर यंहा पाए जाने

वाले कलारूपों को भी दो भागों मे बांटा गया है | एक हिंदवानी परंपरा और दूसरी आदिवासी परंपरा के नाम से विख्यात है | बघेली भाषा का क्षेत्र सम्पूर्ण बघेलखण्ड के साथ –साथ मिर्जापुर ,मंडला ,बाला.घाट बांदा तथा छत्तीसगढ़ का बिलासपुर तक का कुछ भाग भी शामिल है | बघेली भाषा 13 वी सताब्दी के आस - पास से अपने अस्तित्व में आई है | इसे बघेलखंडी , रिमारी तथा रिवाई के नाम से भी जाना जाता है | बघेलखण्ड मे विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं | इन जातियों के संस्कारों रीति – रिवाजों और रूढ़ियों मे बहुत अंतर है इसलिए यही कारण रहा है कि यंहा जातिगत लोक साहित्य ज़्यादा मिलता है यहाँ की

छाहुर – यादव जाति द्वारा अपने जातीय प्रतिनिधि पुरुषो से सम्बंधित विभिन्न तरह की ७ गाथाओं की गायकी की जाती है जिनमे से छाहुर गाथा गायन भी एक है | अहीर जाति का बघेलखंड में नहीं देश के अन्य राज्यों में शासन करने की ऐतिहासिक साक्ष्य सामने आते हैं | यादव जाति देश की वैदिक जाति मानी जाती है | इनकी गाथा गायकी या गीत प्रस्तुतियों में समाज और समाज से जुडी तमाम विविधताओं के रूप का परिलक्षन देखने को मिलता है | यादव जाति की मौखिक रचनाओं में जितनी छंदबद्धता और सामाजिक सारोकार दिखता है उतना अन्य जातीय कला रूपों में नहीं | उदाहरण के लिए हम छाहुर की इन पंक्तियों को देखते हैं –

गीत(सुमिरनी)-सदा भवानी दाहिनी सन्मुख रहय गणेश
तीन देव मिलि रक्षा करयं एजी ब्रम्हा विष्णु महेश
जिभिया मा बइठी आबा जीभी शारद
ओंठवन गौरी गणेश हो
पहिली मा सुमिरी धरती रे माई
एजी दूजे उपर आकाश
तीजे मा सुमिरी गाय रे माता
एजी बांधे प्रेम के पाश रे
राम-राम -राम भइया रामय राम
राम पर धरी आबा आजू हो परान
राम के रटनिया बिसरत नहीं आय
दिन बिसरे रे नहीं रतिया हो आजु
राम के रटनिया ता परन हो अधार
हो भइया जब तक इया चोलबा मा बसय हो परान
सर्बा का सुमिरी सरसतिया का आजु
घेरबा का सुमिरी दादा आजु घमसान
सुमिरी रे भुइया भवानी का आजु
मरजादा है तोरे रे हाथ
सुमिरी शरद मइहर का रे आजु
बूढ़ी दाई सुमिरी अउ कठिगर नाथ

देव हो तलाये काशी बाबा हमार
अउ माँ माई हो रतनपुर के
सुमिरी रे देव गोरइया का आजु
हो भइया जे हाँ पुरखन के पुजमान
घूरे के घोरइया देउता मेढे के मेढान
चित्ता के चिताबर माई बाबा हो दलान
चउरा के सन्यासी हो अघोरी समसान
कुआं रे तलाये मेढूली के देउथान
हो भइया सुरुज सुमिरी जे करयं बिहान
सातय रे बहिन देवी दुरगा हमार
मनमा रे देवी करय विचार
चला-चली बहिनी गंगा हो नहाय
अउ गंगा नहाय काया पवित्र होय जाय
तिन मिन धिन ना धिन धि ना
धिन धिना धिन ना धिन धी ना
तिन मिन धिन ना धिन धि ना
धिन धा धिन धा धिन धा

कोरस-सुना सुना ,सुना सुना
सुना सुना ,सुना सुना
सुना सुना सुना
एजी वीर अहीर गढ़ा सुझबल के ,छाहुर ओखर नाउ
पदुम कथइया पुरिखा जेखर कैउटी जइसन गाँव
भइया एक समय के बाति बताई कही ता कउनउ कथा सुनाई
ए पूजत के दरकी बोकरय हेराय गा का
समझि गयन भइया समझि गयन के अपना का कहय चाही थे
कि पहेली ना बुझाई सउहंय सउंह कथा सुनाई
पय भइया इया बाति ता अपना हमरे कानेउ मा कहि सकत रहन
कहि सकत रहन न ? हां ,पय दुसरे के फटे मा गोड घुसेरय के अलगय उराव होत है ...
ता भइया रेवा नदी के किनारे एक दिन सातउ बहिनी दुर्गा, फूलमती, रनीकुमारी,चंडी , शारदा अष्टभुजी अउ अलोपन माई बड़े भिनसारे नहाय खातिर गयी ऊं पंचे नहातय रही की देखिन कि बड़ी-बड़ी मुर्रा भइसि ,गाय झुण्ड के झुण्ड चली आवत लागि हमा |
ता कइसन - खरिका के खरिका उतरी आमा भइसी गऊ हज़ार
सातउ रे बहिनिया भउचकि रहि गई दिखय एक चरवाह

भइया खरिका के खरिका भइसि गाय नदी के करारे कय चली आबत लाघि हमा अउ घोर अचरज ता इया की एतने बड़े गऊँहार मा केवल एक्खे चरवाह हैं उहउ आगे -आगे रेंगत लाग हय अउ सब गोरूआरि पाछे-पाछे अइसन पछियान आबा थां जइसन के दिन के पीछे राति अंधियार के पीछे अंजोर अउ सुरुज के पाछे जोंधइया | अइसनय बतकहाऊँ चलतय रही कि उही साइत रनी कुमारी पूँछि मारिन कि इया चरवाह के आय ? सगली खरिकवारि ओखरे पाछे-पाछे चली आबत लागि हमा | तब दुर्गा कहिन कि इया गढ़ सुझबल के अहिर आय अउ एखे बहुत गोरू गाय हमा पय एकउ ठे लड़का नहीं आहीं एसे कबो-कबो हमका इया लागाथय कि ब्रम्हा जी एतने बड़े पशुपालक का एक्खे लड़का बाहर तरसाय दिहिन

कइसन भइया -कि अमबा ता फरे हां घउदबन इमिली झपकबन हो
अब हमका ता दिहा तरसाय तू एक ललन बिन हो
लोनबा ता मिलय रे उधार कि तेलबा उधारय हो
अब कोखिया के कउन उधार जबय राम देइहीं तबय हम पउबय हो
गंगा नहाए सतिक फल तिरथ कोटिक फल हो
अब कोखि उपजाए जनम फल ललन खेलाये के हो

ता भइया, रनी कुमारी जब इया बाति सुनिन ता ओनखर करेजा भरि आबा आंखी से आंसु चुअय लांगी अउ ऊ उंही साइत इया प्रन करिन कि अब चाहे कुछु होय ए अहिर का संतान प्राप्ति होई | जब इया मेर के प्रन रनी कुमारी कय लिहिन तब छबउ बहिनिउ रनीकुमारी के साथ प्रन करिन अउ संझा होतय वो अहिर के सपने मा जाय के कहिन कि –

रंग महल तय छाये रे अहिरा कुंदिरा मा करे निवास
तोर देहिया काहे गढ़ी के गलय रे बरहू मास
नउ महिना के बीतत तिथिया दिन नउमी हो
होत भोर भिनसारे पहु के फाटत हो होइही तोरे कुंदिरा कुमार

ता इया मेर के नउ महिना के बीतत सातउ बहिनिन के परताप से कृपाल अहिर के इहन एक्खे अस सुन्दर लड़िका भा | जेखर नाउ धाराइन पंडित जी छाहुर | अउ

ता भइया भईस बदे तू उजरवा का हो कही गौहार
गाव मेडौरे बाति छिटिकैही थू थू अत्याचार
रेंगी चला हो रजा बुधि रानी से लेई
बढ़ी भईसि छाहुर के
रानी कहा ता साझय लई बेढ़ाय
ना कोहू के खेती चरावय ना बन कोनऊ गाय
कउन खुआ लगाय के राजा लाउब अहिर का लूटी
ना सामन समनहिय दिहिस न भादउ घिउ के भाग
इहय खुआ लगाय के रानी लउब अहीर का बेड़ी

चदैनी – देश की तमाम गाथा गायन परम्पराओं में से चदैनी गाथा गायन परम्परा की अपनी विशेषता है क्योंकि चदैनी किसी एक राज्य में नहीं बल्कि उत्तर भारत के तमाम क्षेत्र विशेषों में गाई जाता है | यह मौखिक परम्परा का लोक महाकाव्य है इस कारण इसमें सामंज और जातीय ज्ञान परिपाटी से सम्बंधित तमाम उपकथायें भी हैं जो की एक महाकाव्य में होना चाहिए | बुन्देलखण्ड में आल्हा गायकी प्रसिद्ध है वंही बघेलखंड में प्रख्यात चदैनी गायकी की कुछ पंक्तियाँ हम उदाहरण रूप में देखते हैं –

"राम- राम भैया रामय राम
राम पर धरी आबा आजु हो धियान
राम कय रटनिया बिसरत नहीं आय
दिन बिसरय रे नहीं रतिया हो आजु
राम के रटनिया ता परन हो आधार
हो भइया जब तक इया चोलबा मा प्रान
सरबा का सुमिरी सरसतिया का आजु
खेलबा का सुमिरी ददा आजजु घमसान
सुमिरी रे भुइयां रे भावानी का आजु
अउ मरजादा हय तौरेन हाथ
सुमिरी सरद मइहर का हो आजु
सूढ़े का सुमिरी अउ कठिगर नाथ
देउ रे तलाये कासी बाबा हमार
अउ महामाई रतन पुर केर
सुमिरी अउ देवी गोरइया का आजु
हो भइया जे हां पुरिखन के पुजमान
सातउ रे बहिनि देवी दुरगा हो आजु
मनमा रे देवी आजु करयं हो विचार
चला-चली बहिनी आजु गंगा हो नहाय
गंगा मा नहाए तन पबरित होइ जाय
चलि दिहिन देंवी दुरगा हो आजु
आगे- आगे चलयं सरसतिया हो आजु
पाछेन चलय देवी दुरगा हो आजु
पहुंचे हो जांय भइया गंगा कय किनार
बगरी हो गाय अहिरबा कय आजु
गोहराय पूँछय देवी दुरगा हो आजु
सुनु-सुनु अहिरा तहू रे बलिमान
हो भइया गहिरा घाट रे बताउ
एतने मा बोलय अहिर बलिमान
सुनु-सुनु माता अरजिया हमार
गंगा कय किनरबा कदम एक पेड़

अरे माता उंही तरी गहिल हो घाट
हिलि परी हां देवी दुरगा हो आजु
टोरयं लंउची कदम कय डारि
हो भइया करय हो दतीमन लागि
करय रे दतीमन देवी दुरगा हो आजु
पहिल बुडिकी मारय देवी दुरगा हो आजु
मनबा रे देवी करयं रे विचार
चला-चली बहिनी घर सोनरा कय जाब
अउ सोनरा दुकनिया मा बइठब जाय
हो भइया लेबय सोनेन कय हार
दूसर बुडिकी मारय देवी दुरगा हो आजु
मनबा रे देवी करयं रे विचार
चला-चली बहिनी घर लोहरा कय जाब
अउ लोहरा मड़इया मा बइठब जाय
हो भइया लेबय नसेन गढ़बाय
तीसर बुडिकी मारय देवी दुरगा हो आजु
मनबा रे देवी करयं रे विचार
चला-चली बहिनी घर कोंहरा कय जाब
अउ कोंहरा के चकबा मा बइठब जाब
हो भइया लेबय नस-नस गढ़बाय
चउथि बुडिकी मारय देवी दुरगा हो आजु
मनबा रे देवी करयं रे विचार
चला-चली बहिनी घर पंडित कय जाब
अउ पंडित के पोथिया मा बइठब जाय
हो भइया जंहा बोलय घंट चहुँ ओर
पांचउ बुडिकी मारय देवी दुरगा हो आजु
मनबा रे देवी करयं रे विचार
चला-चली बहिनी गढ़ महोबा अडार
महोबा के ठाकुर हय बामन बीर
अउ सोनरा दुकनिया मा बइठब जाय
पहिल सोत मारी भइया बामन बीर
हो भइया लेबय दुधेन कय धार
चल दिहिन भइया देवी दुरगा हो आजु
पहुंची जाय भइया गढ़ महोबा अडार
रखरी हां गाय बमनबा के आजु
रकरा अउ बछरू बांधे हमा आजु
सोबा थय अहिरा गोडइहिन तान
पहुंचि हो जांय देवी दुरगा हो आजु
मनबा मा देवी करय रे विचार

का कही भाई कहिउ हो नहीं जाय
रखरी हां गाय बमन के रे आजु
रकरा अउ बछरू बंधे हमा लाग
अरझि-परझि मरि जइहीं जु आजु
मूड़े परी अपरधिया हो आजु
सोबा थय अहिरा गोड़इया तान
सोबत निदिया जगउबय जु आजु
केतना परी हो अपराध
त सपना के शरीर बनाबय लागि
सपना रे होय रे अहिरबा का आजु
सपनेन गाय चरि लउटय लागि
तोर भाखा थां गोबर कय लीद
एतने मा उठा हय अहिर बलिमान
हाथ फेरि मुहे मा बइठि गा हय लाग
एंह कय अउ ओंह कय निहारय हो लाग
मनबा ता अहिर करय रे विचार
का कही भाई कहिउ रे नहीं जाय
धंउ तोर बिगड़ा मोर खरिका अडार
धंउ तोर बिगड़ा घरे के पुजमान
धंउ तोर बिगड़ा गोरइया रे आजु
धंउ बिगड़ा देउ तलाये रे आजु
हो भइया सपना रे भयानक होइ
एतने मा बोली देवी दुरगा हो आजु
झन सुन अहिरा तहू रे बलिमान
न तोर बिगड़ा हय खरिका अडार
न तोर बिगड़ा घरे के पुजमान
न तोर बिगड़ा गोरइया रे आजु
हम ता रे आहन देवी दुरगा तोंहार
का कही भाई कहिउ रे नहीं जाय
गांउ-गांउ अहिरा ऊ घर दुइ-चार
हो भइया बिरही देते रे सुनाय"

निर्गुण भजन – निर्गुण भजन गायन परम्परा में कबीर की उलटबासियो के अलावा लोक की मौखिक परम्परा के बहुत से मृत्यु संस्कार के उपरान्त गाये जाने वाले गीत भी शामिल हैं। इन गीतों में प्रकृति, मानव जीवन सार ,प्राणी मात्र के प्रति सहानुभूति की बत स्पष्ट होतीहै जो इन पंक्तियों में देखने को मिलती है।

" काहेन केर महलिया रे काहेन निवासा होय
अउ काहेन महलिया लगी बड़ेरी काहेन बनी हय छानि

माटिन गारा केर बनी महलिया माटी जीउ निवासा होय हो
कगजय महलिया लगी बड़ेरी भागि लिलारे बनी छानि हो
राम जी पिंजरा अउ रामय सुअना बनि बोलयं मनइहीं बानि रे
खुली पिंजरवा उडिही राम सुअना जइ रंगमहलिया भहराय हो"

कुछ इसी तरह की जीव जगत और उसकी नश्वरता के सम्बन्ध में अहीर जाति में बिरहा गाये जाते हैं जिन्हें हम निर्गुण भजन की श्रेणी में रख सकते हैं | यदि हम इसे निर्गुण भजन के रूप में अलग न भी करें तो यह जातीय गायकी अनुसार छरहा कहलायेगा | छरहा एक विशेष तरह की शब्दावली है जिसका मतलब है गीतों का एक समुदाय विशेष जिसके अंतर्गत एक तरह के विषय वाले गीत रखे जाते हैं | और हाँ कथावस्तु तो एक होती ही है साथ ही सवाल- ज़वाब की परम्परा भी उसी क्रि के आधार पर होनी चाहिए और हैं भी | सवाल जावाब वाली रीतियों में जब दो व्यक्ति आपस में भिड़ते हैं तो इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि-कथ्य से बाहर जाकर ज़वाब न दे और न ही सवाल करे वर्ना ऐसा करने वाले की हार स्वीकार की जाती है | अब बताइए जो समुदाय जो समाज कला को प्रतिस्पर्धात्मक रूप में देखता हो तो उस कला की ज्ञान परिपाटी क्या होगी, एक बेहतर समाज निर्माण में उस समाज की क्या भूमिका रही होगी | चूंकि आज भी आवश्यकता है ऐसी ज्ञान परिपाटी की जो मानव को मानव रहने दे |

मोरध्वज गाथा – चदैनी गाथा गायन शैली में मोरध्वज की कथा नहीं कही जाती लेकिन अन्य जातियों की तरह अहीर भी राजा मोरध्वज की कथा कहते हैं | गाथा गायन परम्परा में मोरध्वज का अपने वचन पालन के लिए अपने पुत्र का मांस तक पका देना यह आज के परिवेश के हिसाब से ठीक नहीं और कभी नहीं रहा होगा | लेकिन यह बात भी सत्य है की प्रजा के समक्ष राजा को राजा की परिभाषा के दायरे में रहना उसकी सत्यता की पहचान है और आज भी यह ज़रूरी है लेकिन आज का समाज और उसे चलने वाले जनप्रतिनिधि अपनी सत्यता से दूर भागते जा रहे हैं इस स्थिति में किस तरह का समाज निर्मित हो रहा है यह हमारे सामने ही है | यह गाथा गायन परम्परा हमें अतीत की और नहीं बुलाती लेकिन हमे अतीत से सीखने को ज़रूर कहती है |

"मोरध्वज एक राजा रहे ,बड़ा दानिया राजा रहे
दानी-दानी दुनिया कहय ,ओनखे बराबर नहीं आय दानी
तब बोलयं विष्णु भगवान ,सुनीला अर्जुन हमार बाति
मोरध्वज एक राजा हमा ,चला परीक्षा लेई ओनखर
विष्णु भगवान साधू बनि जाय ,अर्जुन वीर शेर बनि जांय
साधू, शेर दूनउ पहुंचे जांय मोरध्वज के द्वारे मा

कृष्ण गाथा – अहीर जाति अपनी जातीय गाथा गायन परम्परा के अंतर्गत तमाम लोक में प्रचलित कथाओं का गायन करती है,उन कथाओं में से कृष्ण कथा का गायन भी प्रमुख है जो की बिरहा गायकी शैली अंतर्गत है | कृष्ण कथा के बहुत से अंश इस गाथा गायन परम्परा के अंतर्गत है लेकिन मैं अभी कालिया दह की कथा के ज्ञान परिपाटी जो की यादव जाति की शैली में नये प्रयोगों और मीमांसा के साथ प्रस्तुत होती है –

"धन्य धन्य हो किसिन महाराज जो लेई किसना के नाउ |

तरी जई ऊ भव सागर पार जय गंगा ||
हंसिके बोलय कनइया राज सुनि ला जसोदा बाटी हमार |
हमका जय दा खेलन माय जय गंगा ||
कलिया दह हम खेलय जाब अउर चराउब जमुना गाय |
माया सुनि ला बाति हमार जय गंगा ||
लाला कलिया दह मा काला नाग उंहा न जा तू खेलय लाल |
जमुना नहीं चराबा गाय जय गंगा ||
माया मोरइ बनायी दुनिया आय मोरइ रचाई दुनिया आय |
हमका केहू के डेरी नही आय ||"

कुछ प्रमुख चदैनी गाथा गायकों के साक्षात्कार -:

शोध कार्य के दौरान बघेलखंड क्षेत्र के विभिन्न ग्रामो में निवासरत अहीर समुदाय के प्रतिनिधि कलाकारों से इस गाथा गायन परम्परा के सम्बन्ध में जो चर्चाएं हुई ,जो नए तथ्य सामने आये उसे मैं निम्नवत प्रस्तुत कर रहा हूँ –

1.रामप्रसाद यादव– रामप्रसाद यादव जी सीधी जिले के सिरसी ग्राम के निवासी हैं | ये चदैनी गाथा गायन के प्रतिष्ठित और लोकमान्य कलाकार हैं | शोध कार्य के दौरान रोशनी प्रसाद मिश्र की जो इनसे बातचीत हुई उस चर्चा का अंश निम्नवत है-

सवाल-आप का नाम बताएं ? आप किस ग्राम के निवासी हैं ?

ज़वाब-मेरा नाम रामदास यादव है, और मै सिरसी ग्राम का निवासी हूँ |

सवाल-आप की यह गायन परम्परा कब से है ? और इस गायन परम्परा का गायन आप कब से कर रहे हैं ?

ज़वाब-यह गायन परम्परा तो भगवान् कृष्ण के ज़माने से चली आ रही है | रास लीला किया करते थे भगवान् कृष्ण और बाद में उनकी जाति के हम लोग अहिराई और गाथाओं, कथाओं का गायन करते हैं | मैं इस गायन परम्परा को पिछले ४० वर्षो से गा रहा हूँ ४० वर्ष से पहले के दिनों में मैंने इसे अपने ननिहाल में सीखा था |

सवाल-जिस गायन परम्परा के आप संवाहक है उसे चदैनी या अहिराई क्यों कहते हैं ? क्या आप का जातीय नाम आप की गायन परम्परा के नाम पर है या आप के जातीय नाम पर आप की गायन परम्परा ?

ज़वाब-चदैनी गाथा में वीर बामन और लोरिक चन्दा की प्रेम कथा गाई जाती है चन्दा कथा की नायिका के नाम पर गाथा का नाम चदैनी पडा है और अहिराई के बारे में आप से कहें तो दरअसल जाति अहीर के नाम पर हमारे नृत्य परम्पराओं का नाम अहिराई पडा है | जाति के नाम पर विशेष नाम पडा है अहिराई न की कलारूप के नाम पर जाति का नाम पडा है |

सवाल-कौन- कौन से गीत, कथा, और गाथाओं का गायन करते हैं अहीर जाति के लोग ?

ज़वाब-अहीर जाति के लोग चदैनी, ललना, छाहुर, चंदनुआ, गढ़-केउंटी, पदुम-कंधइया, बनजोरबा, अहिराई नृत्य, अहिराई-लाठी नृत्य, कलशा नृत्य, सजनई गायन, बिरहा गायन और तमाम लोक में प्रचलित कथाओं का गायन करते हैं|

सवाल-आपकी जातीय प्रतिनिधि की सारी गाथाओं में अहीर का लड़का राजा की लडकी से विवाह क्यों करता है ?

जावाब- नहीं सारी गाथाओं में ऐसा नहीं होता एक दो कथाएं हैं जिनमे उसे वंहा के राजा के लड़की से प्रेम होता है और राजा से उसकी लडाई होती है | अहीर यदुवंशी हैं उनकी राजकीय वंश परंम्परा रही है महाभारत में कृष्ण को देखिये और तमाम पौराणिक कथाओं में यादव जाति के राजकीय उल्लेख हैं अब आप लोग तो पढने लिक्घने वाले हैं अआप लोगों को क्या बताएं | तो राजा- राजा में लडाई हुआ करती थी न की राजा और प्रजा में | हाँ इन कथाओं में छाहुर और चंदनुआ ज़रूर राजा की प्रजा हैं लेकिन पशुपालक हैं | ये अपनी जातीय पारम्परिक व्यवसाय के साथ यंहा हैं जिसके लिए राजा भी उन पर गर्व करता है | पशुपालक तो भगवान् कृष्ण भी थे तो क्या छोटे थे वो काम तो ईश्वर की तरह होता है चाहे वो जिस भी तरह का हो |

सवाल-पारम्परिक रूप से आप की गायकी के अंतर्गत आल्हा गायन भी आता है क्या ?

ज़वाब- हाँ, आल्हा और उदल तो यादव पुत्र ही थे और पूरी आल्हा कथा ही इन पर निर्भर करती है | दरअसल आल्हा गायन की परम्परा उस काल के तामाम छोटे-बड़े राजघरानो के आपसी विरोध और परस्पर युद्ध की एक अमिट छाप है जो की तमाम अन्य जातियों पर भी प्रभावी रही | हमारे अलावा देश की अन्य जातियां और अन्य राज्यों में भी यह गाथा गाई जाती है |

सवाल- आप सैरा भी गाते हैं मैंने ऐसा सुना है | मुझे बताइये की यह सैरा है क्या ?

ज़वाब- सैरा यात्रा गीत है, बघेलखंड मे दो तरह के यात्रा गीत प्रचलन में है एक तो बम्भुलिया जब घर के लोग किसी तीर्थ यात्रा पर जाते हैं तो यह गीत गाते हैं | पुराने जामाने के लोग दल बनाकर तीर्थ यात्रा के लिए जाते थे तब पूरे रास्ते बम्भुलिया गाते हुए जाया करते थे | उसी तरह अहीर जाति के लोग भरी सैरा का गायन करते हैं यात्रा के समय या सवाल ज़वाब की परम्परा में गाया जाता है और आशु कविता कहते हैं इसके गाने वाले यानी की हम इस परम्परा करे लोगो को आशु कवि भी मानते हैं | जितनी सुन्दर रचनाये आपको सैरा या टप्पा में मिलेंगी शायद ही अन्यत्र मिले |

सवाल-एक सैरा सुनाइये ?

ज़वाब- सैरा अभी तो बड़े-बड़े नहीं याद हैं है क्या की बिना मौसम के कोई गीत याद नहीं आते पर लीजिये आपको एक गीत सुनाता हूँ |

"गंगा जमुना के पुल टूटे, गोकुला मा कंधइया दहिया लूटे
नदिया किनारे गड़ी रे झबरी,कउने कुब्जा के पड़ी गयी रे भमरी"

सवाल- चदैनी सुनाइये सुमिरनी के बाद की |

ज़वाब- चदैनी गाथा गायकी को वैसे हम जोड़ी के साथ बैठकर प्रस्तुत करते हैं पर आप को कुछ सुना देता हूँ सुमिरनी के बाद देवी दुरगा बामन के यंहा जाती हैं –

चला-चली बहिनी गढ़ महोबा अडार
महोबा के ठाकुर हय बामन बीर

अउ सोनरा दुकनिया मा बइठब जाय
पहिल सोत मारी भइया बामन बीर
हो भइया लेबय दुधेन कय धार
चल दिहिन भइया देवी दुरगा हो आजु
पहुंची जाय भइया गढ़ महोबा अडार
रखरी हां गाय बमनबा के आजु
रकरा अउ बछरू बांधे हमा आजु
सोबा थय अहिरा गोडइहिन तान
पहुंचि हो जांय देवी दुरगा हो आजु
मनबा मा देवी करय रे विचार
का कही भाई कहिउ हो नहीं जाय
रखरी हां गाय बमन के रे आजु
रकरा अउ बछरू बंधे हमा लाग
अरझि-परझि मरि जइहीं जु आजु
मूड़े परी अपरधिया हो आजु
सोबा थय अहिरा गोड़इया तान
सोबत निदिया जगउबय जु आजु
केतना परी हो अपराध
त सपना के शरीर बनाबय लागि
सपना रे होय रे अहिरबा का आजु
सपनेन गाय चरि लउटय लागि
तोर भाखा थां गोबर कय लीद
एतने मा उठा हय अहिर बलिमान
हाथ फेरि मुहे मा बइठि गा हय लाग
एंह कय अउ ओंह कय निहारय हो लाग
मनबा ता अहिर करय रे विचार
का कही भाई कहिउ रे नहीं जाय
धंउ तोर बिगड़ा मोर खरिका अडार
धंउ तोर बिगड़ा घरे के पुजमान
धंउ तोर बिगड़ा गोरइया रे आजु
धंउ बिगड़ा देउ तलाये रे आजु
हो भइया सपना रे भयानक होइ
एतने मा बोली देवी दुरगा हो आजु

सवाल- आप से इस गाथा गायकी को अब तक किसी ने सीखा है ?

ज़वाब- नहीं अभी तक हमसे किसी ने नहीं सीखा |

सवाल- आपको क्या लगता है की इस परम्परा के संरक्षण की दिशा में क्या कार्य होने चाहिए ?

ज़वाब- सर्वप्रथम तो यह व्यवसाय बने तभी आगे की पीढ़िया इसमें रूचि लेंगी | ऐसा नहीं है लोग सीखते नहीं हैं पर चाहकर भी उसका प्रदर्शन नहीं कर पाते क्यों की रोज़गार के चक्कर में वो देश-परदेश भटक रहे होते हैं | अब ऐसे में मैं क्या कहूं कि यह और कितने दिन तक जीवित बची रहेंगी |

2. सोभई यादव– सोभई यादव से रोशनी प्रसाद मिश्र की जो चदैनी गाथा गायन शैली ,परम्परा ,सांस्कृतिक चेतना को लेकर जो बाते हुई वो जस की तस प्रस्तुत है |

सवाल- आपका नाम क्या है ?

ज़वाब- मेरा नाम सोभई यादव है |

सवाल-आपकी उम्र क्या है ?

ज़वाब- मेरी उम्र ४९ वर्ष है |

सवाल-आपके गाँव में चदैनी या अहीर जाति के कलारूपो को पारम्परिक रूप से गाने वाले कलाकारों की कुल संख्या कितनी होगा ?

ज़वाब- अहीरों की कुल जनसंख्या ७९ के आस-पास होगी जिसमे से पारम्परिक रूप से गाथा या कलाकारी करने वाले ८ लोग हैं |

सवाल- आप यह गाथा कितने सालों से गा रहे हैं ?

ज़वाब- हम यह गाथा लगभग ३९ सालों से गा रहे हैं |

सवाल- अहीर जाति के पारम्परिक रूपों में से आप कौन-कौन सी कलाओं का प्रदर्शन करते हैं ?

ज़वाब- चदैनी, छाहुर, सजनयी ऐसी ही कुछ और जैसे नृत्य भी कर कर लेते हैं |

सवाल- काका, आप अपनी जातीय विवाह परम्परा के बारे में बताइये मैंने सुना है कि अहीर जाति में बाकी जातियों से भिन्न रूप में विवाह की प्रथा प्रचलन में है | वो परम्परा कैसे चलन में आयी और इसकी समाज में क्या उपयोगिता रही है और उसके आज चलन में न होने से कोई ख़ास प्रभाव देखने को मिलता है क्या ?

ज़वाब-देखिये पहले की जातीय वैवाहिक परम्परा के बारे में बाताएं तो वह उस काल के हिसाब से थी अब समय बदला है तो रश्म-रिवाज़ भी बदल गए | पहले क्या होता था की हमारे जाति में ब्रम्हाण विवाह न कराते थे हमारे ही रिश्तेदार शादी कराने बैठते रहे हैं और हमारे जाति में द्वार-पूजा जैसी कोई बनावटी परम्परा नहीं होती थी | होती द्वारपूजा ही थी पर बिलकुल अलग घराती लोग कलश लेकर बारातियों का स्वागत किया करते थे और फिर लहकौर हुआ करता था गायन- वादन के साथ बारातियों का स्वागत हुआ करता था | लहकौर में सवाल-ज़वाब की परम्परा हुआ करती थी घराती-बराती के बीच यह प्रतिस्पर्धात्मक रूप में हुआ करता था | कालांतर में इसके रूप में परिवर्तन हुआ और अब यह न के बराबर है | अब तो दूसरे तरह की नृत्य परम्पराए आ गयी हैं जिसमे कोई भाव नहीं है समझ नहीं आता की लोग क्या कर रहे हैं | बारातियों को खाना खिलाने के बाद शुरू होती थी अहिराई जो रात भर हुआ करती थी यंहा तक की जब तक हारने-जीतने का निर्णय नहीं हो जाता तो सुबह तक भी चला करती | पहले तीन तक बरात रुकती थी जिसे हम लोग बसी कहते थे यही मेल मिलाप का समय था हम लोग एक-एक व्यक्ति से परिचय करते

हाल- चाल पूछते तीन दिन तक बरात में आये लोगो की मेहमाननबाजी की जाती और अब तो भूसा की तरह गाड़ियों में भरतें हैं और ले जाके पटक देते हैं | यही है विवाह की परम्परा जो अब तो कंही देखने को नहीं मिलती |

सवाल- क्या आपकी जाति में प्रेम विवाह का चलन था ?

ज़वाब- हाँ था और अब भी है पर अब बदल गया है अब तो लड़का-लड़की भाग के विवाह करते हैं | पहले गायकी और जातीय गुण देख कर कर दिया जाता था | अहिराई नृत्य करते समय ही लड़का-लडकी एक दूसरे को पसंद करते और फिर अगली अहिराई में कंही मुलाक़ात हो तो लडकी लड़के से हार जाती और उसके साथ चली जाती, यह था वास्तव में प्रेम विवाह जो अब नहीं रहा | आजकल का प्रेम बताइये १०० में १०-२० ही सफल होते हैं नहीं तो छोंड देते हैं |

सवाल- आप चदैनी की कुछ पंक्तियाँ सुनाइये ?

ज़वाब- चदैनी गाथा गायकी तो वैसे बहुत बड़ी है लेकिन हम आपको सुमिरनी की कथा सुनाते हैं |

"राम- राम-राम भैया रामय राम
राम पर धरी आबा आजु हो धियान
राम कय रटनिया बिसरत नहीं आय
दिन बिसरय रे नहीं रतिया हो आजु
राम के रटनिया ता परन हो आधार
हो" कलम डुगीही मसियानी जू आजु
एकउ अक्षर डुगिहीं जू आजु
अक्षर डुगय न ददा मनबा तोंहार
तब हम कहब चदैनी के बानि
नहीं माता मेढूली करब भंडफोर

पचरा- ओसरा से निकरय दुअरबा मा ठुनकय
कहय नहीं हो जाबय न
बिन पइरी केर गमनबा नहीं हो जाबय न
हुक्का फोरय चिलम दय मारय
लतबउ चारि भतारेउ का मारय
ओनखर दिदबा देखा न
धरइबा नइहर कय डगरिया ओनखर दिदबा देखा न

सवाल- आप की गायन शैली को क्या आपके बच्चे लोग सीख रहे हैं ?

ज़वाब- नही अब इस गायन परम्परा को सीखने के लिए नये लोगो में उत्साह नही है | पहले हम लोग इसे गाकर ही अपना भरण-पोषण करते रहे हैं लेकिन अब न तो कोई सुनता है और न ही उतना सम्मान देते हैं तो यही कारण कोई सीख भी नही रहा | किसलिए सीखेंगे इसे सीख कर क्या करेंगे ऐसा हमारे बच्चे लोग पूंछते हैं |

सवाल- यदि सरकार इस परम्परा को बचाने के लिए कोई उपाय करे तो क्या आप लोग नई पीढी को सिखायेंगे |

ज़वाब- सरकार अगर मुफ्त मे करायेगी तो करके क्या करेंगे जब पेट चले तो सीखेंगे और सिखायेंगे भी |

सवाल-चदैनी गाथा जो आप लोग गाते हैं क्या उससे आप लोगो का कुछ आर्थिक सहयोग होता है?

ज़वाब- कभी नहीं हुआ |

सवाल- आप चंदनुआ गाथा भी गाते हैं उसे भी सुना सकते हैं क्या ?

ज़वाब- चंदनुआ पूरी तरह याद नहीं है मुझे पर जो कुछ याद है उसकी एक दो पंक्तियाँ सुनाता हूँ आपको – अरे राम लालन ललन मोरे गोंइया

पर सूना न ललन मोरे राम

कहमा के आहीं चीरी बांधी पय कहमा गयीं हां रिसाय

अरे राम लालन ललन मोरे गोंइया

3. **सुखलाल व नंदलाल यादव -** आप दोनों सगे भाई हैं और चदैनी के सिद्धहस्त कलाकार हैं दोनों एक साथ बैठकर चदैनी गाथा का गायन करते हैं दोनों की उम्र लगभग क्रमशः १०० और ९७ है | इन परम्परा पुरुषो से रोशनी प्रसाद मिश्रा की हुई बातचीत के कुछ अंश हम यंहा प्रस्तुत कर रहे हैं –

सवाल- आप का नाम ?

ज़वाब- सुखलाल यादव और नंदलाल यादव

सवाल- आप के गाँव का क्या नाम है ?

ज़वाब-खोखरा

सवाल-आप यह गाथा गायन कब से कर रहे हैं ?

ज़वाब-मुझे यह गाथा गाते हुए लगभग ६९ साल हो गये |

सवाल-इस गाथा गायन के लोग क्या -क्या कथा सुनाते हैं ?

ज़वाब- चदैनी, छाहुर, ललना, बनजोरबा, चंदनुआ आदि कथाएं हमे कंठस्थ हैं और हमारी जाति की पारम्परिक नृत्य विधाएं भी हैं |

सवाल-क्या अब आप के बच्चे इस गाथा गायन को गाते हैं ?

ज़वाब-नही,वो अब नहीं करते उन्हें शर्म आती है | वो इधर-उधर घूमने मेंअपना सम्मान समझते हैं | उनके संजोडी उनकी हंसी उड़ाते हैं की अब तुम भी अहीर ही बनोगे | सत्य तो यही है की अहीर ही हैं पर क्या करे पढ़े हैं आज के लोग पर लढ़े नहीं हैं |

सवाल-मैंने सुना है की आप लोग रात-रात भर इस गाथा का गायन करते थे क्या यह बहुत बड़ी गाथा है ?

ज़वाब-हां, यह रात भर गाई जाने वाली गाथा है | रात भर हम लोग गाते थे तब जाके कंही पूर्ण होती थी | चदैनी को मध्यप्रदेश के सीमावर्ती राज्यों में लोरिक-चंदा, लोरिकायन और चनैनी के नाम से भी जाना जाता है | बघेलखंड में चदैनी के संबंध इसके गायकों का कहना है कि यह रामचरित मानस से बडी है इसमें कुल बारह सर्ग हैं जिसमे वीर बामन और लोरिक- चन्दा प्रेम कथा का वर्णन है साथ ही दर्जनों उप

कथायें भी हैं | चदैनी है तो मूलतः यादव जाति का प्रतिनिधित्व करने वाले लोक प्रसिद्ध नायको की गाथा गायकी, पर इस गाथा को बघेलखंड में कुम्हार, बसोर, यादव, तेली आदि जातियां भी गाती हैं |

सवाल-यदि इस कला से आप लोगो को रोज़गार मिला तो क्या आप लोग इस परम्परा के लिए गायन करते रहेंगे?

ज़वाब-जी बिलकुल करेंगे ,क्यों की हमे जीवन यापन ही तो करना है | और आदमी जीता किसके लिए है ?

सवाल- आप लोग जब अपनी गाथा का प्रदर्शन करते रहे हैं तब आप लोगो का सामाज से सम्मान जो एक कलाकार का होना चाहिए मिलता रहा है ? और आज क्या स्थिति है उसकी ?

ज़वाब-बघेलखंड से बाहर हम लोग जाते हैं तो बड़ा सम्मान करते हैं ,और हमारा गीत सुनने को भीड़ लगती है थी हमने कभी मंच प्रदर्शन नहीं किया अपने रिश्तेदारों के यंहा ही प्रदर्शन किया करते थे लेकिन वंहा भी पूरे गाँव के सभी जातोयों के लोग हुआ करते थे सम्मान मिलता था परिच्जय होता था | हमारे लिए तो समाज में अब भी वही भाव है अब भी सभी जातियों के लोग हमारा आदर करते हैं प्रेम और स्नेह से मिलते हैं | कभी- कभी सोचते हैं की कलाकार की कोई जाति नहीं होती क्योंकि गाँव में जंहा जाति का विभाजन है वंहा भी हमे कलाकार की हैसियत से लोग सम्मान देते हैं ऐसा कभी किसी ने एहसास नहीं कराया की हमनीची जाती के हैं | यंहा तक की लोग हमें काम पर जाने के लिए भी नहीं बुलाते ल्कहते हैं की अरे वो कलाकार आदमी किसी दूसरे को बुला लेना |

सवाल- आप चदैनी गाथा के प्रसिद्ध और सबसे बुजुर्ग कलाकार हैं मेरी इच्छा है की आप दोनों लोग एक साथ जैसा की सालो से आप लोग गाते आये है कुछ सुनाइये ?

ज़वाब- अब उतनी राह तो नहीं जाती पर सुनाते हैं –

"राम- राम भैया रामय राम
राम पर धरी आबा आजु हो धियान
राम कय रटनिया बिसरत नहीं आय
दिन बिसरय रे नहीं रतिया हो आजु
राम के रटनिया ता परन हो आधार
हो भइया जब तक इया चोलबा मा प्रान
सरबा का सुमिरी सरसतिया का आजु
खेलबा का सुमिरी ददा आजजु घमसान
सुमिरी रे भुइयां रे भावानी का आजु
अउ मरजादा हय तोरेन हाथ
सुमिरी सरद मइहर का हो आजु
सूढ़े का सुमिरी अउ कठिगर नाथ
देउ रे तलाये कासी बाबा हमार
अउ महामाई रतन पुर केर
सुमिरी अउ देवी गोरइया का आजु
हो भइया जे हां पुरिखन के पुजमान

सातउ रे बहिनि देवी दुरगा हो आजु
मनमा रे देवी आजु करयं हो विचार
चला-चली बहिनी आजु गंगा हो नहाय
गंगा मा नहाए तन पबरित होइ जाय
चलि दिहिन देंवी दुरगा हो आजु
आगे- आगे चलयं सरसतिया हो आजु
पाछेन चलय देवी दुरगा हो आजु
पहुंचे हो जांय भइया गंगा कय किनार
बगरी हो गाय अहिरबा कय आजु
गोहराय पूँछय देवी दुरगा हो आजु
सुनु-सुनु अहिरा तहू रे बलिमान
हो भइया गहिरा घाट रे बताउ
एतने मा बोलय अहिर बलिमान
सुनु-सुनु माता अरजिया हमार
गंगा कय किनरबा कदम एक पेड़
अरे माता उंही तरी गहिल हो घाट
हिलि परी हां देवी दुरगा हो आजु
टोरयं लंउची कदम कय डारि
हो भइया करय हो दतीमन लागि
करय रे दतीमन देवी दुरगा हो आजु
पहिल बुडिकी मारय देवी दुरगा हो आजु
मनबा रे देवी करयं रे विचार
चला-चली बहिनी घर सोनरा कय जाब
अउ सोनरा दुकनिया मा बइठब जाय
हो भइया लेबय सोनेन कय हार

सवाल- क्या आपके बच्चो ने इस परम्परा का निर्वहन करने की जिम्मेदारी ली है ?

ज़वाब- हाँ मेरे बड़े बेटे ने सीखा है गीत वह पूरा गा लेता है पर हम लोगों की तरह उसकी राह नहीं जाती पर गाता अच्छा है | कुछ दिनों में लगातार गाता रहेगा तो बढ़िया गाने लगेगा |

4. भैया लाल यादव- सीधी में कला ग्रांम बकबा अपनी पारम्परिक कलाओं के लिए आज पूरे प्रदेश में जाना जाता है वंहा घसिया, गोंड और अहीरों को मिलाकर कुल आबादी २३०० है जिसमे से १७०० लोक कलाओं का प्रदर्शन करने वाले कलाकार हैं ऐसे काल समर्पित ग्राम में रोशनी प्रासाद मिश्रा की भैया लाल यादव की हुई बातचीत के कुछ अंश –

सवाल- आप का नाम क्या है ?

ज़वाब- मेरा नाम भैया लाल यादव है |

सवाल- आपकी उम्र क्या होगी ?

ज़वाब- मेरी उम्र ४५ साल है |

सवाल- आप के ग्राम का नाम क्या है ?

ज़वाब- मेरे ग्राम का नाम बकबा है |

सवाल- आप के ग्राम में अहिराई के कुल कितने कलाकार होंगे ?

ज़वाब- मेरे ग्राम में अहिराई के कुल १५ लोग हैं जो अहिराई-लाठी का प्रदर्शन किया करते हैं |

सवाल- आपके जातिगत लोक कलारूप कौन कौन से हैं ?

ज़वाब- चदैनी, ललना, छाहुर, चंदनुआ, गढ़-केंउटी, पदुम-कंधइया, अहिराई-लाठी नृत्य और अहिराई नृत्य सहित विरहा का गायन भी हमारी जाति के लोग किया करते हैं |

सवाल- आपके इस जातीय कलारूपो की शुरुआत कब से हुई इस सम्बन्ध में कुछ बताइये ?

ज़वाब- शुरुआत तो आज की है नहीं बहुत पुरानी है क्योंकि हामारे बाबा लोग बताते हैं की उन्होंने अपने बाबा लोगो से सीखा था और यह तो भगवान् कृष्ण के ज़माने से चला आ रहा है | पहले भी गाथा, कथा और नृत्य का प्रदर्शन हुआ करता था और वही परम्परा आज भी चली आ रही है |

सवाल- परम्पराएं क्यों ख़त्म हो रही है इस संबंध में आप कुछ बताइए ?

ज़वाब- परम्पराएं खत्म हो रही हैं क्योंकि अब वो समाज नहीं रहा वो संमाज न रहने का कारण है की समय बदल गया सब अपना-अपना देखने लगे हैं और बेरोजगारी के चक्कर में लोग अपना घर बार छोडकर देश-परदेश भाग रहे हैं तो ऐसे में कलाएं कंठा से बचेंगी | और बहुत से कारण हैं पर मुख्य कारण यही है परम्पराओं के लोगो के दिल से मोह कम होने का | मोह और आस्था ही तो कायम रख सकती है किसी कला को यदि वह ख़त्म हुई तो समझिये कला को खत्म होने को नष्ट होने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगता |

सवाल- आप अहिराई-लाठी युद्ध शैली के नृत्य का प्रदर्शन करते हैं इसके सम्बन्ध में कुछ बताइए ?

ज़वाब- अहिराई-लाठी में हम एक दूसरे पर वार करते हैं | लाठी हमारी जाति में दो तरह से खेली जाती है एक में तो हम सीधा-सीधा युद्ध ही करते हैं और दूसरा कलात्मक प्रदर्शन करते हैं जिसे हम कलात्मक रूप में प्रदर्शित करते हैं उसे अहिराई-लाठी कहते हैं यह ताल पर खेली जाती है | एक दोहा बिरहा गाया जाता है फिर ताल पर लाठी शुरू होती है और क्रमशः धीरे से उठ कर ताल बढ़ने के साथ बढ़ती जाती है | लाठी कुल १२ तरह से प्रदर्शित की जाती है जिसके स्थानीय नाम भी हैं |

सवाल- क्या आपके बच्चो ने इस परम्परा का निर्वहन करने की जिम्मेदारी ली है ?

ज़वाब- हाँ, मेरे बड़े बेटे ने सीखा है और गाँव के छोटे-छोटे बच्चे भी सीख रहे हैं | आहीर के अलावा एनी जातियों के बच्चे भी इसका प्रदर्शन देख-देख कर सीख रहे हैं |

सवाल-आपको क्या लगता है की यदि इसी तरह चलता रहा तो आने वाले दिनों में इस परम्परा का क्या होगा ? क्या इसके पीछे सामाजिक उदासीनता प्रमुख कारण है ? क्या आज भी उतने ही दर्शक वर्ग हैं या इसे सहयोग प्रदान करने वाले लोग हैं ?

ज़वाब- होगा क्या कुछ दिनों में सब नष्ट हो जाएगा और धरती पर आयेगी प्रलय काहे की जब कुछ रहेगा ही नहीं तो क्या होगा | धीरे-धीरे अब दर्शको में भी कमी आयी है और सहयोग की बात तो छोड़ ही दीजिये | सहयोग ने नहीं हमारे कला और परम्परा के प्रति प्रेम ने उसे जीवित रखा था अब कम |

५. राजकुमार यादव- ये अपने कलारूप अहिराई-लाठी के सिद्धहस्त कलाकार हैं |

६. तुलबुल यादव- अहिराई-लाठी सहित गाथा गायकी में भी इन्हें महारथ हासिल है |

७. रघुपति यादव- ये गाथा व अहिराई नृत्य के अच्छे कलाकार हैं जिन्होंने अपनी परम्परा को अपनी नयी पीढी को भी सिखाने का नेक काम किया है |

(यह चदैनी गाथा गायन के द्वितीय चरण का शोध कार्य है |)

रोशनी प्रसाद मिश्र

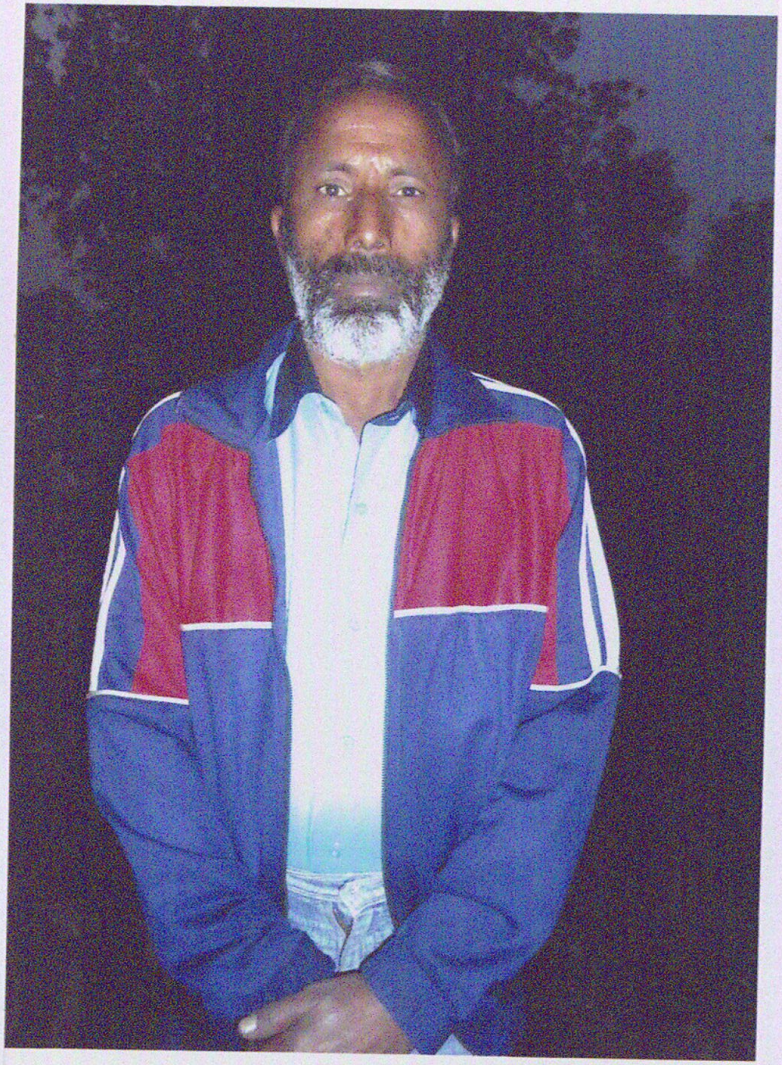

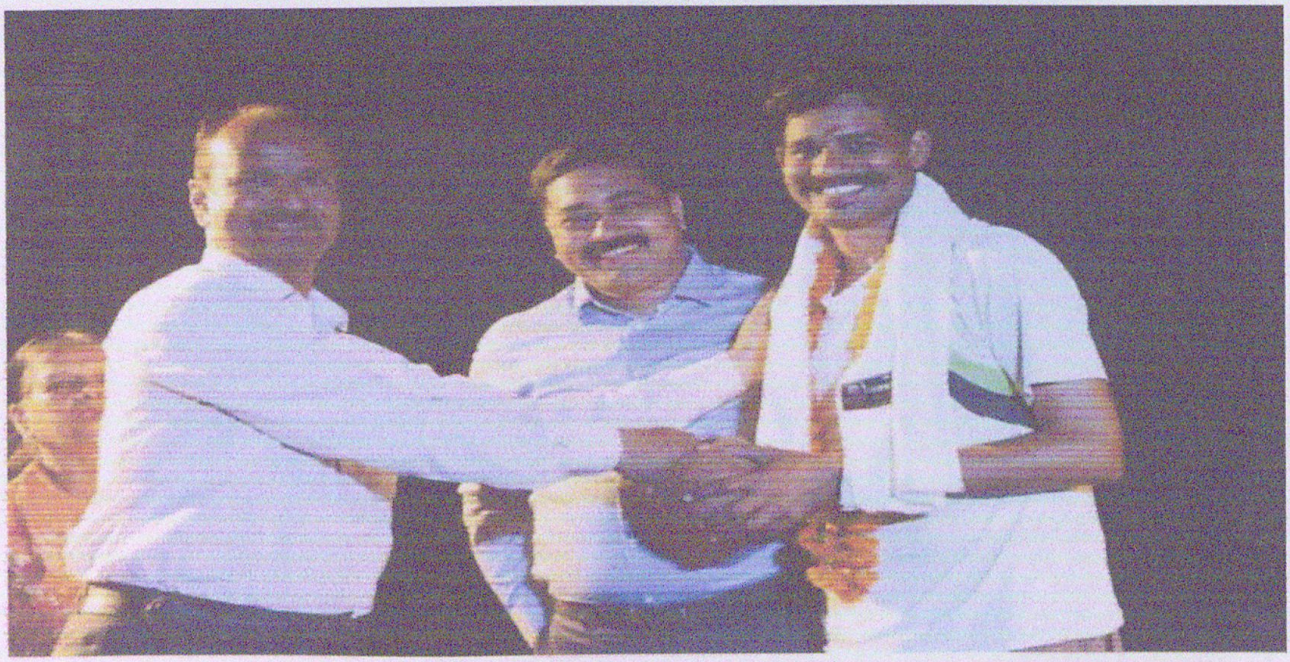

नव भारत

सतना | शुक्रवार | 12 जनवरी, 2018 | वर्ष 23 | अंक 340 | पृष्ठ 12 | मूल्य रु. 3.00 | www.navabharat.net

नाट्य मंचन एवं लोक कलाएं जीवन का अभिन्न अंग : रोशनी

मध्यप्रदेश के सीधी जिले के खैरा गांव में जन्में रोशनी प्रसाद मिश्र के जीवन में नाट्य मंचन एवं लोक कलाओं के प्रति अपूर्व प्रेम उनमें बचपन से ही रहा है।

आज सीधी जिले में जब लोक कलाओं और नाटक की बात आती है तो सीधी ही नही समूचे विंध्य क्षेत्र में रोशनी प्रसाद मिश्र का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। आपकी रंगमंचीय शुरूआत 2003 में गुरू अशोक तिवारी के साथ शुरू हुई। आपने खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय से रंगमंच में एम.ए. लोक संगीत में स्नातकोत्तर, सुगत संगीत, डिप्लोमा गीतांजलि सीनियर की शिक्षा के बाद सीधी वापस आकर अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा से एम.एस.डब्ल्यू. की पढ़ाई पूर्ण की। देश के कई विख्यात रंग निर्देशकों के सानिध्य में आपने अब तक 26 नाटकों में अभिनय किया है। आपके द्वारा कई नाट्य कार्यशालाओं का निर्देशन किया गया। जिसमें ग्राम नाट्य कार्यशाला प्रमुख है। सीधी के 221 ग्रामों में लोक कला ग्राम की स्थापना कर लोक कलाओं के संरक्षण के लिए आपका अभूतपूर्व योगदान रहा है। आपने अब तक 20 नाटकों का निर्देशन किया है। नेहरू युवा केन्द्र सीधी द्वारा युवा सम्मान, इप्टा कोलकाता द्वारा युवा रंग सम्मान बतौर अभिनेता एवं निर्देशक भारंगम् सहित कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नाट्य महोत्सवों में भागीदारी की व वर्तमान में निर्देशन, अभिनय, लेखन, संगीत व लोक कलाओं के शोध कार्य में आप सतत् रूप से सक्रिय हैं।

युवाओं के नाम संदेश

महिलाओं को नेतृत्व करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए चाहे विज्ञान हो या कला, चाहे योग हो या आध्यात्म सभी में महिलाओं का अधिक प्रभाव होता है इसलिये महिलाएं कभी अपने मार्ग से विचलित न हों.

पत्रिका
गोपद बनास . रामपुर नैकिन . बहरी
. सतना, शनिवार, 7 जुलाई, 2018

मानस भवन में आयोजन

मड़ई उत्सव में महिला कलाकारों का शानदार मंचन, दर्शक मंत्रमुग्ध

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सीधी. मड़ई उत्सव के दूसरे दिन शहर के मानस भवन में रंगारंग कार्यक्रम हुए। आदिवासी कलाकारों ने करमा, सैला, कोलदहका, गुदुंब बाजा की शानदार प्रस्तुति दी। एएसपी सूर्यकांत शर्मा, भाजपा नेता गुरुदत्तशरण शुक्ल व विधायक प्रतिनिधि पुनीत नारायण शुक्ला बतौर अतिथि मौजूद रहे।

एएसपी सूर्यकांत शर्मा ने इस सार्थक कमद की सराहना की। कहा, जिले की लोक संस्कृति और यहां के संस्कृतिकर्मी देश-दुनिया में नाम कर रहे हैं। कुछ लोग हैं जो निःस्वार्थ भाव से संस्कृति की सेवा कर रहे हैं, यह जिले के लिए किया गया बेहतरीन प्रयास है। क्योंकि इससे क्षेत्रीय कलाकारों को राष्ट्रीय स्तन पर पहचान मिलेगी।

जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष गुरुदत्त शरण शुक्ल ने लोक में ही घुले-मिले होने की बात करते हुए कलाकारों के सीधी आगमन व समूह में आने की खुशी जताते हुए कहा कि बड़ा अच्छा लगता है कि हमारी जीवन शैली की अहम अंग कलाएं मंच पर रही हैं, इनके मंच प्रदर्शन की प्रक्रिया में जुड़ने का मतलब ही है कि यह संवर्धित हो रही हैं।

आदिवासी लोक कला परिषद् से विनोद गुर्जर, छाऊ नृत्य के ट्रेनर माधव व शिवेंद्र सिंह के अलावा निर्णायक के रूप में रमेश तिवारी, नरेंद्र बहादुर सिंह, शिवांगी मिश्रा नीरज कुंदेर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में प्रस्तुति देते लोक कलाकार, उपस्थित अतिथि एवं दर्शक।

623 कलाकार

इस दौरान कुसमी और मझौली ब्लाक के 21 कला दलों के 623 कलाकारों ने विभिन्न लोक कलाओं का प्रदर्शन किया। करमा, सैला, अहिराई, अहिराई लाठी, संस्कार गीत, ऋतु गीत, देसी गीत, केहरा, कोलदहका, दंदरिया, रिंझा, चमरौही, जवारा काली नृत्य, नगरिया वादन, गुदुंब बाजा का मंचन किया।

दैनिक भास्कर
आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार
सतना, मंगलवार, 30 जनवरी, 2018

लोक रंग महोत्सव । लोक संस्कृति के संरक्षण पर हुआ विचार मंथन

भास्कर ब्यूरो,सीधी।

लोक संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन में समाज की भूमिका विषय पर आज सीधी लोक रंग महोत्सव के अंतिम दिन आयोजित कला वार्ता में देश के अलग-अलग कोने से आये विद्वान समीक्षकों ने विचार मंथन किया।

समीक्षकों का मानना था कि लोक संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य समाज की जागरुकता से ही संभव हो सकता है। इन्द्रवती नाट्य समिति सीधी एवं जिला प्रशासन सीधी द्वारा आयोजित कला वार्ता में भाग लेते हुए समीक्षक राजेश तिवारी, आशीष पाठक और ऋषिकेश वाजपेई सुलभ ने इन्द्रवती नाट्य समिति सीधी के प्रयासों को काफी सराहनीय बताया। उनका कहना था कि गंभीर विषय पर चर्चा करने के लिए मंच उपलब्ध कराया गया है। इस पर सामूहिक रूप से पहल करने की जरूरत है।

पुरखों ने हमें जो सौंपा है उसे संरक्षित करने की जिम्मेदारी समाज की है। प्राचीन काल में 64 कलाएं थीं। बाद में 48, 32, 24 होते हुए वर्तमान में 6 पर सिमट गई हैं। कला के विद्यार्थी इस समय गद्य, पद्य, चित्रकला, रंगकर्म आदि का अध्ययन कर रहे हैं। पुराने परिवेश में जायें तो कला के संरक्षण की जिम्मेदारी राजा और समाज के ऊपर थी।

बदलते परिवेश के साथ अब लोकतंत्र में कला के संरक्षण की जिम्मेदारी समाज के रूप में जनता के ऊपर आ चुकी है।

ऐसे में समाज को यह प्रयास करना चाहिए कि लोक कलाओं को संरक्षित करने के साथ ही लोक कला से जुड़े लोगों को भी आगे आने के लिए प्रोत्साहित करें। जिनसे भावी पीढ़ी को अपनी लोक संस्कृति विरासत के रूप में मिल सके।

इन्द्रवती नाट्य समिति सीधी के नारेन्द्र बहादुर सिंह द्वारा 4 हजार से ज्यादा गीतों के संग्रहित करने पर अपनी खुशी जाहिर करते हुए समीक्षकों ने कहा कि अब जरूरत यह है कि इन गीतों की प्रस्तुति भी काफी रोचक अंदाज में होनी चाहिए।

स्टार समाचार

लोक रंग महोत्सव|कलाकारों ने दी मनमोहक प्रस्तुति

चिरकुमारी नाटक का दर्शकों ने उठाया आनंद

लोकरंग महोत्सव सीधी के दूसरे दिन को मानस भवन में इद्रवती नाट्य समिति के द्वारा चिरकुमारी नाटक का मंचन किया गया। उक्त नाटक में सोन नदी एवं नर्मदा नदी के प्रेम प्रसंग एवं नर्मदा यात्रा का सुन्दर चित्रण किया गया।

स्टार समाचार | सीधी

सोन नदी से प्रेम में धोखा खाने के बाद नर्मदा हमेशा के लिए चिरकुमारी बनने का प्रण लेती है और सोन नदी नर्मदा जी को मनाने का काफी प्रयास करते है किन्तु वह उनकी बात नही सुनती। नाटक में नर्मदा एवं सोन नदी की कथा का वेहतर तरीके से प्रस्तुत किया गया। चिरकुमारी नाटक का निर्देशन एवं लेखन रोशनी प्रसाद मिश्रा ने किया और अभिनय एकता सिंह परिहार,सुनैना द्विवेदी, राजा सोनार्तियां,दिप्ती पटेल,रामचंद्र,अभिषेक सिंह,अभिषेक कुमार,नयन सत्रे, मिथुन कुमार, मयंक पाठक,पवन इंद्रेकर,मनीष सिंह यादव, अजीज हसन,अनिमेश द्विवेदी,आलोक रंजन एवं मंच परे शिवनारायण कुदेर,नरेन्द्र बहादुर सिंह,करूणा सिंह,प्रजीत साकेत,अविन्द्र पाटेल, देवेन्द्र द्विवेदी, रजनीश जायसवाल, पुष्पेन्द्र वर्मा, कविता सिंह, संतोष द्विवेदी, नीरज कुदैर आदि शामिल रहें। जो दर्शकों को काफी पसंद आया।

महोत्सव के दुसरे दिन पूजा पार्क में लोक कलाओं की मनमोहक प्रस्तुती की गई। सामाजिक, संस्कृतिक एवं साहित्यक संस्था द्वारा प्रस्तुत संस्कार गीतो से पूजा पार्क में मौजूद दर्शक मंत्र मुग्ध हो गये।

लोक कलाकार रामावतार मिश्रा सिलबार की टीम द्वारा रामायण गान, हास्य कलाकार अविनाश तिवारी की टीम द्वारा रामलीला का पात्र अभिनय, हरिश्चंद्र मिश्रा,मान्या पाण्डेय, अपूर्णा मिश्रा,रम्या पाण्डेय, मुस्कान सिंह, अन्नपूर्णा मिश्रा एवं रूचि शुक्ला,स्वाती शुक्ला द्वारा संस्कार गीत की प्रस्तुती की गई। बाल कलाकार मान्या पाण्डेय द्वारा प्रस्तुत संस्कार गीत दर्शको को काफी पंसद आ रहा है। रामदास यादव,बकवा की टीम द्वारा अहिराई लाठी,जवाहरलाल सिंह,कोचिला की टीम ने शैला एवं दुलारे चासी बकवा की टीम द्वारा कर्मा नृत्य प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर पंडित केदारनाथ शुक्ला,विधायक सीधी, आरके सिन्हा डिप्टी कलेक्टर सीधी, अनिल उपाध्याय नगर निरीक्षक, सिटी कोतवाली ,एम पी गौतम उपसंचालक, पशुचिकित्सा सेवाएं आशीष पाठक, सहित हजारों की संख्या में दर्शक उपस्थित रहे।

जिला प्रशासन एवं इन्द्रवती नाट्य समिति द्वारा आयोजित तीन दिवसीय लोकरंग महोत्सव सीधी में जिले भर के लोक कलाकार प्रतिदिन अपनी-अपनी प्रस्तुती दे रहें हैं।

पहली बार सीधी शहर में इस तरह का आयोजन हो रहा है जिसमें लोक कला का सीधी दर्शन यहां के आम जनों को हो रहा है। लोक कला का अभिनय देखने के लिए शहरवासी 4 बजे से पूजा पार्क में जमा हो जाते है और रात 9 बजे तक नाटक का अनांद उठाते हैं। आयोजन समिति द्वारा तबला वादक ऐ के चतुर्वेदी,रामवतार मिश्रा,अविनाश तिवारी, रामदास यादव,जवाहरलाल सिंह, दुलारे घासी का शाल श्रीफल से सम्मान भी किया गया। जिले की चित्रकार स्वाती शुक्ला द्वारा आज सोमवार को मानस भवन में चित्र कला की प्रदर्शनी लगाई गई।

पत्रिका

सतना, शनिवार 30 जून 2018

लोकोत्सव

'लोककला रूपों का परिष्कार जरूरी'

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सीधी. इंद्रवती लोक कलाग्राम रामपुर में आयोजित लोकोत्सव में अहिराई, कोलदहका, चमरौहीं, डफला वादन, संस्कार गीत, सजनई गायन की शानदार प्रस्तुति की गई। गुरुदत्तशरण शुक्ल, नीरज कुंदेर, नरेंद्र बहादुर सिंह, रजनीश जायसवाल, प्रजीत साकेत सहित अन्य कलाप्रेमी मौजूद रहे।

वरिष्ठ कला समीक्षक गिरिजा शंकर ने विभिन्न कलारूपों व उनके प्रदर्शन को लेकर स्थानीय कलाकारों से चर्चा की। इसमें आने वाली समस्याएं व निवारण पर विचार मंथन किया। कहा, हमारी लोक संस्कृति हमारी ग्रामीण जीवन शैली का हिस्सा है। हमारी जीवन शैली तेजी से बदल रही है तो लाजमी है कि उतनी ही गति से लोक संस्कृति भी बदलेगी। इसके लिए हमें दुखी नहीं होना चाहिए। क्योंकि हम जो देख रहे हैं, वह दूसरी जीवनशैली थी। कलारूपों को परिष्कृत कर उन्हें जीवन शैली से निकाल कर मंच अनुरूप बनाकर ही उन्हें बचा सकते हैं। हमें सार्थक और सही दिशा में प्रयास करते हुए बीते दौर की जीवन शैली को भी आज के जीवनशैली से मेल करके चलना है। इसी जीवन शैली का एक अंग पर्दा प्रथा है, अब तक कायदे से हमें इससे निजात पा जानी चाहिए थी।

कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामीण एवं अतिथि।

...के लिए राजगद्दी छोड़ी।

एनसीजेडसीसी ने बुधवार को बुंदेलखंड की प्रेमगाथा पर आधारित नाटक 'चंदनुआ' का मंचन करते कलाकार। • हिन्दुस्तान

विष्णु महायज्ञ प्रारंभ

...ढ़ा। आज से नौ दिन के लिए नहवाई ... साईनाथ, मां गायत्री देवी तथा मां दुर्गा ... की प्रतिमा की स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा ... शुभ अवसर पर विष्णु महायज्ञ, दुर्गा ... चंडी तथा गायत्री महायज्ञ के लिए ... म कलश यात्रा निकाली गई।

परंपरा की बेड़ियां तोड़ने में 'चंदनुआ' का प्रेम सफल

इलाहाबाद | निज संवाददाता

नाटक

सॉफ्ट पॉवर आर्ट एंड कल्चर की ओर ...

• एनसीजेडसीसी में बुधवार को हुई ...

जीवंत हुई 'चंदनुआ' की प्रेमगाथा

सॉफ्ट पावर आर्ट ऐंड कल्चर का राष्ट्रीय लोक नाट्य महोत्सव

इलाहाबाद (ब्यूरो)। [illegible]

रोशनी प्रसाद मिश्र के निर्देशन में कलाकारों ने [illegible]

लोकनाट्य महोत्सव में आज : [illegible]

आदिवासी लोक नाट्य कार्यशाला का भव्य समापन

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज व इन्द्रवती नाट्य समिति का संयुक्त आयोजन

जागरण,सीधी। पिछले दिनों सीधी रंगमंच व्दारा उत्कृष्ट आयोजन के माध्यम से 15 दिवसीय आदिवासी लोक नाट्य कार्यशाला 30 जुलाई से 13 अगस्त 2019 तक सव्यसाची आवासीय कन्या हाई स्कूल शिक्षा परिसर सरेठी के स्थानीय सहयोग से आयोजित कर आदिवासी लोक संस्कृति के संरक्षण संवर्धन में अनवरत इन्द्रवती नाट्य समिति का विनम्र प्रयास का भव्य समापन 3:30 पर विद्यालय के प्रांगण में मुख्य अतिथि आरडी सिंह विशिष्ट अतिथि चन्द्रपाल सिंह सरपंच सिलवार व कनक व्दिवेदी एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता राजेन्द्र सिंह भदौरिया ने किया प्रस्तुतिपरक नाटक सोहर मूलतः सोहर गीत से लिया गया है यह गीत बालक के जन्म से मातृत्व के विविध रुप में समाहित भावों को परिलक्षित करता है,प्रस्तुत नाटक मे बांझ स्त्री के अनसुलझे पहलुओं पर मानवीय संवेदना के वृहद स्वरुप को स्त्री के व्दारा लकड़ी के शिशु की परिकल्पना को साकार करने के लिए सूर्य देव की आराधना करना फिर वरदान पाना मातृत्व की वेदना ए वात्सल्य ए उमंग जैसे भावों को प्रगट करते हुए पात्रो व्दारा उत्कृष्ट प्रस्तुति हुई। सोहर राग परम्परा बघेल खण्ड की अमूर्त कला साहित्य के अनवरत शोध में संलग्न नरेन्द्र बहादुर सिंह,लेखन और निर्देशन रोशनी प्रसाद मिश्रा,सहायक निर्देशन रजनीश जायसवाल, संगीत सहायक प्रजीत साकेत व श्याम सुन्दर बैगा ,जानकी प्रस्तुति प्रबंधन शिवा कुन्देर रुप सज्जा करुणा सिंह,मंच सज्जा, रुपेश मिश्रा व्दारा किया गया। नाटक में सव्यसाची आवासीय आदिवासी कन्या हाईस्कूल शिक्षा परिसर सरेठी की बालिकाओं की उत्कृष्ट प्रस्तुति से सम्पन्न नाटक में पात्रों की सहज व सरल भावों की अभिव्यक्ति से लोक विधा व आदिवासी शैली का मनमोहक रुप दिखा। कला, साहित्य,संस्कृति परम्परा के संवाहक लोक कलाओं को विशिष्ट स्थान के संरक्षण संवर्धन में प्रयासरत नीरज कुन्देर के सतत कार्यों से बघेली कलाओं को वैश्विक मंच की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में आयोजित कार्यक्रम मील का पत्थर है।

मड़ई उत्सव रामपुर में शामिल हुए 946 लोक कलाकार

लोक कलाकारो द्वारा दी गई मनमोहक प्रस्तुति

महिला कलाकारों ने भी दिखाया अपनी कला का जौहर

जागरण,सीधी। मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल द्वारा मड़ई उत्सव का आयोजन सामुदायिक भवन रामपुर नैकिन में किया गया। जिसका संयोजन इन्द्रवती नाट्य समिति एवं उत्थान सामाजिक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्था सीधी द्वारा किया गया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अरुण द्विवेदी समाजिक कार्यकर्ता की एवं वीरेन्द्र विश्वकर्मा,सुनील सिंह,आशीष तिवारी,विष्णु शर्मा,रजनीश मिश्रा, समन्वयक जन अभियान रामपुर, अम्बुज पाण्डेय,राजपाल सिंह,ब्रजेन्द्र गर्ग उपस्थित रहे। मड़ई उत्सव में रामपुर नैकिन विकास खण्ड के कोने-कोने से आये करीब 400 कलाकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। जिसमें अहिराई नृत्य, चमरौंही, कोलदहका, नगरिया वादन, भगत, शैला, आदिवासी नृत्य, फाग, काली नृत्य, रामायण, संस्कार गीत, लोक गीत की प्रस्तुति शामिल है। सीधी जिले में दिनांक 4 जुलाई से आदिवासी लोककला एवं बोली अकादमी भोपाल के आयोजन एवं इंद्रवती नाट्य समितिए सीधी के संयोजन में चल रहे 4 दिवसीय मड़ई उत्सव का शुभारम्भ रामपुर नैकिन ब्लाक से हुआ। अखिलेश पाण्डेय के संयोजन में यहां 51 दलों के लगभग 946 लोक कलाकारों ने अपनी भिन्न-भिन्न बघेलखण्डीय लोक कलारूपों के कलाकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। सीधी जिले में 4 दिवसीय इंद्रवती लोक कलाग्राम के कलाकारों का लोककला चयन शिविर कार्यशाला का आयोजन कर रहा है। मड़ई उत्सव का दूसरे दिन का आयोजन मानस भवन सीधी में होगा। दूसरे दिन के उत्सव में कुसमी और मझौली ब्लॉक से तकरीबन 30 भिन्न.भिन्न कलादलों के 620 कलाकार हिस्सा लेंगे। उत्सव के तीसरे दिन ब्लॉक के 20 कलादलों के 450 कलाकार तो वहीं उत्सव की चौथे दिन सीधी ब्लाक से 52 कलादलों के 1040 कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करने वाले हैं। चयन शिविर कार्यशाला में जिले के तमाम कलाकार अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल से आयी एक्सपर्ट टीम के समक्ष कर रही है। परिष्कार की संभावनाओं को देखते हुए अकादमी सीधी में चयनित दलों के साथ पुनः कार्यशाला का आयोजन करेगी। इंद्रवती नाट्य समिति सीधी पिछले 14 वर्षों से बघेलखण्ड की लोक कलाओं के मंचीय प्रदर्शन एव उनके संरक्षण, संवर्धन के लिए अथक प्रयास करती आ रही है और इसी कड़ी में चयन शिविर कार्यशाला का आयोजन सीधी में आदिवासी विभाग द्वारा किया गया। अकादमी द्वारा बघेलखंड के सीधी, सिंगरौली, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, रीवा, सतना आदि जिलों में इसी तरह चयन शिविर कार्यशाला का आयोजन इन्द्रवती नाट्य समिति सीधी के संयोजन में करते आ रहा है। रामपुर नैकिन में आये कलादलों ने संस्कार गीतए ऋतु गीत, अनुष्ठानिक गीत देवी गीत, करमा नृत्य, शैला नृत्य, अहिराई, केहरा, कोलदहका, ददरिया, रिंझा सुआ-रीना, चमरौही, जवारा काली नृत्य आदि के कलाकार रहे। चयन शिविर कार्यशाला में आदिवासी लोक कला परिषद् भोपाल से लोक कलाविद विनोद गुर्जर, छाऊ नृत्य के मास्टर एवं ट्रेनर माधव एवं शिवेंद्र सिंह का आगमन हुआ है। मड़ई उत्सव में दलों की चयन प्रक्रिया में बतौर निर्णायक रमेश तिवारीए रोशनी प्रसाद मिश्र, शिवांगी मिश्रा रहीं तो वहीं उत्सव का संयोजन अखिलेश पाण्डेय रामपुर नैकिन, नीरज कुंदेर, सीधी, रोशनी प्रसाद मिश्र, नरेंद्र बहादुर सिंह, संतोष कुमार द्विवेदी, रजनीश जायसवाल द्वारा किया गया।